वर्ष 08 अंक 04 माह जुलाई, 2023 ₹30

(राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका)

युवक

स्थापित : सन् 1950

14

नेहरू के सपने अधूरे
मोदी कर रहे पूरे ?

लिंगानुपात

असुंतलन की बढ़ती खाई को मिटाने

केंद्र और राज्यों को मिलकर

काम करने की जरूरत

आर.एन.आई. पंजीयन संख्या - 2166/57 | डाक पंजीयन संख्या आगरा-139/2022-24

Make your life more Comfortable

BEBER

BATH FITTINGS

Make way for iconic luxury....

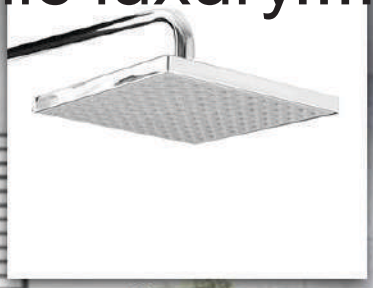

Mathura

Mobile +91-9412280225

युवक

वर्ष - 08, अंक - 04, जुलाई 2023

संस्थापक सम्पादक
स्व. श्री प्रेमदत्त पालीवाल

संरक्षक
स्वामी महेशानंद सरस्वती
आनंद कुटीर, मोतीझील, श्रीधाम वृंदावन

सम्पादक
डॉ. वंदना पालीवाल*

प्रबंध संपादक
देवेंद्र दत्त पालीवाल

कॉन्सेप्ट एडिटर
अजय शर्मा

कार्यकारी सम्पादक
इंजी. ज्ञानेंद्र गौतम

साहित्य संस्कृति संपादक
आदर्श नंदन गुप्त

सलाहकार संपादक
डॉ. महेश चंद्र धाकड़

वाइस प्रेसीडेंट
(सर्कुलेशन/एडवर्टाइजिंग)
बृजेश शर्मा

सीनियर ग्राफिक डिजायनर
रानू शर्मा

लीगल एडवाइजर
एड. विकास गौतम

विजुअलाइजर
मनोज कुमार/सौरभ सिंह

युवक

ब्यूरो ऑफिस
दिल्ली **विनय शर्मा, फोन: 09555220374**

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक **श्रीमती सुधारानी पालीवाल** द्वारा युवक प्रेस जॉस बंगला नं. 4, जीवनी मंडी, **आगरा 282004 (उ.प्र.)** से मुद्रित व प्रकाशित
सम्पादक- **डॉ. वंदना पालीवाल** * पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी,
R.N.I. No.- 2166
सब्सक्रिप्शन भारत में न्यूनतम एक वर्ष के लिए (12 अंक) शुल्क 340+60 (पोस्टल चार्ज)= **रुपये** 400
कृपया डीडी (आगरा में)
YUVAK MASIK PATRIKA के नाम देय हो।
GSTIN NO. 09AGNPP9720D1Z2
DAVP CODE-132863

उपरोक्त अंक में प्रकाशित रचनाओं के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। पत्रिका में छपे किसी भी लेख के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न रचनाओं के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री/विज्ञापन आदि से संपादक/प्रकाशक/मुद्रक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। उपरोक्त से संबंधित किसी भी प्रकार की कार्यवाही एवं पूछताछ की अवधि से तीन माह के अंदर की जा सकती है। इसके बाद किसी भी प्रकार की कार्यवाही, पूछताछ के लिए हम बाध्य नहीं हैं। प्रेषित स्पष्टीकरण प्रकाशित किया जाएगा। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र सिर्फ आगरा होगा।

संपादकीय कार्यालय

युवक (हिन्दी मासिक)
बंगला नं. 4, जीवनी मंडी, आगरा-282004, उत्तर प्रदेश
पत्रिका से जुड़ी किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए
सम्पर्क सूत्र **+91 9415407766**
लेख अथवा रचनाएं हमें ईमेल करें
yuvakmagazine@gmail.com
Website - www.progressiveyuvak.com

जरूर पढ़ें
राजनीति

22 यूपी की ये 10 सीटें जो बीजेपी को...

उत्तर प्रदेश में लोकसभा चुनाव की तैयारी में बीजेपी सबसे आगे चल रही है। वह सब कुछ ठोक-बजा कर प्रत्याशियों का फैसला करने के लिए जमीन से लेकर बंद कमरों तक में रणनीति बना रही है। टिकट बांटते समय तमाम बातों का ध्यान रखा जायेगा, लेकिन अबकी से प्रत्याशियों का चयन करते समय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की भी अहम भूमिका रहेगी, जो 2019 के लोकसभा चुनाव में नहीं दिखाई दी थी। इसकी वजह यह है कि बीजेपी ने उत्तर प्रदेश के...

विशेष
शख्सियत

10 रतन टाटा जैसे ही हैं ए. एम. नाईक

मीडिया की सुर्खियों से दूर रहकर चुपचाप राष्ट्र निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान देने वाले कई दिग्गजों को लेकर देश-समाज लगभग अनभिज्ञ सा ही रहता है। उनमें ही ए.एम.नाईक भी हैं। उनकी सरपरस्ती में लार्सन एंड टुब्रो कंपनी...

जरूर पढ़ें
जरूर पढ़ें

06 एक ही बंदा काफी है...

शिखर सम्मेलन के अंत में जारी नई दिल्ली घोषणा में भारत ने बेल्ट एंड रोड्स इनिशिएटिव (बीआरआई) का समर्थन करने वाले पैराग्राफ पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया। ये पहला मौका नहीं है जब भारत ने बीआरआई का विरोध किया हो। इससे पहले पिछले साल समरकंद घोषणापत्र में भी भारत ने इसका विरोध किया था।

विशेष
दो टूक

26 यूपी में पहले मंत्री की भैंस खोजी जाती थी...

उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार का दूसरा कार्यकाल है। भाजपा सरकार के पहले और वर्तमान कार्यकाल का लेखा-जोखा किया जाए तो सिर्फ इतना ही कहा जा सकता कि पहले सपा सरकार में पुलिस और प्रशासनिक तंत्र तत्कालीन मंत्री आजम खान की चोरी हुई भैंस ढूंढ़ता था, अब प्रशासनिक...

विधानसभा
खेल जगत

12 नीरज चोपड़ा और फुटबॉल में खिताबी जीत से...

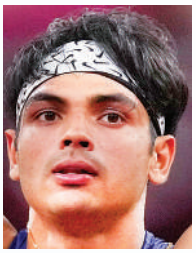

पिछले दिनों खेल जगत से आई दो खबरों ने हरेक भारतीय का सिर गर्व से ऊंचा कर दिया। पहली खबर थी कि ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता नीरज चोपड़ा ने इस साल का दूसरा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए लुसाने डायमंड लीग भी जीत लिया। नीरज चोपड़ा ने...

46 कहानी

50 कविता

सम्पादकीय

योगीतत्व, वृक्ष का महत्व, जीवन रक्षा कवच

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विकास के मामले में पिछली सभी सरकारों को बहुत पीछे छोड़ है। अनेक रिकार्ड कायम कर चुके हैं। अब वह अपने ही रिकार्डों को पीछे छोड़ रहे हैं। इसमें पौधरोपण अभियान भी शामिल है। इस बार 35 करोड़ से अधिक पौधे रोपने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। यह नया रिकार्ड होगा। 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर एक साथ पांच करोड़ पौधे लगाए जाएंगे। छह वर्षों में सवा सौ करोड़ से अधिक पौधे रोपे जा चुके हैं। एक से सात जुलाई तक आयोजित जागरुकता सप्ताह चलाया गया।

'पेड़ लगाओ-पेड़ बचाओ' का संदेश गूंजेगा। हाइटेक नर्सरी तैयार होगी। पौधरोपण स्थलों की जियो टैगिंग होगी। 'मुख्यमंत्री कृषक वृक्ष धन योजना' लागू होगी। 'खेत पर मेड़-मेड़ पर पेड़' के संदेश को चरितार्थ होगा। विगत वर्षों में बनाए गए 'खाद्य वन, बाल वन, नगर वन, अमृत वन, युवा वन और शक्ति वन' जैसे नियोजित पौधरोपण का अभियान आगे बढ़ेगा। पर्यावरण के बिगड़ने की समस्या से मानव जीवन प्रभावित हो रहा है। यह पशु पक्षियों, जीव-जंतुओं, पेड़ पौधों, वनस्पतियों, वनों, जंगलों,पहाड़ों, नदियों सभी के अस्तित्व के लिए घातक है। पर्यावरण और जीवन परस्पर आश्रित है। वृक्ष मानव के स्वास्थ्य का सबसे बड़ा रक्षा कवच है। वृक्ष के आसपास रहने से जीवन में मानसिक संतुलन और संतुष्टि मिलती है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अनेक योजनाओं ने कीर्तिमान स्थापित किए हैं। इनमें से कई विश्वस्तर पर भी प्रतिष्ठित हुई है। वन महोत्सव में पौधरोपण इसी प्रकार का अभियान रहा है। भारत की केंद्र और उत्तर प्रदेश की वर्तमान सरकार पर्यावरण व प्रकृति संरक्षण के प्रति सजग है। इसको पर्यटन व तीर्थाटन से भी जोड़ा गया है। यह विकास की समग्र अवधारणा में समाहित विचार है। इसके दृष्टिगत पर्यटन व तीर्थ स्थलों का विकास और इनसे संबंधित राजमार्ग का निर्माण शामिल है।

विगत वर्षों के दौरान इस दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। योगी आदित्यनाथ ने राम वनगमन मार्ग को वन महोत्सव अभियान में शामिल किया।

> *पृथ्वी से लेकर अंतरिक्ष तक शान्ति की प्रार्थना की गयी है। प्रकृति के अति दोहन के कारण ही सभी मानव एवं जीव-जंतु प्रभावित हुए हैं। जीवनशैली में परिवर्तन लाकर हम पर्यावरण को बचा सकते हैं। प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन नहीं होना चाहिए। पर्यावरण संरक्षण के लिए अधिक से अधिक पौधरोपण की आवश्यकता है। सुखद है कि उत्तर प्रदेश में योगी सरकार इस दिशा में लगातार काम कर रही है।*

इसके अंतर्गत इस मार्ग पर त्रेता युगकालीन वाटिकाओं की स्थापना होगी। भारत में आदिकाल से प्रकृति संरक्षण का विचार रहा है। योगी आदित्यनाथ उससे प्रेरणा लेते हैं। उनका मानना है कि अतीत से जुड़ना वर्तमान समाज के लिए आवश्यक है। त्रेता युग की वाटिका व उपवन भी वर्तमान पीढ़ी में पर्यावरण चेतना का संचार करेंगी।

महर्षि वाल्मीकिकृत रामायण में अयोध्या से चित्रकूट तक राम वन गमन मार्ग में मिलने वाली अट्ठासी वृक्ष प्रजातियों एवं वनों एवं वृक्षों के समूह का उल्लेख है। महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण एवं विभिन्न शास्त्रों में शृंगार वन, तमाल वन, रसाल वन, चम्पक वन, चन्दन वन,अशोक वन, कदम्ब वन, अनंग वन, विचित्र वन, विहार वन का उल्लेख मिलता है। रामायण में उल्लिखित अट्ठासी वृक्ष प्रजातियों में से कई विलुप्त हो चुकी हैं अथवा देश के अन्य भागों तक सीमित हो गई हैं। यथा रामायण में उल्लिखित रक्त चंदन के वृक्ष वर्तमान में दक्षिण भारत तक सीमित हैं। वन विभाग द्वारा राम वन गमन मार्ग में पड़ने वाले जनपदों अयोध्या, प्रयागराज चित्रकूट में रामायण में उल्लिखित अट्ठासी वृक्ष प्रजातियों में से प्रदेश की मृदा, पर्यावरण व जलवायु के अनुकूल तीस वृक्ष प्रजातियों का रोपण कराया जा रहा है। यह वृक्ष प्रजातियां- साल, आम, अशोक, कल्पवृक्ष पारिजात, बरगद, महुआ, कटहल, असन, कदम्ब, अर्जुन, छितवन, जामुन, अनार, बेल, खैर, पलाश, बहेड़ा, पीपल, आंवला, नीम, शीशम, बांस, बेर, कचनार, चिलबिल, कनेर, सेमल, सिरस, अमलतास, बड़हल हैं। मानव सभ्यता को बचाने के लिए वर्तमान कृषि प्रणाली में कृषि वानिकी, उद्यानिकी, पशुपालन, मत्स्य पालन सभी को अपनी खेती में बराबर का स्थान देना होगा। सृष्टि की रचना के समय से मानव जीवन का पर्यावरण से घनिष्ठ संबंध रहा है। पृथ्वी से लेकर अंतरिक्ष तक शान्ति की प्रार्थना की गयी है। प्रकृति के अति दोहन के कारण ही सभी मानव एवं जीव-जंतु प्रभावित हुए हैं। जीवनशैली में परिवर्तन लाकर हम पर्यावरण को बचा सकते हैं। प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन नहीं होना चाहिए। पर्यावरण संरक्षण के लिए अधिक से अधिक पौधरोपण की आवश्यकता है। सुखद है कि उत्तर प्रदेश में योगी सरकार इस दिशा में लगातार काम कर रही है। ■

डॉ. वंदना पालीवाल

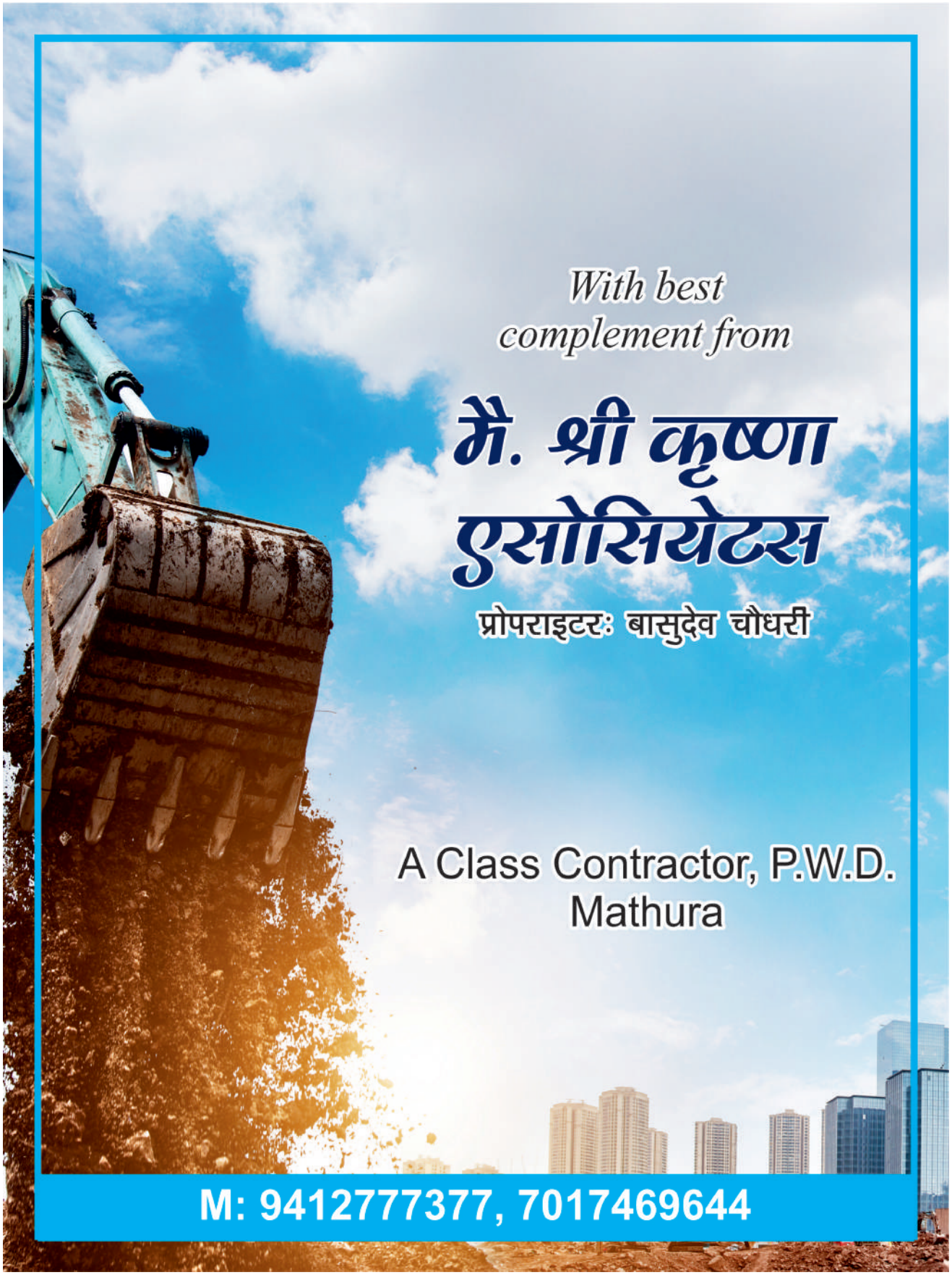
With best
complement from
मै. श्री कृष्णा
एसोसियेटस
प्रोपराइटरः बासुदेव चौधरी
A Class Contractor, P.W.D.
Mathura
M: 9412777377, 7017469644

जरूर पढ़ें

एक ही बंदा काफी है...

किसी ने विरोध की हिम्मत नहीं दिखाई, भारत ने कई देशों को डुबो चुके बीआरआई की हवा निकाली, अब अफगानिस्तान बनने वाला है नया शिकार

शिखर सम्मेलन के अंत में जारी नई दिल्ली घोषणा में भारत ने बेल्ट एंड रोड्स इनिशिएटिव (बीआरआई) का समर्थन करने वाले पैराग्राफ पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया। ये पहला मौका नहीं है जब भारत ने बीआरआई का विरोध किया हो। इससे पहले पिछले साल समरकंद घोषणापत्र में भी भारत ने इसका विरोध किया था।

अभिनय आकाश

भारत ने दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देश चीन को जोर का झटका दिया है। शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की बैठक में भारत ने चीन के महत्वकांक्षी परियोजना बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) की हवा निकाल दी है। बीआरआई प्रोजेक्ट की वजह से ही दुनिया के कई देश चीन के कर्जजाल में फंसकर कंगाल हो चुके हैं। भारत ने इस प्रोजेक्ट को सपोर्ट करने से साफ इनकार कर दिया। शिखर सम्मेलन के अंत में जारी नई दिल्ली घोषणा में भारत ने बेल्ट एंड रोड्स इनिशिएटिव (बीआरआई) का समर्थन करने वाले पैराग्राफ पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया। ये पहला मौका नहीं है जब भारत ने बीआरआई का विरोध किया हो। इससे पहले पिछले साल समरकंद घोषणापत्र में भी भारत ने इसका विरोध किया था।

क्या है बीआरआई

ड्रैगन के बेल्ट एंड रोड एनिशिएटिव के बारे में तो सब जानते हैं। जिसके तहत वो सीपीईसी का निर्माण कर रहा है। इसके प्रोजेक्ट के जरिए चीन ने अफगानिस्तान, पाकिस्तान के रास्ते यूरोप तक जाने का प्लान बनाया है। बीआरआई के जरिए चीन दुनिया के गरीब देशों को कर्ज दे रहा है और फिर उनके संसाधनों पर कब्जा कर रहा है। अफ्रीका से लेकर दक्षिण अमेरिका तक कई देश उसके कर्ज के जाल में बुरी तरह फंसे हुए हैं। चीन के प्रोजेक्ट पर भारत हमेशा से खुलकर ऐतराज जताता रहा है। ऐतराज की वजह है ये कॉरिडोर पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) से गुजरता है जिसे भारत अपना हिस्सा मानता है।

भारत ने चीन को दिखा दी उसकी औकात

भारत ने चीन की महत्वाकांक्षी बेल्ट एंड रोड परियोजना (बीआरआई) का एक बार फिर समर्थन करने से इनकार कर दिया। इसी के साथ वह इस परियोजना का समर्थन नहीं करने वाला शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) का एकमात्र देश बन गया। एससीओ शिखर सम्मेलन के अंत में जारी घोषणा में कहा गया कि रूस, पाकिस्तान, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, पाकिस्तान, ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान ने बीआरआई के प्रति अपना समर्थन दोहराया है। घोषणा के मुताबिक चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) पहल के लिए अपने समर्थन की पुष्टि करते हुए कजाकिस्तान गणराज्य, किर्गिज गणराज्य, पाकिस्तान, रूस, ताजिकिस्तान गणराज्य और उज्बेकिस्तान गणराज्य ने संयुक्त रूप से इस परियोजना को लागू करने के लिए जारी काम पर ध्यान केंद्रित किया, जिसमें यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन और बीआरआई के निर्माण को जोड़ने का प्रयास भी शामिल है। नई दिल्ली घोषणा में कहा गया है कि सदस्य देश आतंकवादी, अलगाववादी और चरमपंथी समूहों की गतिविधियों का मुकाबला करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा संयुक्त समन्वित प्रयासों का निर्माण करना महत्वपूर्ण मानते हैं, धार्मिक असहिष्णुता, आक्रामक राष्ट्रवाद, जातीयता, नस्लीय भेदभाव, जेनोफोबिया, फासीवाद और अंधराष्ट्रवाद के विचार के प्रसार को रोकने पर विशेष ध्यान देते हैं।

सीपैक में अफगानिस्तान को शामिल करने की कोशिश

चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) के तहत एक प्रमुख परियोजना, चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) की स्थापना के 10 साल पूरे होने पर बीजिंग और इस्लामाबाद के विदेश मंत्रियों के साथ-साथ तालिबान के कार्यवाहक विदेश मंत्री मावलवी अमीर खान मुत्ताकी ने बीआरआई के तहत त्रिपक्षीय सहयोग को आगे बढ़ाने और संयुक्त रूप से सीपैक को अफगानिस्तान तक विस्तारित करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया। यह निर्णय अफगानिस्तान में वर्तमान शासन के आने के बाद पहली बार 6 मई 2023 को आयोजित पांचवें चीन-पाकिस्तान-अफगानिस्तान विदेश मंत्रियों की वार्ता के दौरान लिया गया था। हालाँकि यह पहली बार नहीं है कि इस तरह की मंशा की घोषणा सार्वजनिक रूप से की गई है। यह परियोजना में काबुल को शामिल करने पर विचार करने के पीछे चीन और पाकिस्तान की रणनीतिक अनिवार्यताओं को उजागर करता है। काबुल शासन के लिए यह निर्णय एक पॉजिटिव मेजर डेवलपमेंट है क्योंकि देश वतार्मान दौर में निवेश को आकर्षित करने के लिए संघर्ष कर रहा है। कुछ भारतीय स्रोतों ने अफगानिस्तान में परियोजना के विस्तार की उपयोगिता पर सवाल उठाते हुए तर्क दिया है कि बीजिंग पाकिस्तान और अफगानिस्तान दोनों से जो सुरक्षा गारंटी चाहता है उसे प्राप्त करना कठिन होगा।

चीन के लिए गेमचेंजर साबित होगा?

2013 में सीपीईसी की अवधारणा और इसकी महत्वाकांक्षी परियोजनाओं को पाकिस्तान के साथ-साथ पूरे क्षेत्र में गेम चेंजर माना गया था। इस्लामाबाद की आर्थिक कठिनाइयों को बदलने और चीन और पाकिस्तान के बीच 'सदाबहार दोस्ती' का एक ठोस प्रमाण बनने की इसकी क्षमता के बारे में आशाएं और आकांक्षाएं मौजूद और प्रबल थीं। इस गलियारे का उद्देश्य पहले से मौजूद काराकोरम राजमार्ग का लाभ उठाना और इसके चारों ओर पाकिस्तान के कम विकसित क्षेत्रों में नए व्यापार मार्गों का निर्माण करना था, जो बदले में चीन के पश्चिमी उइघुर स्वायत्त क्षेत्र शिनजियांग को बलूचिस्तान के अरब सागर तट से जोड़ता है। इसका उद्देश्य इस्लामाबाद में बुनियादी ढांचे की कमी को पूरा करना और औद्योगिक क्षेत्र स्थापित करना था। दस साल बाद, जबकि बीजिंग और इस्लामाबाद इस परियोजना को 'बीआरआई का चमकदार उदाहरण' बताते हैं, जमीनी हकीकत इससे पहले कभी इतनी गहरी नहीं थी। जबकि पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था के साथ संरचनात्मक मुद्दे परियोजना की अवधारणा से पहले भी मौजूद है। परियोजना की आर्थिक आवश्यकताओं ने इसकी कठिनाइयों को बढ़ा दिया, देश का विदेशी मुद्रा भंडार घट रहा है। सभी प्रांतों में समान विकास सुनिश्चित करने की बात तो दूर, इस परियोजना के कारण बलूचिस्तान प्रांत में आक्रोश फैल गया और स्थानीय लोगों ने आर्थिक लाभांश से अपने बहिष्कार की निंदा की, कई अलगाववादी और आतंकवादी समूहों ने परियोजनाओं को सुरक्षित रखने वाले चीनी श्रमिकों और पाकिस्तानी अर्धसैनिक सैनिकों को निशाना बनाया।

क्या है सीपैक

चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे पर काम 2013 में शुरू हुआ था। इसके तहत पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह से चीन के काशगर तक 60 अरब डॉलर की लागत से कॉरिडोर बनाया गया। इसके जरिए चीन की अरब सागर तक पहुंच होगी। इस कॉरिडोर में कई हाइवे, बंदरगाह, रेलवे और एनर्जी प्रोजेक्ट्स पर भी काम हो रहा है। बताते हैं, चीन सीपीईसी की परियोजनाओं में हो रही देरी से नाखुश है। इस पर पीएम शहबाज ने कहा कि नई समय सीमा में पूरा करने के लिए इसे प्राथमिकता दी जाएगी।

सीपीईसी का अफगानिस्तान तक विस्तार क्यों चाहता है चीन

इन चिंताओं के बावजूद, चीन और पाकिस्तान दोनों ने कम से कम 2017 से अफगानिस्तान को सीपीईसी में शामिल करने पर चर्चा कर रहे हैं। जब तीन देशों के बीच त्रिपक्षीय प्रारूप पहली बार शुरू हुआ था। जब काबुल में गनी सरकार गिरी और तालिबान ने सत्ता संभाली, तो पाकिस्तान ने सीपीईसी को दोनों पक्षों के बीच आर्थिक बातचीत का एक प्रमुख माध्यम माना। 2022 में, तत्कालीन चीनी विदेश मंत्री वांग यी के साथ अपनी पहली बैठक में, मुत्ताकी ने काबुल को सीपीईसी में शामिल करने की संभावना के बारे में ट्वीट किया। यहां तक कि संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएस) की सेना के अंततः अफगानिस्तान से हटने से पहले के महीनों में भी, अफगानिस्तान में सीपीईसी के विस्तार को पुनर्निर्माण प्रक्रिया में शांति

और सहायता प्राप्त करने के साधन के रूप में देखा गया था। बदख्शां से शिनजियांग तक फैले संकीर्ण वाखान गलियारे के माध्यम से अफगानिस्तान चीन के साथ 92 किलोमीटर लंबी सीमा साझा करता है। जबकि गलियारे में तीन दर्रे हैं, उनकी अनिश्चित भौगोलिक स्थिति के कारण लघु से मध्यम अवधि में अफगानिस्तान को बीआरआई में सीधे शामिल करना असंभव है। मौजूदा काराकोरम राजमार्ग का विकास, जो पेशावर को काबुल से जोड़ने वाले खुंजेराब दर्रे से होकर गुजरता है, काबुल को सीपीईसी और अंततः चीन से जोड़ने के लिए एक व्यवहार्य मार्ग माना जाता है।

चीन के जाल में फंसने को बेताब नजर आ रहा तालिबान

नकदी और प्रभाव की कमी से जूझ रहे तालिबान के लिए, बुनियादी ढांचे में निवेश और अफगान अर्थव्यवस्था के पुनरुद्धार का मार्ग नजर आ रहा है। समूह चीन के साथ व्यापार के स्तर को बढ़ाने के लिए वखान गलियारे के माध्यम से ऐतिहासिक सिल्क रोड व्यापार मार्गों को फिर से खोलने के विचार को स्वीकार कर रहा है। इसने चीन के दीर्घकालिक राजनीतिक समर्थन का सकारात्मक स्वागत किया है, उम्मीद है कि बीजिंग देश में अपना निवेश बढ़ाएगा। आईईए के तहत विदेश मंत्रालय और अफगानिस्तान चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इन्वेस्टमेंट दोनों मानते हैं कि गलियारे में देश को शामिल करने से इसे बहुत जरूरी निवेश मिलेगा और लौह और ऊर्जा उत्पादक क्षेत्रों को समर्थन मिलेगा। इसे काबुल को आत्मनिर्भर बनने और आर्थिक विकास के लिए दूसरों पर निर्भर न रहने में सक्षम बनाने के रूप में भी माना जा रहा है। लेकिन संभावित मार्गों के इन आंकलनों पर कई वर्षों से बहस चल रही है, लेकिन जमीनी स्तर पर कोई ठोस प्रगति नहीं हुई है। पाकिस्तान में सीपीईसी की वर्तमान स्थिति को देखते हुए, स्थितिजन्य और व्यावहारिक समस्याओं के कारण निर्णय के जमीनी स्तर पर साकार होने की संभावना कम लगती है।

सीपीईसी से भारत को क्या नुकसान है?

गोवा में शंघाई सहयोग संगठन के विदेश मंत्रियों की बैठक के मौके पर भारतीय विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने सीपीईसी के प्रति भारत के सैद्धांतिक विरोध को दोहराते हुए बताया कि कैसे कनेक्टिविटी किसी देश की क्षेत्रीय अखंडता या संप्रभुता का उल्लंघन नहीं कर सकती है। सामान्य तौर पर सीपीईसी का भारत का विरोध, अफगानिस्तान में इसके विस्तार के बावजूद, दो आधारों रणनीतिक और संप्रभु पर आधारित है। रणनीतिक रूप से खुंजेरब दर्रा क्षेत्र में बढ़ती चीनी उपस्थिति से भारत की रणनीतिक जगह कम हो जाएगी जबकि क्षेत्र और अधिक सुरक्षित हो जाएगा। सीपीईसी पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर से भी होकर गुजरता है, यही वजह है कि भारत इस परियोजना को अवैध, नाजायज और अस्वीकार्य मानता है। पिछले कुछ वर्षों में भारत-चीन संबंधों में तेजी से गिरावट आई है। अत्यधिक संदिग्ध संबंधों की पृष्ठभूमि में क्षेत्र में चीन की उपस्थिति बढ़ाने के किसी भी प्रयास से भारत के माथे पर चिंता की लकीरें उत्पन्न हो जाती है। अमेरिका की वापसी के बाद तालिबान के साथ चीन की भागीदारी ने पहले ही नई दिल्ली के कान खड़े कर दिए हैं, जहां उसने ऐतिहासिक रूप से एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चीन की बढ़ती उपस्थिति से तालिबान शासन को आर्थिक रूप से लाभ होने की संभावना, वास्तव में देश पर उनकी पकड़ को और मजबूत करेगी और भारत के लिए खतरे की धारणा को बढ़ाएगी। नई दिल्ली के लिए आर्थिक रूप से सशक्त पाकिस्तान, जो चीन-केंद्रित भू-अर्थशास्त्र स्थान के साथ अधिक गहराई से एकीकृत है, भी अच्छी खबर नहीं है। लेकिन बीआरआई का विरोध करने की भारत की रणनीति ने क्षेत्रीय बुनियादी ढांचे के विकास को आकार देने की इसकी क्षमता को भी सीमित कर दिया है। इसकी कनेक्ट सेंट्रल एशिया नीति कोई बड़ा लाभ हासिल करने में विफल रही है, जबकि चीन धीरे-धीरे मध्य एशियाई गणराज्यों में अपना विस्तार कर रहा है।

आगे की राह

तालिबान की शासन प्रणाली पर कुछ मतभेद बीजिंग और काबुल के बीच मौजूद हैं। सीधी उड़ानें फिर से शुरू होने और चीन द्वारा अफगान नागरिकों के लिए वीजा पर प्रतिबंध हटाने के साथ दोनों पक्षों ने संबंधों को बेहतर करने की दिशा में कदम बढ़ाना शुरू कर दिया है। इसके बावजूद, अगर सीपीईसी को अफगानिस्तान तक बढ़ाया जाता है तो चीन के लिए कोई वास्तविक ठोस आर्थिक लाभ देखना अभी भी मुश्किल है। लेकिन इन आर्थिक लाभों की कमी ही यह दर्शाती है कि बीजिंग के लिए रणनीतिक अनिवार्यताएँ कितनी महत्वपूर्ण हैं। पाकिस्तान के लिए, अफगानिस्तान आर्थिक कनेक्टिविटी के लिए एक क्षेत्रीय सौदा बन सकता है। ■

धीरूभाई अंबानी थे देश के सबसे बड़े बिजनेस टाइकून

आज यानी की 6 जुलाई को भारत के शीर्ष उद्योगपतियों में शामिल रहे धीरूभाई अंबानी की डेथ हो गई थी। इतना बड़ा बिजनेस शुरू करने वाले धीरूभाई अंबानी ने आर्थिक तंगी के चलते भजिया बेचने का काम भी किया था। भारत के शीर्ष उद्योगपतियों में शामिल रहे धीरूभाई अंबानी का आज के दिन यानी की 6 जुलाई को निधन हो गया था। उनके द्वारा शुरू की गई रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड आज दुनिया की दिग्गज कंपनियों में शामिल है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि इतना बड़ा बिजनेस शुरू करने वाला व्यक्ति एक समय पर तीर्थयात्रियों को भजिया बेचा करता था। धीरूभाई अंबानी ने अपने बचपन में आर्थिक तंगी को भी झेला था। लेकिन इसके बाद भी उनके ख्वाब बहुत बड़े थे। आइए जानते हैं उनकी डेथ एनिवर्सरी के मौके पर धीरूभाई अंबानी के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

पवन आगरी

गुजरात के एक छोटे से गांव में 28 दिसंबर 1932 धीरूभाई अंबानी का जन्म हुआ था। उनके पिता हीराचंद गोवरधनदास अंबानी गुजरात के चोरवाड गांव में स्कूल टीचर थे। वह अपनी माता-पिता की तीसरी संतान थे। आर्थिक तंगी के कारण धीरूभाई अंबानी ने 10वीं के बाद पढ़ाई छोड़ दी थी और छोटे-मोट काम कर अपने परिवार की आर्थिक मदद किया करते थे। बता दें कि परिवार की मदद के लिए धीरूभाई गिरनार की पहाड़ियों के पास तीर्थयात्रियों को भजिया बेचा करते थे। तीर्थयात्रियों की संख्या पर उनकी आय निर्भर करती थी। हालांकि आर्थिक रूप से कमजोर होने के बाद भी धीरूभाई ने दुनिया को बताया कि बड़ा कारोबार खड़ा करने के लिए आपके पास बड़ी-बड़ी डिग्रियों का होना जरूरी नहीं है और न ही आपका अमीर परिवार में पैदा होना जरूरी है। बल्कि अगर व्यक्ति में कुछ कर गुजरने का जज्बा हो तो वह अपनी मेहनत के दम पर कुछ भी हासिल कर सकता है।

मुंबई की चॉल में रहते थे धीरूभाई

बता दें कि महज 17 साल की उम्र में नौकरी की इच्छा से वह अपने बड़े भाई रमणिकलाल के पास यमन चले गए। लेकिन बड़े सपने होने के कारण उनका नौकरी में मन नहीं लगा और वह वापस भारत लौट आए। जब साल 1958 में वह मुंबई आए तो अपने साथ थोड़ी सी जमापूंजी लेकर आए थे। इस दौरान वह मुंबई की एक चॉल में रहने लगे। धीरूभाई अपने साथ अदन के एक गुजराती दुकानदार के बेटे के पते का कागज साथ लेकर आए थे। ताकि उनके साथ वह मुंबई की चॉल में रूम शेयर कर सकें। इस व्यक्ति के अलावा उनका मुंबई में और कोई जानने वाला नहीं था।

ऐसे शुरू किया बिजनेस

धीरूभाई ने मुंबई पहुंचने के बाद अपनी छोटी सी बचत से कुछ व्यापार करने का जुगत लगाने लगे। वह व्यापार की तलाश में अहमदाबाद, जूनागढ़, बड़ौदा, राजकोट और जामनगर भी आते-जाते रहे। इस दौरान उन्होंने महसूस किया कि वह अपनी कम जमापूंजी से इन जगहों पर कपड़े, किराना या फिर मोटर पार्ट्स की दुकान लगा सकते थे। लेकिन दुकान उनको स्थिर आय देने का काम करती। यह उनका सपना नहीं था। उन्हें बिजनेस की दुनिया में तेजी से ग्रोथ करना था। जिसके कारण वह फिर वापस मुंबई आ गए। यहां पर धीरूभाई ने रिलायंस कमर्शियल कॉरपोरेशन नाम के साथ एक ऑफिस की शुरूआत की। इस दौरान उन्होंने खुद को एक मसाला व्यापारी के तौर पर लॉन्च किया। उनके ऑफिस में एक मेज, दो कुर्सियां, एक पेन, एक इंकपॉट, एक राइटिंग पैड, पीने के पानी के लिए एक घड़ा और कुछ गिलास थे। इस ऑफिस को खोलने के बाद उन्होंने मुंबई थोक मसाला बाजार में घूमना शुरू कर दिया। फौरन पेमेंट की शर्त पर वह थोक के भाव विभिन्न उत्पादों की कोटेशन को इकट्ठा करने लगे। कुछ समय बाद धीरूभाई को पता चला कि मसालों से ज्यादा सूत के व्यापार में मुनाफा है। इसके बाद उन्होंने नरोदा में एक वस्त्र निर्माण इकाई शुरू की। यहां से शुरूआत करने के बाद धीरूभाई ने अपनी जिंदगी में फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। दिन-रात मेहनत और हर रोज बेहतर करने के जज्बे ने रिलायंस को नई ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया। बता दें कि साल 1958 में मात्र 15000 रुपए में धीरूभाई ने बिजनेस की शुरूआत की थी। वहीं धीरूभाई की मौत के आसपास रिलायंस ग्रुप की संपत्ति करीब 60,000 करोड़ के आंकड़े को पार कर चुकी थी। बता दें कि धीरूभाई अंबानी को दो बार ब्रेन स्ट्रोक आया था। पहली बार साल 1986 को उन्हें ब्रेन स्ट्रोक आया और फिर साल 2002 में दूसरी बार ब्रेन स्ट्रोक आया था। जिसके बाद 6 जुलाई 2002 को धीरूभाई अंबानी की मौत हो गई थी। ■

रतन टाटा जैसे ही हैं ए. एम. नाईक

मीडिया की सुर्खियों से दूर रहकर चुपचाप राष्ट्र निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान देने वाले कई दिग्गजों को लेकर देश-समाज लगभग अनभिज्ञ सा ही रहता है। उनमें ही ए.एम.नाईक भी हैं। उनकी सरपरस्ती में लार्सन एंड टुब्रो कंपनी (एलएंडटी) देश के कोने-कोने में सड़क, पुल और दूसरे तमाम बड़े इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्टों पर काम कर रही है। इसी ने आगामी सितंबर महीने में राजधानी में आयोजित होने वाले जी-20 शिखर सम्मेलन के लिए प्रगति मैदान को नए सिरे से नये खूबसूरत कलेवर में विकसित किया है। यहाँ ही बने कनवेंशन सेंटर में ही शिखर सम्मेलन का आयोजन होना है, जिसमें 20 देश के राष्ट्राध्यक्ष भी भाग लेंगे। ये सारा काम नाईक जी की देखरेख में ही पूरा हुआ।

आर.के. सिन्हा

बीते कुछ समय पहले घोषणा की गई नाईक 30 सितंबर 2023 के बाद एलएंडटी समूह के गैर-कार्यकारी अध्यक्ष का पद भी छोड़ देंगे। इसके बाद वे एलएंडटी के मात्र मानद अध्यक्ष के रूप में ही कामों को देखेंगे। रतन टाटा और शिव नाडार भी अब टाटा ग्रुप तथा एचसीएल टेक्नोलॉजीज के मानद अध्यक्ष ही हैं। आप जानते हैं कि मानद अध्यक्ष के अनुभव का लाभ कंपनियां तो उठाती हैं। रतन टाटा ने 2017 में टाटा समूह के चेयरमेन पद को छोड़ दिया था। वे तब से टाटा समूह के मानद अध्यक्ष हैं। वे रोजमर्रा के कामकाज से तो अपने को अलग कर चुके हैं। पर अभी भी टाटा समूह अपने अहम फैसले लेते हुए उनके अनुभव का लाभ तो उठाता है। अनुभव का कोई विकल्प भी नहीं होता है। टाटा समूह ने एयर इंडिया का अधिग्रहण कर लिया। माना जाता है कि रतन टाटा भी चाहते थे उनका समूह एयर इंडिया का अधिग्रहण कर ले। आखिर एयर इंडिया पहले टाटा समूह के पास ही थी। इसलिए टाटा समूह एयर इंडिया को लेकर भावनात्मक रूप से जुड़ा हुआ भी था। दरअसल नाईक उन मूल्यों को प्रतिबिंबित करते हैं जिनमें व्यावसायिकता, उद्यमशीलता और सभी हितधारकों के हितों को आगे बढ़ाने को लेकर एक प्रतिबद्धता का मिला जुला भाव होता है। उनके नेतृत्व में, एलएंडटी ने कई चुनौतियों का सामना किया और लाभदायक विकास पर अधिक ध्यान देने के साथ हर बार मजबूत बनकर उभरी। बेशक, नाईक भारत के कोरपोरेट जगत के सबसे सफल और सम्मानित नाम रहे।

नाईक उनमें से नहीं थे जो अपनी कुर्सी से चिपके रहना पसंद करते थे। उन्होंने वक्त रहते ही एलएंडटी में अपने संभावित उत्तराधिकारियों को तैयार कर शुरू दिया था। ये तो सबको पता है कि हरेक व्यक्ति के सक्रिय करियर की आखिरकार एक उम्र है। उसके बाद तो उसे अपने पद को छोड़ना ही है, खुशी-खुशी छोड़े या मजबूरी में छोड़ना पड़े क इसलिए बेहतर होगा कि किसी कंपनी का प्रमोटर, चेयरमेन या किसी संस्थान का जिम्मेदार पद पर आसीन शख्स अपना एक या एक से अधिक उत्तराधिकारी तैयार कर ले। बेहतर उत्तराधिकारी मिलने से किसी कंपनी या संस्थान की ग्रोथ प्रभावित नहीं होती। सत्ता का हस्तांतरण बिना किसी संकट या व्यवधान के हो जाता है। आप कंपनी को मेंटर या संरक्षक के रूप में शिखर या कहें कि चेयरमेन के पद से हटने के बाद भी सलाह तो दे ही सकते हैं। अगर नाईक के करियर पर नजर दौड़ाएं तो वे 1965 में एलएंडटी में एक जूनियर इंजीनियर के रूप में शामिल हुए। नाईक ने तेजी से बढ़ती जिम्मेदारी के पदों पर कदम रखा। वे महाप्रबंधक से प्रबंध निदेशक और सीईओ भी बन गए। उन्हें एलएंडटी का 29 दिसंबर, 2003 को अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक बनाया गया। वे 2012 से 2017 तक एलएंडटी के समूह कार्यकारी अध्यक्ष थे। अक्टूबर 2017 में, उन्होंने कार्यकारी जिम्मेदारियों से अलग हटकर समूह अध्यक्ष नियुक्त किया गया। उन्हीं के प्रयासों से एलएंडटी ने मिसाइलों और हथियार प्रणालियों के डिजाइन, विकास और निर्माण में नेतृत्व की स्थिति संभाली और रक्षा अनुसंधान एवं विकास और अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में लंबी छलांग लगाई। अगर बात थोड़ी हटकर करें तो हमें महेन्द्र सिंह धोनी के रूप में एक शानदार कप्तान मिला। उन्होंने भारतीय क्रिकेट को जीतना सिखाया। वे संकट के पलों में भी शांत रहा करते थे। बैंकिंग की दुनिया पर नजर रखने वालों को आदित्य पुरी का

नाम बहुत अच्छे से पता है। उन्होंने एचडीएफसी बैंक को बनाया और खड़ा किया। उसकी गिनती देश के सर्वश्रेष्ठ बैंकरों में होती है। लंबे समय तक एचडीएफसी बैंक का नेतृत्व करने के बाद पुरी रिटायर हो गए। लेकिन, उन्होंने अपने कई योग्य उत्तराधिकारी तैयार कर लिए। उन्हें नेतृत्व के गुण समझाए-सिखाए। इसलिए वहां सत्ता का हस्तांतरण मजे से हो गया। पुरी के जाने के बाद भी एचडीएफसी बैंक आगे बढ़ रहा है। दरअसल किसी परिवार से लेकर संस्थान की पहचान उसके मुखिया से होती है। अब अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) को ही ले लीजिए। वहां डॉ. रणदीप गुलेरिया निदेशक रहे। डॉ. गुलेरिया ने अपने पद पर रहते हुए शानदार काम किया। उन्हें सारा देश जानता है, क्योंकि सारे देश को एम्स की क्षमताओं पर भरोसा है। एम्स को एक श्रेष्ठ संस्थान के रूप में किसने खड़ा किया? उस महान डाक्टर, शिक्षक और प्रशासक का नाम था डॉ.बी.बी.दीक्षित था। एम्स 1956 में बना तो सरकार ने डॉ. दीक्षित को इसका पहला निदेशक का पदभार संभालने की पेशकश की। दीक्षित किसी के दबाव में काम नहीं करते थे। डॉ. दीक्षित ने एम्स में चोटी के प्रोफेसरों और डाक्टरों को जोड़ा। वे हरेक नियुक्ति मेरिट पर करते थे। वे लगातार एम्स में रिसर्च करने वालों को प्रोत्साहित करते थे। उनकी प्रशासन पर पूरी पकड़ रहा करती थी। दरअसल शिखर पर बैठे इंसान को सत्य और न्याय का साथ देना ही होगा। अगर वह इस मोर्चे पर असफल रहता है तो उसे बेहतर लीडर नहीं माना जा सकता। तो साफ बात है कि बिना कुशल नेतृत्व के कोई संस्थान बुलंदियों को नहीं छू सकता। यह हमने एलएंडटी में देखा। ये राष्ट्र निर्माण में एहम रोल अदा कर रहा है। इसका श्रेय नाईक जी को मिलना चाहिए। इन्फ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में उनका कद रतन टाटा जितना ही बड़ा है। ■

अगर नाईक के करियर पर नजर दौड़ाएं तो वे 1965 में एलएंडटी में एक जूनियर इंजीनियर के रूप में शामिल हुए। नाईक ने तेजी से बढ़ती जिम्मेदारी के पदों पर कदम रखा। वे महाप्रबंधक से प्रबंध निदेशक और सीईओ भी बन गए। उन्हें एलएंडटी का 29 दिसंबर, 2003 को अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक बनाया गया। वे 2012 से 2017 तक एलएंडटी के समूह कार्यकारी अध्यक्ष थे। अक्टूबर 2017 में, उन्होंने कार्यकारी जिम्मेदारियों से अलग हटकर समूह अध्यक्ष नियुक्त किया गया।

नीरज चोपड़ा और फुटबॉल में खिताबी जीत से

भारतीय खिलाड़ियों का हौसला बुलंद

पिछले दिनों खेल जगत से आई दो खबरों ने हरेक भारतीय का सिर गर्व से ऊंचा कर दिया। पहली खबर थी कि ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता नीरज चोपड़ा ने इस साल का दूसरा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए लुसाने डायमंड लीग भी जीत लिया। नीरज चोपड़ा ने 87.66 मीटर भाला फेंककर पहला स्थान हासिल किया। चोट के बाद भी वापसी करते हुए नीरज चोपड़ा ने दूसरा डायमंड लीग जीता। इससे पहले दोहा डायमंड लीग में उसने 88.67 मीटर भाला फेंका था। दूसरी खुशी दी भारत की फुटबॉल टीम ने। भारत ने कुवैत को हराते हुए नौवीं बार सैफ फुटबॉल चैंपियनशिप का खिताब अपने नाम पर कर लिया। दोनों ही टीमें 90 मिनट के बाद भी एक्स्ट्रा टाइम तक 1-1 के स्कोर पर बराबर थीं। ऐसे में मैच का नतीजा पेनल्टी शूटआउट से निकला, जहां भारत ने अपने घरेलू दर्शकों के बीच कुवैत को 5-4 से हराया। इससे पहले सेमीफाइनल में भी भारत ने लेबनान को पेनल्टी शूटआउट में 4-2 से हराया था।

ब्रजेश शर्मा

भारत को खेल के मैदान में चौतरफा मिल रही सफलताएं साबित करती हैं कि भारत में खेलों पर सरकार और निजी क्षेत्र पर्याप्त ध्यान दे रहा है। ये दोनों खेलों के विकास पर इनवेस्ट भी कर रहे हैं। ये कोई बहुत पुरानी बातें नहीं हैं जब अंतरराष्ट्रीय स्तर के खेल आयोजनों में भारत की लगभग सांकेतिक उपस्थिति ही रहा करती थी। हम हॉकी में तो बेहतर प्रदर्शन कर लिया करते थे, पर शेष खेलों में हमारा प्रदर्शन प्रायः औसत ही रहता था। हमारे खिलाड़ियों-अधिकरियों की टोलियां बड़े खेल आयोजनों में जाकर खाली हाथ वापस आ जाया करती थी। हिन्दुस्तानी खेल प्रेमियों की निगाहें तरस जाती थीं, एक अदद पदक को देखने के लिए। पर गुजरे एक दशक से स्थितियां तेजी से बदल रही हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि हम बैडमिंटन जैसे खेल में विश्व चैंपियन बनने लगे हैं, हमारा धावक ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतता है और क्रिकेट में तो हम विश्व की सबसे बड़ी शक्ति हैं ही। हमारी बेटियां वेटलिफ्टिंग तथा कुश्ती जैसी स्पर्धाओं में देश की झोली पदकों से भर देती हैं।

हम बड़े खेल आयोजन भी कर रहे हैं। हमने पिछले साल चेन्नई में 44वें शतरंज ओलंपियाड का आयोजन किया। जो पहली बार भारत में हुई। शतरंज ओलंपियाड चेन्नई से 50 किलोमीटर दूर मामल्लापुरम में हुआ और इसमें रिकॉर्ड खिलाड़ियों ने भाग लिया। नीरज चोपड़ा ने टोक्यो ओलंपिक खेलों में भारत को गोल्ड मेडल दिलवाया। उनकी उपलब्धि पर सारा देश गर्व कर रहा है। हमने 2022 में थॉमस कप जीता था। लक्ष्य सेन, किदांबी श्रीकांत, एच एस प्रणय और सात्विक साईराज, रंकी रेड्डी-चिराग शेट्टी ने जो धैर्य और दृढ़ संकल्प दिखाया उसने उस धारणा को धराशायी कर दिया कि भारतीय खेलों के लिए नहीं बने हैं।

लंबे समय से हम भारतीयों ने अपने मन में इन भ्रांतियों को पनपने भी दिया। कहा जाता रहा है कि भारतीयों में वह जीतने वाला दम-खम नहीं होता। हम सिर्फ देश में ही अच्छा खेलते हैं और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेकार साबित होते हैं। अफसोस कि हमने खुद दूसरों को अपने ऊपर हंसने का पूरा मौका दिया है। हमने इस साल उड़ीसा में विश्व हॉकी चैंपियनशिप को भी आयोजित किया। अब हम विश्व कप क्रिकेट चैंपियनशिप की भी मेजबानी करने जा रहे हैं। 2023 क्रिकेट विश्व कप आईसीसी क्रिकेट विश्व कप का 13वां संस्करण होगा, जिसे अक्टूबर और नवंबर 2023 के दौरान आयोजित किया जाना है। यह पहली बार होगा जब प्रतियोगिता पूरी तरह से भारत में आयोजित की जानी है। पिछले तीन संस्करणों 1987, 1996 और 2011 में भारत आंशिक रूप से मेजबान था।

देश की राजधानी दिल्ली में 1951 के पहले एशियाई खेलों के बाद 1982 में एशियाई खेल हुए और फिर 2010 में कॉमनवेल्थ खेल आयोजित किए गए। इनके आयोजन पर हजारों करोड़ रुपया खर्च हुआ ताकि विभिन्न स्टेडियम आदि बन सकें।

मूल रूप से टूर्नामेंट 9 फरवरी से 26 मार्च 2023 तक खेला जाना था। लेकिन कोविड-19 महामारी के कारण जुलाई 2020 में, तिथियों को अक्टूबर और नवंबर में स्थानांतरित कर दिया गया। याद कीजिए कि हमने कुछ साल पहले फीफा अंडर 17 विश्व कप का भी आयोजन किया था। बहरहाल, ये कहना पड़ेगा कि भारत खेलों में चौतरफा स्तर पर आगे बढ़ रहा है। हमारे खिलाड़ी महत्वपूर्ण उपलब्धियां दर्ज कर रहे हैं। हम अंतरराष्ट्रीय स्तर के खेल आयोजन भी सफलतापूर्वक तरीके से आयोजित कर रहे हैं।

पर मुझे एक बात कहने दें कि हमें अपने बड़े-विशाल स्टेडियमों का सही से इस्तेमाल करने पर फोकस करना होगा। मतलब ये कि इनमें युवा उदीयमान खिलाड़ी आराम से आकर अभ्यास कर सकें। देश की राजधानी दिल्ली में 1951 के पहले एशियाई खेलों के बाद 1982 में एशियाई खेल हुए और फिर 2010 में कॉमनवेल्थ खेल आयोजित किए गए। इनके आयोजन पर हजारों करोड़ रुपया खर्च हुआ ताकि विभिन्न स्टेडियम आदि बन सकें। 1982 के एशियाई खेलों के सफल आयोजन के लिए जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम, इंदिरा गांधी स्टेडियम, करणी सिंह शूटिंग रेंज वगैरह का निर्माण हुआ था। कॉमनवेल्थ खेलों के समय पहले से बने स्टेडियमों को नए सिरे से विकसित किया गया। पर इतने भव्य आयोजनों के बाद भी दिल्ली से विभिन्न खेलों में श्रेष्ठ खिलाड़ी नहीं निकल पाए। दिल्ली को लघु भारत भी कहा जा सकता है। यहाँ देशभर के भारतीय नागरिक रहते हैं। यह स्थिति अफसोस जनक है कि दिल्ली से भारत को नामवर खिलाड़ी नहीं मिल रहे हैं। इसके साथ ही एक राय ये भी है कि राजधानी में जो बड़े-बड़े स्टेडियम बने उनमें खिलाड़ियों को आराम से प्रैक्टिस की सुविधा नहीं मिल पाती। यह स्थिति फौरन खत्म होनी चाहिए। देश के बाकी सभी शहरों- महानगरों में बने स्टेडियमों को खिलाड़ियों स दूर रखने का क्या मतलब है। मुझे एक बार राजधानी के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में कुछ अफ्रीकी नौजवान मिले। वे सब भारत में पढ़ रहे थे। वे अफ्रीकी नौजवान स्टेडियम के बाहर व्यायाम कर रहे थे। मैंने उनसे कहा कि हम बेहतर खिलाड़ी इसलिए नहीं निकाल पाते क्योंकि हमारे यहां विश्व स्तरीय स्टेडियम नहीं है। मेरी बात को सुनकर वे दो-तीन अफ्रीकी मुस्कराते हुए जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम की तरफ इशारा करते हुए कहने लगे- इस तरह का शानदार स्टेडिम आपको सारे अफ्रीका में कहीं भी नहीं मिलेगा। हमारे खिलाड़ी जीतते हैं तो सिर्फ इसलिए क्योंकि वे मैदान में जीत के जज्बे के साथ उतरते हैं। संयोग से अब हमारे खिलाड़ियों के पास जीत का जज्बा और सुविधाएं दोनों हैं। उन्हें अब बस शिखर को छूना है। ■

नेहरू के सपने अधूरे मोदी कर रहे पूरे?

14 जुलाई 2023 की तारीख देश के लिए एक ऐतिहासिक दिन साबित हुआ। दोपहर के 2:30 मिनट पर भारत का चंद्रयान-3 चांद की ओर रवाना हो गया। चांद को छूना औरों की तरह हमारा भी सपना रहा है।

हरिशचंद्र शर्मा

चंद्रमा एक ऐसा खास आकर्षण जिसने सदियों से हमारे मन और कल्पनाओं पर अधिकार जमाया हुआ है। हमारे अतीत की कुंजी और भविष्य की ओर ले जाने वाला मार्ग। हम सब के बचपन में चांद से जुड़ी लोरियों और कहानियों की एक अलग जगह बनी हुई है। चांद हमेशा से हमारे लिए किसी रहस्य से कम नहीं है। चांद को मुट्ठी में करने सपनों की उड़ान पर हिन्दुस्तान निकल पड़ा है। 14 जुलाई 2023 की तारीख देश के लिए एक ऐतिहासिक दिन साबित हुआ। दोपहर के 2:30 मिनट पर भारत का चंद्रयान-3 चांद की ओर रवाना हो गया। चांद को छूना औरों की तरह हमारा भी सपना रहा है। चंद्रयान-3 पृथ्वी कक्षा में स्थापित हो गया। 40 दिन बाद पहले पृथ्वी और फिर चंद्रमा की कक्षा में चक्कर लगाएगा। उसके बाद चांद पर उतरेगा। अभी पृथ्वी पर भी एक नया चक्कर चल रहा है। चंद्रयान-3 के रवाना होते ही उसे लेकर क्रेडिट की लड़ाई भी शुरू हो गई है।

शुरू हुई क्रेडिट की लड़ाई

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने ट्वीट में इसका पूरा श्रेय वैज्ञानिकों को दिया। वहीं बीजेपी के कुछ नेताओं ने वैज्ञानिकों के साथ प्रधानमंत्री की प्रतिबद्धता को भी इसका श्रेय दिया। इसके बाद कांग्रेस नेताओं की ओर से भी ताबड़तोड़ बयान आए। राहुल गांधी, प्रियंका वाड्रा, जयराम रमेश जैसे कई नेताओं ने जो ट्वीट किए उसमें लिखने का भावार्थ यही था कि इसरो की शुरूआत तो नेहरू जी ने ही की थी। उन्होंने ही तो अंतरिक्ष को लेकर सपने जगाए थे वरना ये सब कैसे होता?

कांग्रेस ने पूर्व प्रधानमंत्रियों के योगदान को किया याद

कांग्रेस नेता मल्लिकार्जुन खरगे ने भी एक ट्वीट किया और उन्होंने नेहरू जी से लेकर अटल जी तक को क्रेडिट दिया। लेकिन मनमोहन सिंह के बाद वो मोदी का नाम लिखना भूल गए या फिर उन्होंने जान बूझकर नहीं लिखा। ये तो वही बता सकते हैं। इसके बाद ही देखते-देखते नेहरू जी और इंदिरा गांधी की कुछ पुरानी तस्वीरें अवतरित हुईं। इसरो की साइकिल पर रॉकेट ले जाती तस्वीरें वायरल होने लगी। कांग्रेस ने एक नैरेटिव गढ़ा तो वहीं काउंटर में ये दलील दी जाने लगी कि मोदी न होते तो आज भी साइकिल पर ही रॉकेट ले जा रहे होते। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने चंद्रयान-3 के सफल प्रक्षेपण को सभी भारतीयों के लिए बेहद गर्व का क्षण बताते हुए कहा कि यह पंडित जवाहर लाल नेहरू, अटल बिहारी वाजपेयी से लेकर मनमोहन सिंह सहित पिछले सभी प्रधानमंत्रियों की दूरदर्शिता और दृढ़ संकल्प की उपलब्धियों का प्रमाण है। बेशक इसमें इसरो और हमारे अनगिनत वैज्ञानिकों का महान योगदान है जिन्होंने अपना पूरा जीवन देश में वैज्ञानिक सोच के लिए समर्पित कर दिया। रोचक तथ्य यह है कि इसमें मोदी सरकार के नौ साल के कार्यकाल का कोई जिक्र नहीं किया गया। डॉक्टर विक्रम साराभाई और डॉक्टर रामानाथन ने 16 फरवरी 1962 को Indian National Committee for Space Research (INCOSPAR) की स्थापना की गई। जो आगे चलकर 15 अगस्त 1969 को इसरो बन गया। बहुत सारे लोगों ने यह सवाल उठाया है कि जब इसरो की स्थापना से पहले ही नेहरू का देहांत हो गया था, तो वो इस संस्थान की स्थापना कैसे कर सकते हैं? इसरो की आधिकारिक वेबसाइट पर भी अंतरिक्ष रिसर्च एजेंसी की स्थापना में नेहरू और डॉक्टर साराभाई के योगदान का जिक्र है। वेबसाइट पर लिखा है कि भारत ने अंतरिक्ष में जाने का फैसला तब किया था जब भारत सरकार ने साल 1962 में इंडियन नेशनल कमेटी फॉर स्पेस रिसर्च की स्थापना की थी।

मोदी सरकार में क्या बदला है?

नेतृत्व की नीति और इच्छाशक्ति को भी देखना जरूरी है। 2014 तक साइंस एंड टेक्नोलॉजी का बजट 5 हजार 400 करोड़ रुपए थे। भारत के विज्ञान को हम इससे किस दिशा में ले जा सकते हैं। कहा तो ये भी जाता है कि सारे पैसे वेतन और लैबोरेट्री के मेंटेनेंस में ही चले जाते थे। लेकिन 2022 में 14 हजार 217 करोड़ हो गया है। यानी 2014 से लेकर 2022 तक इसके बजट में तीन गुणा इजाफा हुआ है। इसके अलावा पीएम मोदी की सरकार में साइंस टेक्नोलॉजी एंड इनोवेशन पॉलिसी को लाकर एक नई क्रांति को जन्म दिया। अगले पांच साल में भारत अमेरिका और रूस से हर क्षेत्र में आगे बढ़ने वाला है। वही वैज्ञानिक स्टालिन और जार के युग में थे। वहीं वैज्ञानिक वाशिंगटन और लिंकन के युग में भी थे। दोनों का काम अलग अलग था। ■

शिवराज ने दशमत रावत का सुदामा के रूप में सत्कार कर दिलों को छू लिया

उदयभान सिंह

एक तरफ इस पूरे घटनाक्रम पर विपक्ष अनर्गल आरोप लगाकर हाय तौबा मचाये हुए है। आखिर मचाये भी क्यों ना, वंशवाद परंपरा के अधीन चल रही पार्टी के नेताओं और उनके पुत्रों के लिए ऐसे दृश्य मात्र कल्पना में ही पूर्ण हो सकते हैं। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री निवास के दृश्य लगभग पूरे देश में चर्चा का केंद्र बने रहे। कैसे एक प्रदेश का मुखिया, सीधी में हुई एक घटना से पीड़ित व्यक्ति को न्याय दिलाने, उसका सम्मान पुनः लौटाने का हर संभव प्रयास करता है और प्रदेश के सभी जाति वर्ग के लोगों को सामाजिक समरसता व लोक आचरण का एक सारगर्भित पाठ पढ़ा जाता है।

इससे पूर्व ही मुख्यमंत्री ने एक दिन पहले ट्वीट कर अपने मन की पीड़ा व्यक्त की थी। शिवराज सिंह चौहान ने कहा था कि जबसे मैंने सीधी की घटना का वीडियो देखा, अंतर्मन अत्यधिक व्याकुल और हृदय पीड़ा से भरा हुआ है। मैं तबसे ही दशमत जी से मिलकर उनका दुःख बांटना चाहता था और यह विश्वास भी दिलाना चाहता था कि उनको न्याय मिलेगा। उनसे और उनके परिवार से भोपाल में अपने निवास पर मिलकर अपनी संवेदनाएं व्यक्त करने के साथ परिवार को ढांढस बंधाऊंगा। उनके इस कथन के बाद से ही मीडिया और सोशल मीडिया में अनेकों प्रकार के कयास लगाये जा रहे थे। पर जिस प्रकार से प्रदेश के मुखिया का एक मानवीय पक्ष समाज के सामने आया है, वह अकल्पनीय है। जो मुख्यमंत्री निवास के वीडियो सभी मीडिया व सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्म पर दिख रहे हैं, उसमें वे खुद दशमत जी को लेकर आवास के अंदर आए। उन्हें कुर्सी पर बैठाकर खुद नीचे जा बैठे और उनके पैर धोए। इसके बाद सीएम ने शॉल ओढ़ाकर, तिलक लगाकर व भगवान गणेश की एक प्रतिमा भेंट में देकर उनका सम्मान भी किया। उन्होंने कहा, कि मैं दशमत जी से माफी मांगता हूं। मेरे लिए जनता ही भगवान है। इसके अलावा मुख्यमंत्री ने दशमत जी से अनेक विषयों पर चर्चा भी की। दशमत से पूछा कि क्या करते हो, घर चलाने के क्या साधन हैं, कौन-कौन-सी योजनाओं का लाभ मिल रहा है? यहां तक कि उन्होंने दशमत को सुदामा भी कहा। सीएम ने कहा कि दशमत अब मेरे दोस्त हैं। एक तरफ इस पूरे घटनाक्रम पर विपक्ष अनर्गल आरोप लगाकर हाय तौबा मचाये हुए है। आखिर मचाये भी क्यों ना, वंशवाद परंपरा के अधीन चल रही पार्टी के नेताओं और उनके पुत्रों के लिए ऐसे दृश्य मात्र कल्पना में ही पूर्ण हो सकते हैं। जिन्होंने कभी गरीबी स्वप्न में भी ना देखी हो, उनके लिए किसी पंक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति के सम्मान की चिंता कल्पना का ही एक रूप है। दूसरी तरफ मुख्यमंत्री का यह नया संवेदनशील रूप लोगों द्वारा अत्याधिक सराहा जा रहा है। जहां उन्होंने दशमत के मनोभाव से उस घटना को विस्मृत करवाने का हरसंभव प्रयास किया व उससे व्यक्तिगत स्तर पर सुख दुख भी बाटें। पूर्व में भी एक ऐसा ही संवेदनशीलता का वाकया सितंबर 2021 में आया था। जब एक प्रदेश का मुखिया कितना सहज और सरल होना चाहिए, ये जनता को देखने को मिला था। जब खंडवा जिले में सीएम की यात्रा पंधाना के बलरामपुर गांव पहुंची तो भाषण के दौरान गांव की एक बेटी ने मुख्यमंत्री को अपनी व्यथा से भरी चिट्ठी सौंपी थी। सीएम ने भाषण के दौरान ही कलेक्टर को चिट्ठी में लिखी समस्या देखने को कहा था और साथ ही कलेक्टर को तुरंत आर्थिक मदद जारी करने के निर्देश दिए। दरअसल उस बालिका के पिता का चार माह पहले कोरोना से देहावसान हुआ था। सीएम का ये अंदाज उस वक्त भी ग्रामीणों को खूब भाया था और अब सीधी मामले में उनके व्यक्तित्व के इस मानवीय पहलू की चारों ओर लोगों द्वारा निरंतर प्रशंसा की जा रही है। ■

बेलारूस में था प्रिगोझिन का बॉडी डबल!

रहस्य बना वैगनर चीफ का ठिकाना, कहीं रूसी राष्ट्रपति पुतिन के खिलाफ बड़ी साजिश तो नहीं?

येवगेनी प्रिगोझिन का ठिकाना एक रहस्य बना हुआ है। वैगनर प्रमुख के निजी जेट ने जून के अंत में बेलारूस के लिए उड़ान भरी, लेकिन उसी शाम रूस लौट आए।

डॉ. राम नरेश शर्मा

वैगनर बॉस येवगेनी प्रिगोझिन को कथित तौर पर रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के खिलाफ उनके भाड़े के समूह के संक्षिप्त विद्रोह के बाद बेलारूस में निर्वासित कर दिया गया था। बाद की रिपोर्टों से पता चला कि भाड़े के समूह के चीफ को रूस के सेंट पीटर्सबर्ग में देखा गया था। लेकिन, पेंटागन के एक अनाम अधिकारी ने द न्यूयॉर्क टाइम्स को बताया कि तख्तापलट की असफल कोशिश के बाद येवगेनी प्रिगोझिन वास्तव में रूस में थे। अधिकारी ने एनवाईटी को बताया कि ऐसा प्रतीत करने के लिए कि वह रूस से भाग गए है, हो सकता है कि उनके बॉडी डबल को नियुक्त किया गया हो।

बेलारूस और क्रेमलिन का क्या कहना है?

अधिकारी ने दावा किया कि वैगनर के किसी भी सैनिक को बेलारूस नहीं भेजा गया और अधिकांश अभी भी पूर्वी यूक्रेन में हैं। ऐसा तब हुआ जब बेलारूस के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर लुकाशेंको ने संवाददाताओं से कहा कि यह स्पष्ट नहीं है कि वैगनर लड़ाके बेलारूस आएंगे या नहीं, क्योंकि उन्होंने पहले उन्हें देश में एक रेगिस्तानी सैन्य अड्डे की पेशकश की थी। उन्होने कहा कि जहां तक प्रिगोझिन की बात है, वह सेंट पीटर्सबर्ग में है। वह बेलारूस के क्षेत्र में नहीं है। अलेक्जेंडर लुकाशेंको की टिप्पणियों पर प्रतिक्रिया देते हुए क्रेमलिन ने कहा कि वह प्रिगोझिन के मूवमेंट को ट्रैक नहीं कर रहे हैं। क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेसकोव ने कहा कि नहीं हम उनके कदमों को ट्रैक नहीं कर रहे हैं। हमारे पास ऐसा करने की न तो क्षमता है और न ही इच्छा है।

तो येवगेनी प्रिगोझिन कहाँ है?

बीबीसी की रिपोर्ट के अनुसार, येवगेनी प्रिगोझिन का ठिकाना एक रहस्य बना हुआ है। वैगनर प्रमुख के निजी जेट ने जून के अंत में बेलारूस के लिए उड़ान भरी, लेकिन उसी शाम रूस लौट आए। रिपोर्ट में दावा किया गया कि उन्हें सेंट पीटर्सबर्ग और मॉस्को के बीच कई उड़ानें ली। हालांकि इसकी पुष्टि नहीं की जा सकी कि प्रिगोझिन विमान में थे या नहीं? येवगेनी प्रिगोझिन ने शीर्ष रूसी रक्षा अधिकारियों के खिलाफ कई सार्वजनिक बयान देने के बाद 24 जून को क्रेमलिन के खिलाफ तख्तापलट का ऐलान किया था। भाड़े के समूह ने रोस्तोव-ऑन-डॉन पर कब्जा कर लिया लेकिन यह कहते हुए आगे नहीं बढ़े कि वे रूसी खून बहाने से बचना चाहते थे। ■

क्यों भारत के लिए खास है फ्रांस

मधुसूदन भट्ट

भारत-फ्रांस के बीच घनिष्ठ संबंधों की इबारत को नए सिरे से लिखने के इरादे से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी फ्रांस की यात्रा पर जा रहे हैं। वे वहां पर बैस्टिल डे परेड में सम्मानित अतिथि के रूप में शामिल होंगे। मोदी जी की यात्रा के दौरान दोनों देश महत्वपूर्ण रक्षा और व्यापारिक समझौते पर मुहर लगाएंगे। भारतीय नौसेना के लिए फ्रांस के साथ 26 राफेल एम (मरीन) लड़ाकू विमानों का सौदा होने की उम्मीद है। भारत, फ्रांस और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) ने 8 जून को ओमान की खाड़ी में अपना पहला त्रिपक्षीय समुद्री अभ्यास सफलतापूर्वक संपन्न किया। इसमें आईएनएस तरकश, फ्रांसीसी जहाज सुरकौफ, फ्रेंच राफेल विमान और यूएई नौसेना समुद्री गश्ती विमान की भागीदारी थी। इस अभ्यास में सतही युद्ध जैसे नौसेना संचालन का एक व्यापक स्पेक्ट्रम देखा गया था, जिसमें सतह के लक्ष्यों पर मिसाइल से सामरिक गोलीबारी और अभ्यास, हेलीकाप्टर क्रॉस डेक लैंडिंग संचालन, उन्नत वायु रक्षा अभ्यास और बोर्डिंग संचालन शामिल थे। मोदीजी की यात्रा से ठीक पहले इस तरह के अभ्यास का उद्देश्य तीनों नौसेनाओं के बीच त्रिपक्षीय सहयोग को बढ़ाना और समुद्री वातावरण में पारंपरिक और गैर-पारंपरिक खतरों को दूर करने के उपायों को अपनाने का मार्ग प्रशस्त करना था।

इस बीच, यह भी महत्वपूर्ण है कि भारत-फ्रांस रणनीतिक साझेदारी के इस साल 25 वर्ष पूरे हो रहे हैं। आपको याद होगा कि प्रधानमंत्री मोदी ने सन 2016 में भारत की विदेश नीति बड़ा बदवाल तब किया था जब उन्होंने फ्रांस के तत्कालीन राष्ट्रपति फ्रांसिस ओलांद की दिल्ली की जगह चंडीगढ़ में अगवानी की थी। मोदी जी से पहले के प्रधानमंत्रियों के दौर में विदेशों से भारत आने वाले राष्ट्राध्यक्ष और प्रधानमंत्री दिल्ली आते थे और उन्हें ज्यादा से ज्यादा आगरा में ताजमहल घुमा दिया जाता था। अब इन महत्वपूर्ण स्थानों में अहमदाबाद, बनारस, चंडीगढ़, बेंगलुरु और तमिलनाडु के मंदिर भी शामिल हो गये हैं। और भी कुछ शहर इस नीति का आने वाले वक्त में हिस्सा बनेंगे। फ्रांस के राष्ट्रपति फ्रांसिस ओलांद उस साल गणतंत्र दिवस समारोह के मुख्य अतिथि थे। ओलांद और मोदी के बीच चंड़ीगढ़ में विस्तार से गुफ्तुगू हुई। फ्रांस के राष्ट्रपति का भारतीय दौरा चंडीगढ़ से शुरू करने के पीछे एक वजह थी। दरअसल चंडीगढ़ के डिजाइनर लॉ कार्ब्युजियर फ्रांस के ही नागरिक थे। यहां पर लॉ कार्ब्युजियर के सहयोगी प्रो.जे.के.चौधरी की चर्चा करना भी

समीचिन होगा। प्रो.जे.के.चौधरी ने लॉ कार्ब्युजियर के साथ काम करके बहुत कुछ सीखा था। दोनों भारत तथा फ्रांस के आर्किटेक्चर पर लंबी चर्चाएं भी करते थे। प्रो. चौधरी ने आईआईटी दिल्ली को डिजाइन किया था। इनमें क्लास रूम, छात्रावास, हॉल, प्रयोगशालाएं, फैक्ल्टी के फ्लैट, कर्मियों के फ्लैट वगैरह शामिल थे। उनके सामने वास्तव में बड़ी चुनौती थी कि वे इतने विशाल कैंपस में इतनी अलग-अलग उपयोग में आने वाली इमारतों के डिजाइन तैयार करें। इसमें कोई शक नहीं है कि प्रो. चौधरी को फ्रांस के महान आर्किटेक्ट के साथ काम करने के बाद बड़े प्रोजेक्ट पर काम करने का ठोस अनुभव प्राप्त हुआ। दरअसल आईआईटी से पहले दिल्ली में कोई इतना बड़ा शिक्षण संस्थान का कैंपस बना भी नहीं था। पर चंडीगढ़ के निर्माण के बाद उनके पास अनुभव पर्याप्त हो गया था। फ्रांस के राष्ट्रपति ओलांद की उसी यात्रा के समय फ्रांस ने भारत 33 राफेल लड़ाकू विमान देने का वादा किया था। राफेल की जद में पूरा पाकिस्तान आ जाता है जिससे हमें पाकिस्तान पर काफी बढ़त मिल जाती है। भारत को राफेल विमान मिलने भी लगे हैं। अगर दोनों देशों के संबंधों के इतिहास पर नजर डालें तो ये सदियों पुराने हैं। 17वीं शताब्दी से 1954 तक, फ्रांस ने भारत के पुंडुचेरी में अपनी औपनिवेशिक उपस्थिति बनाए रखी थी। वहां पर अब भी फ्रांस की संस्कृति और इमारतों पर फ्रांस की वास्तुकला को देखा जा सकता है। खैर, बेशक,1998 में रणनीतिक साझेदारी की स्थापना के साथ, राष्ट्राध्यक्षों/सरकारी प्रमुखों के स्तर पर नियमित उच्च-स्तरीय आदान-प्रदान और रक्षा, परमाणु जैसे रणनीतिक क्षेत्रों सहित बढ़ते वाणिज्यिक आदान-प्रदान के माध्यम से द्विपक्षीय सहयोग के सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। फिर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आगामी फ्रांस यात्रा पर लौटते है। ये भारतीय प्रधानमंत्री की तीसरी फ्रांस की यात्रा है। मान कर चलिए कि मोदी और फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन व्यापार और अर्थशास्त्र से लेकर ऊर्जा सुरक्षा, आतंकवाद विरोधी, रक्षा और सुरक्षा सहयोग और भारत-प्रशांत में सहयोग जैसे मुद्दों पर भी चर्चा करेंगे। यह भी लग रहा है कि फ्रांस ने पश्चिमी दुनिया में भारत के भरोसेमंद दोस्त और साझेदार के रूप में रूस की जगह ले ली है। भारत ने फ्रांस का तब से विशेष आदर करना शुरू कर दिया है, जब फ्रांस ने संयुक्त राष्ट्र में चीन द्वारा कश्मीर पर बुलाई गई बैठक में भारत के रुख का समर्थन किया था। फ्रांसीसियों ने पहले भी वैश्विक आतंकवादी मसूद अजहर पर संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव का समर्थन किया था। पुलवामा हमले के बाद भारत ने कूटनीति के मोर्चे पर पाकिस्तान को पूरी तरह से अलग- थलग कर दिया था। इसी के कारण पुलवामा हमले की जिम्मेदारी लेने वाले आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद के चीफ मसूद अजहर पर प्रतिबंध लगाने के लिए संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद में अमेरिका, फ्रांस और ब्रिटेन ने प्रस्ताव पेश किया था। फ्रांस, अमेरिका और ब्रिटेन ने अपने प्रस्ताव में मसूद की वैश्विक यात्राओं पर प्रतिबंध लगाने और उसकी सभी संपत्ति फ्रीज करने की मांग भी की। यह सब यूं ही नहीं हो गया। यह कहते हैं नेतृत्व के हनक का असर आज मोदीजी ने विश्व को अपनी नेतृत्व क्षमता का मुरीद बना दिया यह किसे नहीं पता कि भारत अजहर मसूद को अपना दुश्मन नंबर एक मानता है। पंजाब के पठानकोट के एयरफोर्स बेस पर हुए हमलों जैश-ए-मोहम्मद के नेता अजहर मसूद का हाथ था। जैश भारत को क्षति पहुंचाने की हर मुमकिन कोशिश करता है। जैश को ताकत पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई से ही मिलती है। आईएसआई पाकिस्तानी सेना का अहम अंग है। वह पाकिस्तानी सेना के इशारों पर ही काम करती है। भारत- फ्रांस को आपसी संबंधों को मजबूती देते हुए दुनिया से आतंकवाद और अजहर मसूद जैसे मानवता के दुश्मनों को खत्म करना ही होगा। वैसे तो फ्रांस के हालिया सांप्रदायिक हिंसायें उसका आंतरिक मामला है, जिसपर सामान्यतः चर्चा नहीं होती लेकिन, भारत पिछले 1946 से ही ऐसी सांप्रदायिक हिंसाओं का भुक्तभोगी है और अबतक उनको असरदार ढंग से नियंत्रित भी करता रहा है, फ्रांस इस मामले में भी भारत की अनौचारिक सलाह ले सकता है। ■

मानसून के दौरान भारी वर्षा की घटनाओं का पूर्वाकलन अहम

टीम एडिटोरियल

टीम ने पूर्व के दो अध्ययनों पर विचार किया, जिसमें संख्यात्मक मौसम भविष्यवाणी (एनडब्ल्यूपी) मॉडल में सुधार के केवल एक पहलू को संबोधित किया गया था- उस सटीकता को बढ़ाना जिसके साथ मॉडल वायुमंडलीय भौतिकी का प्रतिनिधित्व करता है। भारतीय ग्रीष्मकालीन मानसून हर साल आश्चर्यजनक नियमितता के साथ घटित होने वाली सबसे पुरानी वैश्विक मानसून घटनाओं में से एक है। भारतीय शोधकर्ताओं की एक टीम ने मानसून संबंधी पूर्वानुमान को और सटीक बनाने के उद्देश्य से वर्ष 2018-2020 की अवधि के दौरान घटित हुई बारह मौसमी घटनाओं के अनुकरण से जुड़ा अध्ययन किया है। पिछले कुछ वर्षों में भारी वर्षा की घटनाओं में वृद्धि हुई है। भारी वर्षा की घटनाओं की औसत आवृत्ति और मौसमी वर्षा के प्रतिशत में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इसलिए, मानसून के दौरान भारी वर्षा की घटनाओं का सटीक अनुकरण करना महत्वपूर्ण है, शोधकर्ता बताते हैं। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास (आईआईटीएम), चेन्नई, राष्ट्रीय मध्यम अवधि मौसम पूवार्नुमान केंद्र (एनसीएमआरडब्ल्यूएफ), नोएडा और भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी) बंगलुरु से जुड़ी टीम ने हाइब्रिड डेटा एसिमिलेशन के लिए एक पैरामीटर-कैलिब्रेटेड मौसम अनुसंधान और पूर्वानुमान मॉडल पर काम किया है। शोधकर्ताओं ने इस प्रक्रिया में दो डेटा एसेमिलेशन एल्गोरिदम और मौसम अनुसंधान और पूर्वानुमान मॉडल डेटा समावेशन सिस्टम का उपयोग किया। टीम ने पूर्व के दो अध्ययनों पर विचार किया, जिसमें संख्यात्मक मौसम भविष्यवाणी (एनडब्ल्यूपी) मॉडल में सुधार के केवल एक पहलू को संबोधित किया गया था- उस सटीकता को बढ़ाना जिसके साथ मॉडल वायुमंडलीय भौतिकी का प्रतिनिधित्व करता है। इन अध्ययनों में मॉडल पूर्वानुमान में सुधार से जुड़े दूसरे पहलू पर विचार नहीं किया जो मॉडल को प्रदान की गई प्रारंभिक स्थितियों की सटीकता में वृद्धि से संबंधित है। यह अध्ययन पूर्वानुमान में सुधार के लिए पैरामीटर-कैलिब्रेटेड मॉडल पर हाइब्रिड एसिमिलेशन को लागू करके उपरोक्त दोनों पहलुओं को संबोधित करता है। अध्ययन के क्रम में छह प्रयोग (12 घटनाओं में से प्रत्येक के लिए) किए गए। कुल मिलाकर, कैलिब्रेटेड मापदंडों के साथ डेटा संयोजन ने, डिफॉल्ट पैरामीटर्स की तुलना में, विभिन्न चर (वेरिएबल्स) के सन्दर्भ में एक महत्वपूर्ण सुधार प्रदर्शित कियाः वर्षा (18.04%), सतही हवा का तापमान (7.91%), सतही हवा का दबाव (5.90%), और 10 मीटर की तुलना में हवा की गति (27.65%), शोधकर्ता स्पष्ट करते हैं। मापदंडों को कैलिब्रेट करने के अलावा, किसी पूर्वानुमान मॉडल की सटीकता प्रारंभिक स्थितियों की सटीकता पर भी निर्भर करती है। प्रारंभिक स्थितियों के सटीक आंकलन में सुधार के लिए उपग्रहों, रेडिओसॉन्डस , विमान द्वारा मापन जैसे अनेक स्त्रोतों से अवलोकन संबंधी डेटा की मदद से डेटा समावेशन का उपयोग किया जाता है। मौसम का सटीक आंकलन और पूर्वानुमान पर्यावरणीय और आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक महत्व का है। यही कारण है कि दुनिया भर के शोधकर्ताओं द्वारा इसका अध्ययन किया जाता है। भारत में हर साल मानसून के दौरान भारी वर्षा की घटनाओं के कारण होने वाली बाढ़ और भूस्खलन जैसी आपदाओं में जान-माल की भारी हानि होती है। पिछले कुछ वर्षों में, भारत के पूर्वी और पश्चिमी समुद्र तटों को विनाशकारी चक्रवातों का सामना करना पड़ा है। अध्ययन के महत्व को रेखांकित करते हुए आईआईएससी के प्रोफेसर जे. श्रीनिवासन टिप्पणी करते हैं, चक्रवात के तटों से टकराने के बाद भारी मात्रा में बरसात होती है। इस अध्ययन को विस्तारित कर इसमें चक्रवात जन्य मौसमी घटनाओं की दृष्टि से भी विचार करने की आवश्यकता है। शोध टीम में संदीप चिंता, वी.एस. प्रसाद, और सी. बालाजी शामिल हैं। यह अध्ययन करंट साइंस में प्रकाशित हुआ है। इसे भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस) के राष्ट्रीय मानसून मिशन द्वारा समर्थित किया गया था। ■

भारतीय आर्थिक दर्शन पर आधारित होना चाहिए वस्तुओं की कीमतों का निर्धारण

प्रहलाद सबनानी

वर्तमान में पूरे विश्व में सामान्यतः वस्तुओं की कीमतों का निर्धारण पश्चिमी आर्थिक दर्शन पर आधारित वस्तुओं की मांग एवं आपूर्ति के सिद्धांत के अनुरूप होता है। यदि किसी वस्तु की बाजार में मांग अधिक है और आपूर्ति कम है तो उस वस्तु की उत्पादन लागत कितनी भी कम क्यों न हो, परंतु उस वस्तु की बाजार में कीमत बहुत अधिक हो जाती है। वस्तु सामान्य नागरिकों के लिए कितनी भी आवश्यक क्यों न हो और चाहे उस वस्तु की आपूर्ति कई प्राकृतिक कारणों के चलते विपरीत रूप से प्रभावित क्यों न हुई हो, परंतु बाजार में तो उस वस्तु की कीमतें कुछ ही समय में आकाश को छूने लगती हैं। जैसे अभी हाल ही में भारत में देश के कुछ भागों में मौसम में आए परिवर्तन के चलते टमाटर की फसल खराब हो गई है, इसके कारण बाजार में टमाटर की आपूर्ति पर विपरीत प्रभाव दिखाई पड़ा है, देखते ही देखते खुदरा बाजार में 5 रुपए से 10 रुपए प्रति किलोग्राम बिकने वाला टमाटर 120 रुपए प्रति किलोग्राम से भी अधिक कीमत पर बिकने लगा है।

पश्चिमी आर्थिक दर्शन दरअसल केवल मैं के भाव पर आधारित है अर्थात केवल मेरा लाभ होना चाहिए। समाज के अन्य वर्गों का कितना भी नुकसान क्यों न हो परंतु मेरे लाभ में कमी नहीं आना चाहिए। इसी भावना के चलते बड़े देश, छोटे देशों का शोषण करते नजर आते है। बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां छोटी कम्पनियों को खा जाती हैं। उत्पादक, उपभोक्ताओं का शोषण करता हुआ दिखाई देता है एवं बड़े व्यापारी छोटे व्यापारियों का शोषण करते रहते है। कुल मिलाकर बड़ी मछली, छोटी मछली को निगलती हुई दिखाई दे रही है। पश्चिमी आर्थिक दर्शन में वस्तुओं की कीमतों में कमी होना मतलब आर्थिक क्षेत्र में मंदी का आना माना जाता है। वर्ष 1920 में प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात चूंकि कई देश इस विश्व युद्ध में बर्बाद हो चुके थे अतः उत्पादों को खरीदने के लिए कई देशों के नागरिकों के पास पर्याप्त पैसे ही नहीं बचे थे, जिसके कारण उत्पादों की मांग बाजार में बहुत कम हो गई और वस्तुओं के दाम एकदम बहुत अधिक गिर गए थे। उस समय पर इस स्थिति को गम्भीर मंदी की संज्ञा दी गई थी। पश्चिमी आर्थिक दर्शन में उत्पादकों की लाभप्रदता किस प्रकार अधिक से अधिक होती रहे, इस विषय पर ही विचार किया जाता है। देश के आम नागरिकों को

कितनी आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है, इस बात की ओर सरकारों का ध्यान नहीं जाता है। क्योंकि केवल आर्थिक विकास होना चाहिए, इस धारणा के अनुसार ही वहां की सरकारें चलती हैं। अभी हाल ही में विकसित देशों द्वारा मुद्रास्फीति की समस्या का हल निकालने के लिए इन देशों के केंद्रीय बैंकों द्वारा ब्याज दरों में लगातार वृद्धि की जा रही है ताकि नागरिकों के हाथों में धन की उपलब्धता कम हो और वे बाजार में वस्तुओं को कम मात्रा में खरीद सकें, इससे वस्तुओं की मांग में कमी होगी और इस प्रकार मुद्रा स्फीति पर नियंत्रण स्थापित किया जा सकेगा। इस निर्णय का इन देशों के नागरिकों एवं वहां की अर्थव्यवस्थाओं पर विपरीत प्रभाव पड़ता दिखाई दे रहा है। उत्पादों की मांग को कृत्रिम तरीके से कम करने के कारण कम्पनियों ने वस्तुओं के उत्पादन को कम कर दिया है एवं इसके चलते कई कम्पनियों ने कर्मचारियों एवं मजदूरों की छँटनी प्रारम्भ कर दी है। अतः इन देशों में बेरोजगारी फैल रही है। पश्चिमी आर्थिक दर्शन की भावना के अनुरूप विकसित देशों में कई बार ऐसे अमानवीय निर्णय भी लिए जाते हैं। उक्त आर्थिक नीतियों के ठीक विपरीत भारतीय आर्थिक दर्शन में देश के समस्त नागरिकों को किस प्रकार सुख पहुंचाया जाये, इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है। प्राचीन भारत में उत्पादों के क्रय विक्रय के सम्बंध में उत्पादों की कीमतों के बारे में स्पष्ट नीति निर्धारित रहती थी और इसका वर्णन शास्त्रों में भी मिलता है। किसी वस्तु के उत्पादन में जो कुछ भी व्यय हुआ है, वह राशि ही उस वस्तु की वास्तविक लागत मानी जाती थी, परंतु वस्तु की उपलब्धता एवं उपयोगिता के आधार पर कभी वास्तविक मूल्य से कुछ अधिक अथवा कुछ कम राशि में वह उत्पाद बेचा एवं खरीदा जाता था। भारतीय शास्त्रों में यह भी वर्णन मिलता है कि यदि किसी वर्ष विशेष में किसी कृषि उत्पाद का उत्पादन, प्राकृतिक आपदाओं के चलते, कम होता है तो राजा द्वारा अपने अन्न के भंडार को आम नागरिकों के लिए खोल दिया जाता था। प्राचीन भारत के शास्त्रों में तो मुद्रा स्फीति का वर्णन ही नहीं मिलता है। बल्कि, भारत में वस्तुओं, विशेष रूप से खाद्य पदार्थों, की पर्याप्त उपलब्धता पर विशेष ध्यान दिया जाता था। कृषि उत्पादों की पैदावार इतनी अधिक होती थी कि इन उत्पादों के बाजार भाव सामान्यतः कम ही रहते थे, बढ़ते नहीं थे। हाल ही में प्रकृति जन्य कारणों के चलते यदि टमाटर के उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ा है तो बाजार में टमाटर की कीमतों में अत्यधिक (10 गुना) वृद्धि, पश्चिम देशों के आर्थिक चिंतन पर तो खरी उतरती हैं परंतु भारतीय आर्थिक चिंतन के बिलकुल विपरीत है। यदि उत्पादकों एवं व्यापारियों द्वारा इस तरह की असामान्य परिस्थितियों के बीच आम नागरिकों के लिए टमाटर की उपलब्धता को प्रभावित किया जा रहा है, तो इसे उचित नहीं ठहराया जा सकता है। इन विपरीत परिस्थितियों के बीच आम नागरिकों को ही आगे आकर इस समस्या का हल निकलना होगा। यदि भारतीय उत्पादक एवं व्यापारी भारतीय आर्थिक दर्शन पर आधारित उत्पाद की लागत में कुछ लाभ जोड़कर ही बाजार मूल्य तय करने के स्थान पर पश्चिमी आर्थिक दर्शन के अनुसार वस्तुओं की कीमतों का निर्धारण मांग एवं आपूर्ति को ध्यान में रखकर करते हैं तो इस तरह की समस्या का जवाब भी भारतीय नागरिकों द्वारा इसी भाषा में दिया जाना चाहिए। अर्थात, नागरिकों द्वारा सामूहिक रूप से कुछ समय के लिए टमाटर के उपयोग को कम कर दिया जाना चाहिए उससे बाजार में टमाटर की मांग कम हो जाएगी और मांग कम होने से टमाटर की बाजार कीमत भी कम हो जाएगी। और फिर, टमाटर का अधिक समय तक भंडारण भी नहीं किया जा सकता है, यह एक शीघ्र खराब होने वाला पदार्थ है, बाजार में टमाटर की मांग कम होने से उत्पादक एवं व्यापारी मजबूर होकर में टमाटर की आपूर्ति बाजार में बढ़ा देंगे और इस प्रकार टमाटर की कीमतें नीचें आने लगेंगी। अब समय आ गया है कि वस्तुओं की कीमतों का निर्धारण पश्चिमी आर्थिक दर्शन को छोड़कर, भारतीय आर्थिक दर्शन के अनुरूप किया जाना चाहिए जिससे पूरे विश्व के नागरिकों को मुद्रा स्फीति से राहत प्राप्त हो सके। ■

लिंगानुपात असंतुलन की बढ़ती खाई को मिटाने

केंद्र और राज्यों को मिलकर काम करने की जरूरत

वैश्विक स्तरपर संयुक्त राष्ट्र ने अप्रैल 2023 की अपनी एक रिपोर्ट में कहा कि अब भारत चीन को पीछे छोड़ते हुए 142.86 करोड़ की आबादी वाला देश बनकर दुनियां का सबसे अधिक आबादी वाला देश बन गया है वहीं अब भारत में विशेष रूप से गरीबी में उल्लेखनीय कमी दिखी है 15 वर्षों (2005-06 से 2019-2021) की अवधि में 41.5 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर निकले हैं यह भारत या अन्य कोई नहीं बल्कि स्वयं संयुक्त राष्ट्र ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा है। अब हमें अपने स्तरपर चिंतन करने की जरूरत है कि हमें लिंगानुपात में समानता करने की ओर कदम उठाने हैं।

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी

हमें अब अपनी जनता को रूढ़िवादी पुरानी सोच से निकालकर बेटियों के प्रति जन जागरण अभियान में तेजी लाने की जरूरत है, जिसकी चिंता उत्तराखंड के देहरादून के ओल्ड राजपुर रोड पर आयोजित दो दिवसीय चिंतन शिविर में भी दिखी जहां माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने लिंगानुपात में समानता लाने के लिए पीसी-पीएनडीटी संशोधित अधिनियम 2002 में संशोधन करने की बात कही जिसके लिए सभी राज्यों से सुझाव मंगाए जाएंगे, क्योंकि लिंगानुपात की बढ़ती खाई को रोकने जनभागीदारी के साथ जन्म पूर्व परीक्षण तकनीकी (दुरुपयोग के नियमन और बचाव) संशोधित अधिनियम अधिनियम 2002 (पीसी-पीएनडीटी) जैसे 20 साल पुराने कानूनों को बदलने या संशोधित करने की जरूरत है। इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, लिंगानुपात असंतुलन की बढ़ती खाई को मिटाने केंद्र और राज्यों को मिलकर काम करने की जरूरत है।

साथियों बात अगर हम 15 जुलाई 2023 को समाप्त हुए दो दिवसीय चिंतन शिविर में लिंगानुपात सहित सात मुद्दों पर चर्चा की करें तो, शिविर के दूसरे दिन शनिवार को अलग-अलग सत्रों में सात मुद्दों पर मंथन किया गया। इसमें टीबीमुक्त भारत अभियान, आयुष्मानभव, लिंगानुपात गैर-संचारी रोगों की रोकथाम, आयुष्मान भारत हेल्थ अकाउंट, अंगदान समेत कई मुद्दों पर मंथन किया गया। चिंतन बैठक के समापन के बाद प्रेसवार्ता में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि अमृतकाल के आने वाले 25 साला में देश को स्वास्थ्य क्षेत्र में उत्कृष्ट राष्ट्र बनाने के लिए सभी राज्य भी विजन डॉक्यूमेंट तैयार करेंगे। इसके लिए राष्ट्रीय चिंतन शिविर की तर्ज पर सभी राज्य भी अपने यहां दो दिन का चिंतन शिविर आयोजित करेंगे। लिंगानुपात में समानता लाने के लिए केंद्र व राज्य सरकार मिशन मोड में काम करेगी। इसके लिए पीसी-पीएनडीटी एक्ट में संशोधन किया जाएगा। सभी राज्यों से संशोधन के लिए सुझाव देंगे। प्रसव से पूर्व भ्रूण जांच रोकने के लिए एक्ट में सख्त प्रावधान किया जाएगा। साथियों बात अगर हम भारत में कन्या, भ्रूण से जुड़े कानूनों की करें तो, कन्या भ्रूण हत्या का मतलब है माँ की कोख से मादा भ्रूण को निकल फेंकना। जन्म पूर्व परीक्षण तकनीक (दुरुपयोग के नियमन और बचाव) अधिनियम 2002 की धारा 4 (1) (बीसी) के तहत के अनुसार भ्रूण को परिभाषित किया गया है, निषेचन या निर्माण के सत्तानवे दिन से शुरू होकर अपने जन्म के विकास की अवधि के दौरान एक मानवीय जीव। भारतीय दंड संहिता, 1860 के तहत प्रावधान, भारतीय दंड संहिता की धारा 312 कहती है, जो कोई भी जानबूझकर किसी महिला का गर्भपात करता है जब तक कि कोई इसे सदिच्छा से नहीं करता है और गर्भावस्था का जारी रहना महिला के जीवन के लिए खतरनाक न हो, उसे सात साल की कैद की सजा दी जाएगी इसके अतिरिक्त महिला की सहमति के बिना गर्भपात (धारा 313) और गर्भपात की कोशिश के कारण महिला की मृत्यु (धारा 314) इसे एक दंडनीय अपराध बनाता है। धारा 315 के अनुसार मां के जीवन की रक्षा के प्रयास को छोड़कर अगर कोई बच्चे के जन्म से पहले ऐसा काम करता है जिससे जीवित बच्चे के जन्म को रोका जा सके या पैदा होने का बाद उसकी मृत्यु हो जाए, उसे दस साल की कैद होगी धारा 312 से 318 गर्भपात के अपराध पर सरलता से विचार करती है जिसमें गर्भपात करना, बच्चे के जन्म को रोकना, अजन्मे बच्चे की हत्या करना (धारा 316), नवजात शिशु को त्याग देना (धारा 317), बच्चे के मृत शरीर को छुपाना या इसे चुपचाप नष्ट करना (धारा 318)। हालाँकि भ्रूण हत्या या शिशु हत्या शब्दों का विशेष तौर पर इस्तेमाल नहीं किया गया है, फिर भी ये धाराएं दोनों अपराधों को समाहित करती हैं। इन धाराओं में जेंडर के तटस्थ शब्द का प्रयोग किया गया है ताकि किसी भी लिंग के भ्रूण के सन्दर्भ में लागू किया जा सके। हालाँकि भारत में बाल भ्रूण हत्या या शिशु हत्या के बारे में कम ही सुना गया है। भारतीय समाज में जहाँ बेटे की चाह संरचनात्मक और सांस्कृतिक रूप से जुड़ी हुई है, वहीं महिलाओं को बेटे के जन्म के लिए अत्यधिक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक दबाव झेलना पड़ता है। इन धाराओं ने कुछ और जरूरी मुद्दों पर विचार नहीं किया है जिनमें महिलाएं अत्यधिक सामाजिक दबावों की वजह से अनेक बार गर्भ धारण करती हैं और लगातार गर्भपातों को झेलती हैं। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 21 जीवन के अधिकार की घोषणा करता है। अनुच्छेद 51 ए (ई) महिलाओं के प्रति अपमानजनक प्रथाओं के त्याग की व्यवस्था भी करता है। उपरोक्त दोनों घोषणाओं के आलोक में भारतीय संसद ने लिंग तय करने वाली तकनीक के दुरुपयोग और इस्तेमाल से कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए जन्म-पूर्व परीक्षण तकनीक (दुरुपयोग का नियमन और बचाव) अधिनियम, 1994 पारित किया।

इस अधिनियम के प्रमुख लक्ष्य हैं- गर्भाधान पूर्व लिंग चयन तकनीक को प्रतिबंधित करना लिंग-चयन संबंधी गर्भपात के लिए जन्म-पूर्व परीक्षण तकनीकों के दुरुपयोग को रोकनाजिस उद्देश्य से जन्म-पूर्व परीक्षण तकनीकों को विकसित किया है, उसी दिशा में उनके समुचित वैज्ञानिक उपयोग को नियमित करना सभी स्तरों पर अधिनियम के प्रभावी क्रियान्वयन को सुनिश्चित करना इस अधिनियम को बड़े जोर-शोर से पारित किया गया लेकिन राज्य इसे समुचित तरीके से लागू करने के लिए माकूल व्यवस्था करने में नाकामयाब रहा। क्लीनिकों में अधूरे अभिलेखों अथवा अभिलेखों के देख-रेख के अभाव में यह पता करना मुश्किल हो जाता है कि कौन-से अल्ट्रा-साउंड का परीक्षण किया गया था। यहाँ तक कि पुलिस महकमा भी सामाजिक स्वीकृति के अभाव में इस अधिनियम के तहत कोई मामला दर्ज करने में असफल रहा है। डॉक्टरों द्वारा कानून का धड़ल्ले से उल्लंघन जारी है जो अपने फायदे के लिए लोगों का शोषण करते हैं। गभार्धान के चरण के दौरान एक्स और वाई गुणसूत्रों को अलग करना, पीसीजी इत्यादि नयी तकनीकों के दुरुपयोगों ने इस अधिनियम को नयी स्थितियों में बेअसर बना दिया है।इस अधिनियम के प्रभावी क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए और मौजूदा कानून में खामियों पर जीत हासिल करने के लिए स्वास्थ्य एवम परिवार कल्याण मंत्रालय ने संशोधनों की एक श्रृखंला प्रस्तावित की थी जिसे संसद में मंजूर कर लिया गया था। इससे पीएनडीटी अधिनियम 2002 दिसम्बर में अस्तित्व में आया।बाद में इस अधिनियम को गभार्धान पूर्व प्रसव पूर्व परीक्षण तकनीक अधिनियम कहा गया। इसके बाद स्वास्थ्य एवम परिवार कल्याण मंत्रालय ने प्रसव-पूर्व परीक्षण अधिनियम 2003 ने 14 फरवरी को 1996 के नियम को विस्थापित कर दिया। साथियों बात अगर हम पीसी पीएनडीटी अधिनियम के प्रतिबंधों की करें तो, पीसी एंड पीएनडीटी एक्ट के तहत प्रतिबंधित कृत्य (1) लिंग चयन या लिंग का पूर्व-निर्धारण की सेवा देने वाले विज्ञापनों का प्रकाशन (2) गभार्धान-पूर्व या जन्म-पूर्व परीक्षण तकनीकों वाले क्लीनिकों का पंजीकृत नहीं होना या क्लीनिक या संस्थान के भीतर सबको दिखाई देने वाले पंजीकरण प्रमाणपत्र को प्रदर्शित नहीं करना (3) अजन्मे बच्चे के लिंग का निर्धारण करना (4) गर्भवती को लिंग निर्धारण परीक्षण के लिए मजबूर करना (5) लिंगचयन की प्रक्रिया में सहयोग या सुविधा प्रदान करना (6) चिकित्सक द्वारा गर्भवती या अन्य व्यक्ति को अजन्मे बच्चे के लिंग के बारे में किसी भी तरह सूचित करना (7) पीसी एंड पीएनडीटी एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत क्लीनिकों द्वार अभिलेखों को भली-भांति सहेज कर नहीं रखना। पीसी एंड पीएनडीटी एक्ट की प्रमुख विशेषताएं, इस अधिनियम ने सभी परीक्षण प्रयोगशालाओं के पंजीकरण को अनिवार्य बना दिया है और अल्ट्रासाउंड के उपकरणों के निर्माता को अपने उपकरणों को पंजीकृत प्रयोगशालाओं को बेचने के निर्देश दिए हैं। इसके अनुसार कोई भी निजी संगठन समेत व्यक्ति, अल्ट्रा साउंड मशीन, इमेजिंग मशीन, स्कैनर या भ्रूण के लिंग के निर्धारण में सक्षम कोई भी उपकरण निर्माता, आयातक, वितरक या आपूर्तिकर्ता के लिए इन्हें बेचना, वितरित करना, आपूर्ति करना, किराये पर देना या भुगतान या अन्य आधार पर इस अधिनियम के तहत अपंजीकृत किसी आनुवांशिक परामर्श केंद्र, जेनेटिक प्रयोगशाला, जेनेटिक क्लिनिक, अल्ट्रा साउंड क्लीनिक, इमेजिंग स्क्रीन या अन्य किसी निकाय या व्यक्ति को ऐसे उपकरणों या मशीनों के प्रयोग की अनुमति नहीं दे सकता है। ■

यूपी की ये 10 सीटें जो बीजेपी को दे रही टेंशन

लोकसभा चुनाव 2024: असुरक्षित सीटों को जीतने का जोर

बीजेपी ने अबकी से उन सीटों पर भी इस बार कमल खिलाने का लक्ष्य निर्धारित किया है, जिन सीटों (मैनपुरी-रायबरेली) पर 2014-2019 के लोकसभा चुनावों में जीत दर्ज नहीं कर पाई है। बीजेपी इन सभी सीटों को जीतने का रिकार्ड बनाने की तैयारी में है, इसीलिए बीजेपी प्रदेश की एक-एक सीट का बारीकी से निरीक्षण करके ही प्रत्याशियों को उतारना चाह रही है।

अजय कुमार

उत्तर प्रदेश में लोकसभा चुनाव की तैयारी में बीजेपी सबसे आगे चल रही है। वह सब कुछ ठोक-बजा कर प्रत्याशियों का फैसला करने के लिए जमीन से लेकर बंद कमरों तक में रणनीति बना रही है। टिकट बांटते समय तमाम बातों का ध्यान रखा जायेगा, लेकिन अबकी से प्रत्याशियों का चयन करते समय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की भी अहम भूमिका रहेगी, जो 2019 के लोकसभा चुनाव में नहीं दिखाई दी थी। इसकी वजह यह है कि बीजेपी ने उत्तर प्रदेश के 2017 के विधान सभा चुनाव मोदी का चेहरा आगे करके जीता था और चुनाव नतीजे आने के बाद योगी आदित्यनाथ को मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठाया गया था, इस लिए 2019 के लोकसभा चुनाव के समय टिकट बंटवारें में न उनसे राय ली गई थी और न ही उन्होंने इसमें दखलंदाजी की थी, लेकिन 2022 के विधान सभा चुनाव बीजेपी ने

योगी को आगे करके लड़ा था और उम्मीद से कहीं अधिक अच्छा प्रर्दशन पार्टी का रहा था,जिसके बाद पार्टी के भीतर योगी का कद काफी बढ़ गया था, इसी के चलते अबकी से टिकट बंटवारें के समय योगी को आलाकमान अनदेखा नहीं कर पाएगा। खासकर पूर्वांचल में योगी की पसंद नापसंद का ज्यादा ख्याल रखा जा सकता है। यानी उनका सिक्का भी चलेगा। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि आज की तारीख में पार्टी के भीतर योगी का कद प्रधानमंत्री मोदी के बाद नंबर दो का समझा जाने लगा है। वह न केवल दमदार तरीके से सरकार चला रहे हैं, बल्कि कई राज्यों के चुनाव प्रचार में वह पार्टी के लिए तुरूप का इक्का भी साबित हो चुके हैं।

भारतीय जनता पार्टी में उत्तर प्रदेश में लोकसभा प्रत्याशियों के लिए चर्चा शुरू कर दी है। यह चर्चा सार्वजनिक रूप से तो नहीं हो रही है, लेकिन अंदर खाने से जो खबर छन कर आ रही है, उससे ऐसा लगता है कि बीजेपी आलाकमान ने यह तय कर लिया है कि अबकी से किस सीटिंग एमपी का टिकट नहीं देना है। कुछ प्रत्याशी तो उम्रदराज होने के कारण चुनावी रेस से बाहर होते दिख रहें हैं, वहीं कुछ आलाकमान की कसौटी पर खरे नहीं उतर रहे हैं। यह वह सांसद हैं जहां से 2022 के विधान सभा चुनाव में बीजेपी प्रत्याशी को हार का सामना करना पड़ा था या फिर पार्टी पर आई किसी मुसीबत की घड़ी के समय जनता के बीच इनका प्रभाव काफी कम या नहीं के बराबर देखने को मिला था। इसे उदाहरण से समझा जाए तो जब किसानों ने नये कृषि कानून के खिलाफ दिल्ली में आंदोलन किया तो भारतीय किसान यूनियन के नेता राकेश चौधरी टिकैत के आहवान पर पश्चिमी उत्तर प्रदेश से बड़ी संख्या में किसान आंदोलन में हिस्सा लेने के लिए पहुंचे थे, जबकि आलाकमान चाहता था कि पश्चिमी यूपी के बीजेपी नेता और सांसद-विधायक अपने प्रभाव का इस्तेमाल करते हुए यहां के आंदोलनकारी किसानों को दिल्ली कूच नहीं करने के लिए मनाएं। इसी प्रकार लखीमपुर-खीरी में भी जब केन्द्रीय मंत्री अजय मिश्र टेनी के बेटे ने वहां कृषि कानून के खिलाफ आंदोलन कर रहे किसानों के ऊपर अपनी गाड़ी चढ़ा दी थी, तब भी वहां के स्थानीय सांसद और केन्द्रीय मंत्री टेनी का व्यवहार बहुत गैर-जिम्मेदाराना और बयानबाजी काफी घटिया स्तर की रही थी। जिससे मोदी सरकार की काफी फजीहत हुई थी, इसीलिए बीजेपी आलाकमान को रालोद मुखिया जयंत चौधरी रास आने लगे हैं। चौधरी, बीजेपी के साथ कंधे से कंधा मिलाते हैं तो पश्चिमी यूपी की करीब 20 सीटों का सियासी समीकरण बीजेपी के पक्ष में हो सकता है, इसके अलावा पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में भी इसका असर साफ दिखाई देगा।

इस इलाके की 120 विधानसभा सीटों और 18 लोकसभा सीटों पर जाट वोट बैंक असर रखता है। इन्हीं में 12 लोकसभा सीट पर जयंत ताकत लगा रहे हैं। मेरठ, मथुरा, अलीगढ़, बुलंदशहर, मुजफ्फरनगर, आगरा, बिजनौर, मुरादाबाद, सहारनपुर, बरेली और बदायूं जैसे जिलों में जाट का काफी प्रभाव है।

2014 और उसके हुए चुनाव में भले ही रालोद कुछ खास कमाल ना दिखा पाई हो लेकिन किसान आंदोलन के बाद से जयंत चैधरी के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय लोकदल पश्चिमी उत्तर प्रदेश में काफी ताकत के साथ उभर कर सामने आयी है। आरएलडी अपनी ताकत का एहसास बीते 2018 कैराना लोकसभा उपचुनाव और 2023 खतौली विधानसभा उपचुनाव में भी दिखा चुकी है। सबसे बड़ी बात यह है कि जयंत चौधरी के बीजेपी के साथ आने से बीजेपी के सामने जाट वोट में बिखराव का खतरा भी कम हो जायेगा।

दरअसल, पश्चिमी यूपी की जाट बेल्ट में एक बड़ा हिस्सा तो जरूर बीजेपी के साथ है, लेकिन अभी तक पार्टी पश्चिमी यूपी पर पूरी तरह से कंट्रोल नहीं कर पाई है। बीजेपी के स्थानीय नेता उतनी चमक नहीं बिखेर पा रहे हैं, जितनी उनसे अपेक्षा थी। यह सच है कि पश्चिमी यूपी के गुर्जर, सैनी, कश्यप, ठाकुर, शर्मा, त्यागी जाति के वोट का ज्यादातर हिस्सा भी बीजेपी के साथ है। पूरे यूपी में भले ही जाट समुदाय 4 से 6 फीसदी के बीच हो, लेकिन पश्चिमी यूपी के कुल वोट में करीब 17% हिस्सेदारी जाट समुदाय की है। इस इलाके की 120 विधानसभा सीटों और 18 लोकसभा सीटों पर जाट वोट बैंक असर रखता है। इन्हीं में 12 लोकसभा सीट पर जयंत ताकत लगा रहे हैं। मेरठ, मथुरा, अलीगढ़, बुलंदशहर, मुजफ्फरनगर, आगरा, बिजनौर, मुरादाबाद, सहारनपुर, बरेली और बदायूं जैसे जिलों में जाट का काफी प्रभाव है।

बात इससे आगे की कि जाए तो लगता है अबकी से बीजेपी पिछड़ों और दलितों को भी टिकट देने में ज्यादा दरियादिली दिखाएगी, जिस तरह से समाजवादी पार्टी पिछड़ों और दलितों को लेकर काफी एग्रेसिव दिखाई दे रही है, उसकी काट के लिए भी ऐसा करना जरूरी है। इसके अलावा मुसलमानों को रिझाने के लिए पसमांदा समाज के एक दो प्रत्याशियों को भी टिकट मिल सकता है। बीजेपी पसमांदा समाज के प्रत्याशियों को अपने सहयोगी दलों के चुनाव चिन्ह पर मैदान में उतार सकती है। यूपी की 80 लोकसभा सीटों के लिए अभी बीजेपी को अपने गठबंधन सहयोगियों से भी बात करना है। यदि राष्ट्रीय लोकदल के चौधरी जयंत चौधरी और ओम प्रकाश राजभर की पार्टी से बीजेपी का गठबंधन हो जाता है तो बीजेपी को अपना दल एस, निषाद पार्टी के साथ-साथ इन दलों के नेताओं की दावेदारी पर भी गौर करना होगा। ऐसे में बीजेपी 65-70 सीटों पर ही चुनाव लड़ती नजर आए तो किसी को आश्चर्य नहीं होगा, इसके चलते भी बीजेपी के कुछ सांसदों को टिकट से हाथ धोना पड़ सकता है। जयंत चौधरी और ओम प्रकाश राजभर से चुनावी तालमेल होता है तो पश्चिमी यूपी और पूर्वांचल के गाजीपुर के आसपास के जिलों की कुछ सीटें ओम प्रकाश राजभर की पार्टी के हिस्से में जा सकती हैं। उधर, बीजेपी आलाकमान द्वारा मोदी सरकार के नौ वर्ष का कार्यकाल पूरा होने पर चलाए जा रहे महाजनसंपर्क अभियान और पार्टी की ओर से कराए जा रहे सर्वे में सांसदों की जमीनी हकीकत सामने आने लगी है। पार्टी की ओर से लोकसभा चुनाव के लिए सर्वे कराया जा रहा है। सर्वे में मौजूदा सांसदों की जनता में पकड़ के साथ छवि का आंकलन भी किया जा रहा है। साथ ही संभावित नए प्रत्याशियों की भी रिपोर्ट तैयार की जा रही है। पार्टी की ओर से चलाए जा रहे महाजनसंपर्क अभियान में भी पार्टी के सांसदों की जनता में पकड़ और क्षेत्र में सक्रियता सामने आ रही है। करीब एक दर्जन से अधिक लोकसभा क्षेत्रों में अभियान के तहत हुई रैलियों में दो-पांच हजार लोग भी नहीं जुटे हैं। लोकसभा चुनाव 2024 की तैयारियों में जुटी पार्टी किसी भी स्थिति में वैसे उम्मीदवार को चुनावी मैदान में नहीं उतारना चाहती है, जिन पर लोगों का अविश्वास बढ़ा है। या फिर जो पार्टी कार्यकर्ताओं की नजर में चढ़ गए हैं। ऐसे सांसदों की उम्मीदवारी पर खतरा मंडराने लगा है। बीजेपी ने अबकी से उन सीटों पर भी इस बार कमल खिलाने का लक्ष्य निर्धारित किया है, जिन सीटों (मैनपुरी-रायबरेली) पर 2014-2019 के लोकसभा चुनावों में जीत दर्ज नहीं कर पाई है। बीजेपी इन सभी सीटों को जीतने का रिकार्ड बनाने की तैयारी में है, इसीलिए बीजेपी प्रदेश की एक-एक सीट का बारीकी से निरीक्षण करके ही प्रत्याशियों को उतारना चाह रही है। पार्टी की ओर से लोकसभा चुनाव के लिए सर्वे करवाया जा रहा है। ■

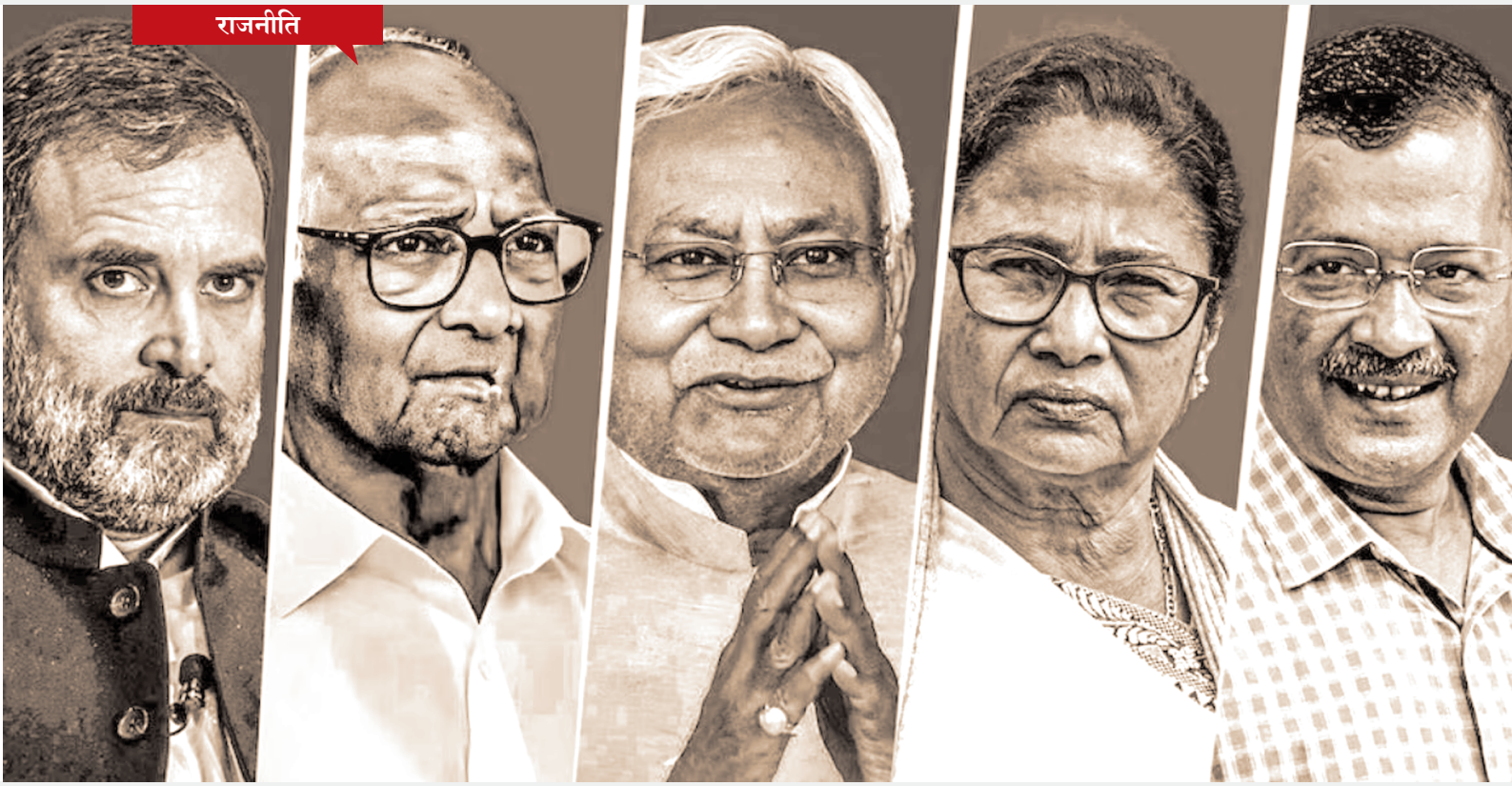

झटका सिर्फ एनसीपी को नहीं बल्कि

समूची विपक्षी एकता को लगा है

वर्ष 2024 के चुनाव से पूर्व भारतीय राजनीति के अनेक गुणा-भाग और जोड़-तोड़ भरे दृश्य उभरेंगे। महाराष्ट्र में ताजा राजनीतिक घटनाक्रम को देखते हुए तो ऐसा ही लगता है। वहां जो हुआ है उससे विपक्ष में खलबली है, घबराहट एवं बेचैनी स्पष्ट देखी जा सकती है, जो पटकथा महाराष्ट्र में लिखी गयी है, वही बिहार में भी लिखी जा सकती है। राजनीतिक दलों के भ्रष्टाचार को दबाने के लिये, सत्ताकांक्षा एवं आंतरिक असंतोष के चलते ऐसे समझौते, दलबदल एवं उल्टी गिनतियां अब आम बात हो गयी हैं।

ललित गर्ग

भाजपा एक सक्षम एवं ताकतवर पार्टी है, नरेन्द्र मोदी एवं अमित शाह करिश्माई राजनेता हैं, अनेकानेक विशेषताओं वाले इन दोनों नेताओं की एक बड़ी विशेषता यह है कि ये अपने साथ दगा करने, धोखा देने या विश्वासघात करने वालों को कभी माफ नहीं करते। कल तक सत्ता पक्ष को कोसने वाले अजित पवार अपनी राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) से बगावत कर डिप्टी सीएम बन गए हैं। राजनीति के चाणक्य माने जाने वाले शरद पवार की पार्टी का यह हश्र आश्चर्यकारी ही नहीं, बल्कि एक बड़ा विरोधाभास एवं विपक्षी एकता का संकट भी है। एक तरफ इस तरह के घटनाक्रम को राजनीतिक दलों में आंतरिक असंतोष व गुटबाजी से जोड़ा जा सकता है तो दूसरी तरफ सत्ता के उस स्वाद की आकांक्षा से भी, जिसे हर कोई पाना चाहता है। राजनीतिक दलों में बगावत का ऐसा दौर जब भी होता है इस बात को जोर-शोर से प्रचारित किया जाता है कि उनके दल में लोकतंत्र नहीं रहा इसलिए वे अपने विरोधियों से हाथ मिला रहे हैं। बड़ा प्रश्न है कि इस तरह राजनीतिक दलों से लोकतंत्र गायब होता रहा है, तो ऐसे अलोकतांत्रिक दल कैसे देश के लोकतंत्र को हांक सकेंगे? आजकल राजनीति में उल्टी गिनती एक सूचक बन गई है, किसी महत्वपूर्ण राजनीतिक उठापटक या घटनाक्रम की शुरूआत के लिए। विभिन्न राजनीतिक दलों में ऐसी कई उल्टी गिनतियां चल रही हैं। कई कद्दावर नेताओं के सार्वजनिक/भावी जीवन की उल्टी गिनतियां चल रही हैं। करोड़ों-अरबों के घोटाले और रोज कोई न कोई उसमें और पलीता लगाने वालों के नाम जुड़ रहे हैं। इन पर ईडी, सीबीआई, इनकम टैक्स की कार्रवाई की गिनती शुरू हो रखी है। किसी की भी हालत ठीक नहीं है। ये उल्टी गिनतियां परिचायक हैं कोई नया पर्दा उठने की, किसी नए विस्फोट की। भ्रष्टाचार के आरोपों से घिरे नेताओं की कई उल्टी गिनतियां हुईं, फलस्वरूप कई सरकारें गिरीं/बनीं/पर टिकी नहीं। अबकी बार कितनी दूर जाएगी-यह गिनती, पूरी होने पर ही मालूम होगा। पर कांप अभी से कई नेता रहे हैं। इसीलिये ऐसे बेमेल गठबंधन एवं उठापटक देखने को मिल रही है, आम चुनाव आने तक ऐसे तरह-तरह के परिदृश्य उभरेंगे। ऐसे में देखना होगा कि जांच एजेंसियां इन नेताओं के कथित भ्रष्टाचार के मामलों में आगे क्या करती हैं। बहरहाल, दलबदल भले ही महाराष्ट्र में हुआ हो, इसकी सबसे बड़ी चोट राष्ट्रीय स्तर पर विपक्षी एकता पर पड़ी है। शरद पवार विपक्ष के सबसे कद्दावर नेताओं में हैं और विपक्षी एकता के प्रयासों में अहम भूमिका निभा रहे हैं। ऐसे में उनके पैरों के नीचे से उनकी लगभग पूरी पार्टी को खींच कर भाजपा ने यह संदेश दिया है कि विपक्षी नेता जो भी दावे करें, उनकी पार्टी ही उनके काबू में नहीं है। यह बहुत बड़ा संदेश है, जिसका जवाब तलाशना भी विपक्षी दलों के लिए जरूरी है। भाजपा एक सक्षम एवं ताकतवर पार्टी है, नरेन्द्र मोदी एवं अमित शाह करिश्माई राजनेता हैं, अनेकानेक विशेषताओं वाले इन दोनों नेताओं की एक बड़ी विशेषता यह है कि ये अपने साथ दगा करने, धोखा देने या विश्वासघात करने वालों को कभी माफ नहीं करते। मौका आने पर ये ऐसे लोगों को सबक जरूर सिखाते हैं, महाराष्ट्र में सियासी उठापटक ऐसा ही सबक है। चुनाव पूर्व गठबंधन को नकारते हुए 2019 में शिवसेना ने अपने सहयोगी दल भाजपा से संबंध तोड़ जिस तरह सरकार बनाई और उसके जवाब में बाद में भाजपा ने जो दांव खेला, वह किसी से छिपा नहीं नहीं है। विधानसभा चुनाव के दौरान तत्कालीन भाजपा अध्यक्ष रहे अमित शाह को चुनाव परिणाम बाद उद्धव ठाकरे ने धोखा दे दिया था। इसी कारण एकनाथ शिंदे शिवसेना से बगावत कर सीएम बनने में कामयाब हुए। दरअसल महाराष्ट्र में राकांपा के साथ जो कुछ भी हुआ उसका एक बड़ा कारण यह भी है कि शरद पवार ने चुनाव परिणाम के बाद भाजपा के साथ सरकार बनाने को राजी होकर भी तीन-चार दिनों में ही पलटी मार ली थी। इस तरह से शरद पवार ने भी अमित शाह को धोखा दिया था। एक चीज साफ नजर आती है कि भाजपा को धोखा देने वाले नेता अथवा पार्टी को अमित शाह राजनीतिक रूप से माफ नहीं करते। अमित शाह उस नेता या पार्टी को राजनीतिक सबक सिखाने के लिए बस सही समय का इंतजार करते हैं। ताजा घटनाक्रम के लिए विपक्षी दल भाजपा को जिम्मेदार ठहरा रहे हैं, भाजपा इसे राकांपा का अंदरूनी मामला बता रही है तो एनसीपी के बागी नेता किसी दबाव से इंकार करते हुए विकास के लिए शिंदे सरकार का साथ देने की बात कह रहे हैं। राजनीतिक जोड़-तोड़ के माहिर खिलाड़ी रहे राकांपा प्रमुख शरद पवार के लिए यह निश्चित ही बड़ी राजनीतिक मात साबित हुई है। ऐसे वक्त में जब समूची भारतीय राजनीति में पवार खुद विपक्षी एकता के प्रयासों में जुटे थे, उनकी ही पार्टी में यह विभाजन महाराष्ट्र की नई राजनीतिक इबारत लिखने वाला होगा, इसमें कोई संशय नहीं है। लेकिन अहम सवाल यही उठता है कि देश की राजनीति आखिर सत्ता की खातिर ऐसे रास्ते पर क्यों चलने लगी है? पृथक चुनाव चिह्न पर जीत कर आने वाले आसानी से विरोधियों से हाथ क्यों मिलाने लगे हैं? देखा जाए तो धन बल के सहारे सत्ता पाना और सत्ता के सहारे धनबल हासिल करना आज की राजनीति की विकृति एवं विसंगति बन गया है। महाराष्ट्र में राकांपा के अंदर मची उठापटक के बाद उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी, बिहार में जनता दल युनाइटेड और झारखंड में झारखंड मुक्ति मोर्चा को पार्टी में टूट का खतरा सताने लगा है। ऐसा ही डर कुछ और छोटी पार्टियों को भी है। लेकिन सबसे ज्यादा घबराहट जनता दल युनाइटेड खेमे में देखी जा रही है। जनता दल युनाइटेड की यह घबराहट स्वाभाविक भी है क्योंकि उसने भाजपा को जो धोखा दिया था उसका जवाब अब तक भाजपा ने नहीं दिया है। इन विपक्षी दलों की यह घबराहट सत्ता-लोलुपता की प्रवृत्ति के साथ किये गये भ्रष्टाचार के कारण है। शायद यही वजह है कि विपक्षी पार्टियों की बेंगलुरु में प्रस्तावित बैठक टलने की चर्चा भी शुरू हो गयी, लेकिन कांग्रेस ने यह स्पष्ट कर दिया कि बैठक बेंगलुरु में ही 17 और 18 जुलाई को ही होगी। कांग्रेस नेताओं ने यह बताना भी जरूरी समझा कि महाराष्ट्र में हुई घटनाओं का विपक्षी दलों के एकता के प्रयासों पर कोई असर नहीं पड़ने वाला। मगर पार्टी में सेंध लगने के बाद इन दलों के सामने सबसे बड़ी चुनौती अपने राजनीतिक धरातल को बनाए रखने की है। सवाल यह खड़ा हुआ है कि क्या नेताओं के साथ-साथ पार्टी का वोट आधार भी दूसरे खेमे में चला गया है। विपक्षी दलों की एकता से पहले ही उनके बिखरने की घटनाएं आश्चर्यकारी होने के साथ ही राजनीतिक दलों के कमजोर मनोबल की परिचायक हैं। एक और बड़ा प्रश्न है कि भारतीय राजनीति की शुचिता एवं आदर्श की रक्षा कैसे हो पायेगी? क्योंकि उभर रही सबसे बड़ी विडम्बना एवं विसंगति यही है कि जनता जिसको सत्ता से बाहर रखना चाहती है वह ऐसे अनचाहे घटनाक्रम से सत्ता हथिया लेता है। दलबदल कानून की धज्जियां उड़ती हुईं देखकर भी अदालतों से लेकर चुनाव आयोग तक ज्यादा कुछ नहीं कर पा रहे। चुनाव बाद होने वाले गठबंधनों में सत्ता-लोलुपता की प्रवृत्ति तब ही रुकेगी जब संवैधानिक प्रावधानों में जरूरी बदलाव हों। गैर लोकतांत्रिक गठबंधनों को रोकने के लिये राजनीतिक दलों को सशक्त आचार-संहिता से बांधना भी जरूरी है। ■

एक और बड़ा प्रश्न है कि भारतीय राजनीति की शुचिता एवं आदर्श की रक्षा कैसे हो पायेगी? क्योंकि उभर रही सबसे बड़ी विडम्बना एवं विसंगति यही है कि जनता जिसको सत्ता से बाहर रखना चाहती है वह ऐसे अनचाहे घटनाक्रम से सत्ता हथिया लेता है। दलबदल कानून की धज्जियां उड़ती हुईं देखकर भी अदालतों से लेकर चुनाव आयोग तक ज्यादा कुछ नहीं कर पा रहे।

दो टूक

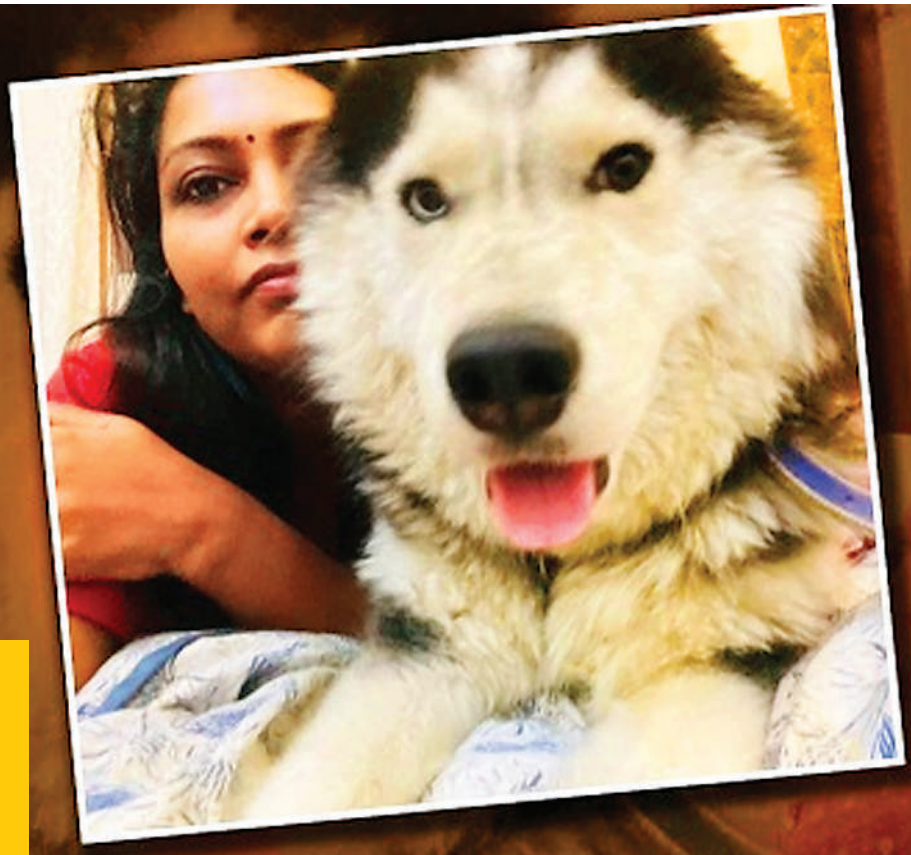

अभी झांसी के एक भवन में आग लगने से चार व्यक्ति जिंदा जल कर मर गए। आग इतनी जबरदस्त थी कि सेना को बुलाना पड़ा। प्रदेश के अग्निशमन के तो उपकरणों ने काम ही नहीं किया। इस भवन का एक ही द्वार था। प्रश्न यह है कि इस भवन का नक्शा कैसे पास हो गया।

यूपी में पहले मंत्री की भैंस खोजी जाती थी

अब कमिश्नर का कुत्ता ढूँढ़ा जाता है

उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार का दूसरा कार्यकाल है। भाजपा सरकार के पहले और वर्तमान कार्यकाल का लेखा-जोखा किया जाए तो सिर्फ इतना ही कहा जा सकता कि पहले सपा सरकार में पुलिस और प्रशासनिक तंत्र तत्कालीन मंत्री आजम खान की चोरी हुई भैंस ढूंढ़ता था, अब प्रशासनिक अमला मेरठ के कमिश्नर का खोया कुत्ता ढूंढ़ता है। इतना परिवर्तन हुआ है कि सपा-बसपा सरकारों में मंत्री हावी थे। आज अधिकारी हावी हैं। ये अधिकारी किसी की सुनते नहीं। इन पर कोई लगाम नहीं।

अशोक मधुप

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की ईमानदारी और प्रशासनिक क्षमता को कोई मुकाबला नहीं। बेईमानी उन्हें बर्दाश्त नहीं। बेईमानी की शिकायत मिलते ही वह जांच कराकर कार्रवाई करते हैं। प्रदेश में माफियाओं पर की गई कार्रवाई पूरी दुनिया के लिए नजीर बन गई है। प्रदेश में माफिया खत्म ही नहीं हुए, उनके द्वारा अर्जित संपत्ति सरकार ने जब्त कर ली, उनके अवैध रूप से बने भवन जमींदोज करा दिये गए। अपराधी उनके कार्यकाल में अपनी जान बख्शने की अपील करने के लिए खुद हाथ उठाकर थाने चले आते हैं, प्रदेश में दंगे होने बंद हो गए। कोरोना का संकट हो या अन्य कोई प्राकृतिक आपदा, योगी जी के नेतृत्व में सबका बहुत अच्छे से मुकाबला किया गया है। प्रदेश के धार्मिक स्थलों से एक साथ, एक झटके में लाउडस्पीकर उतर गए। अब न सड़कों पर नमाज होती है, न हनुमान चालीसा। प्रदेश में सरकारी सुविधाओं का लाभ सबको समान रूप से मिल रहा है। कोई दुराव नहीं, कोई भेद नहीं। आजकल फ्रांस में दंगे भड़के हुए हैं। हालात सरकार के काबू से बाहर हैं। ऐसे में ट्विटर पर प्रो. एन जॉन कैम नाम के शख्स ने ट्वीट किया, भारत को फ्रांस में दंगों की स्थिति को नियंत्रित करने के लिए यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को वहां भेजना चाहिए। वह 24 घंटे के भीतर दंगों को रोक देंगे। ये ट्वीट योगी आदित्यनाथ की क्षमता और प्रशासनिक कुशलता बताने के लिए काफी है। उनकी क्षमता और कार्यप्रणाली लाजवाब है, पर अमला तो वही पुराना है। व्यवस्था सब वैसी ही है।

योगी आदित्यनाथ की सख्ती के बावजूद प्रदेश में प्रशासनिक तंत्र बेकाबू है। पुलिस में संवेदनाएं नहीं हैं। भाजपा नेताओं, विधायकों और मंत्रियों पर अधिकारी हावी हैं। इसीलिए भ्रष्टाचार कम होने की जगह बढ़ा है। मेरठ की कमिश्नर सेल्वा कुमारी जे. का साइबेरियन हस्की ब्रीड का डॉगी 25 घंटे बाद मिल गया। पशु कल्याण विभाग और नगर निगम की टीमें डॉगी की तस्वीर को लेकर घर-घर जाकर पूछताछ कर रहीं थीं। डॉगी को कमिश्नर आवास से करीब दो किलोमीटर दूर पांडव नगर से बरामद किया गया। ये कमिश्नर का कुत्ता था इसलिए प्रशासनिक अमला दौड़ता रहा। आम आदमी की बेटी लापता हो जाए तो किसी को परेशानी नहीं होती, किसी को ये ख्याल नहीं आता कि वह बच्ची किस हाल में होगी। आम आदमी के घर चोरी हो जाए तो उसकी रिपोर्ट तक दर्ज नहीं होती। योगी आदित्यनाथ संवेदनशील हैं। जरा सी बात को गंभीरता से लेते हैं किंतु उनका तंत्र-प्रशासनिक अमला बिल्कुल भी गंभीर नहीं है। मानवीय संवेदनाएं उसमें नजर नहीं आतीं। पीलीभीत में एक नाबालिग लड़की को तीन लड़के उठा ले गए। एक लड़के ने रेप किया। बच्ची के पिता चाहते थे कि आरोपियों पर कार्रवाई हो, लेकिन पुलिस कार्रवाई की बजाय समझौते पर जोर दे रही थी। एक हफ्ते बाद युवती के पिता ने आत्महत्या कर ली। ठीक इसी तरह जालौन में बेटी के साथ रेप हुआ। वह प्रेग्नेंट हो गई। पीड़िता के मजदूर पिता केस दर्ज करवाने गए तो पुलिस ने उल्टा केस करने की धमकी दी। घर आए और आत्महत्या कर ली। एक हफ्ते पहले अमरोहा में एक किसान और लखनऊ के मलिहाबाद में एक युवक ने भी पुलिस की कार्यप्रणाली से परेशान होकर सुसाइड को चुन लिया। इन चार केस के अलावा पांचवां केस सीतापुर से है। यहां रेप पीड़िता ने फांसी लगा ली। कुल मिलाकर 25 दिन के अंदर एक रेप पीड़िता, दो रेप पीड़िताओं के पिता, एक प्रतियोगी छात्र और एक किसान ने आत्महत्या की। कहीं पुलिस पर कार्रवाई न करने का आरोप लगा तो कहीं 50 हजार रुपए मांगने का मामला सामने आया। आमतौर पर पुलिस की कोशिश मामले को निपटाने में रहती है।

फिलहाल इन पांच मामलों में चार मामले ऐसे थे जो पुलिस की जानकारी में थे। इसके बावजूद उन्होंने समय पर कार्रवाई नहीं की। इसकी वजह से पीड़ित पक्ष ने सुसाइड किया। इन चारों मामलों में पुलिस प्रशासन की किरकिरी हुई तो संबंधित अधिकारी को निलंबित किया गया। लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। बिजनौर जनपद के धामपुर थाना क्षेत्र के गांव सरकड़ा की एक महिला ने विद्युत निगम के जेई की हरकतों से तंग आकर जहर खाकर जान देने का प्रयास किया। इससे पहले गांव के लोगों ने कोतवाल से मिल कर आरोपी जेई सहित दो कर्मचारियों के खिलाफ पुलिस में नामजद तहरीर दे दी थी। पर पुलिस की ओर से आरोपियों पर रिपोर्ट कायम कर कार्रवाई नहीं हुई। बकौल ग्रामीण, ऐसे में जेई अपने लोगों को पीड़िता के घर भेज कर समझौता करने का अनर्गल दबाव बनाने का प्रयास कर रहा था। कई दिन से महिला के घर जेई के लोग जाकर जबरन दबाव बनाने का प्रयास कर रहे थे। अभी झांसी के एक भवन में आग लगने से चार व्यक्ति जिंदा जल कर मर गए। आग इतनी जबरदस्त थी कि सेना को बुलाना पड़ा। प्रदेश के अग्निशमन के तो उपकरणों ने काम ही नहीं किया। इस भवन का एक ही द्वार था। प्रश्न यह है कि इस भवन का नक्शा कैसे पास हो गया। यदि नक्शा पास नहीं हुआ तो भवन बन कैसे गया। लखनऊ में पिछले दिनों हजरतगंज के चार सितारा होटल लेवाना सुइट्स में आग में दम घुटने से चार लोगों की मौत हो गई। 16 लोग घायल हो गए। बाद में जांच हुई तो पता चला कि यह होटल बिना अनुमति के बना है। ये ही नहीं कई होटल बिना अनुमति चलते मिले। कहीं भी जांच करा लीजिए। नीचे सारा घालमेल है। कोई सुनने वाला नहीं। योगी आदित्यनाथ ने जबसे अधिकारियों से कहा है कि किसी की मत सुनिए। सही करिए, तब से तो मामला और आगे बढ़ गया। पहले अधिकारी सत्ताधारी पार्टी के नेताओं, विधायक सांसद से डरता था, अब यह सब खत्म हो गया। शोर मचने पर प्रशासन और सत्ताधारी पार्टी के नेताओं में समन्वय के लिए जिलों में कार्डिनेटर बनाने पड़े। पर पटरी से उतरे प्रशासनिक अमले पर कोई फर्क नहीं पड़ा। सरकार का दबाव प्रदेश के विकास पर है। उद्योग लगाने पर है। जब उद्योग लगते हैं तो अधिकारी मुंह फैलाकर खड़े हो जाते हैं। पर प्रायः एनओसी देने वाले अधिकारी सुविधा शुल्क के बिना कुछ करने को तैयार नहीं। सरकारी तंत्र की क्या हालत है, यह बताने के लिए प्रदेश के नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री एके शर्मा की ये प्रतिक्रिया काफी है। उन्होंने बुधवार को राजस्व वसूली की कमी पर पर नाराजगी जताई। उन्होंने कहा कि ऊपर से नीचे तक विभाग में भ्रष्टाचार व्याप्त है। सरकार की मंशा भ्रष्टाचार के प्रति जीरो टॉलरेंस की है, छोटे उपभोक्ताओं व गरीबों पर वसूली एवं जांच के नाम पर एफआईआर दर्ज कराई जा रही है, जबकि बड़े बकायेदारों पर कोई भी कार्रवाई नहीं की जा रही है। उन्होंने विभागीय अफसरों एवं कर्मचारियों को धृतराष्ट्र बताया।

समीक्षा के दौरान आक्रोशित ऊर्जा मंत्री ने कहा कि ऐसा लग रहा है कि बिजली विभाग में कोई भी कार्य जिम्मेदारी के साथ व्यवस्थित तरीके से नहीं हो रहा है। सभी अधिकारी एवं कर्मचारी जिम्मेदारी के प्रति आंखें बंद किए हुए हैं। वे धृतराष्ट्र बने हुए हैं। ये टिप्पणी बिजली विभाग के बारे में विभागीय मंत्री की है, वैसे सभी विभागों का हाल एक ही जैसा है। सभी विभागों का ढर्रा एक-सा ही है। प्रदेश में भ्रष्टाचार रोकने के लिए योगी आदित्यनाथ को रिश्वतखोर और बेइमान अधिकारियों के विरुद्ध भी वैसा ही अभियान चलाना होगा जैसा माफियाओं के विरुद्ध चलाया गया था। आय से अधिक संपत्ति मिलने पर अधिकारी के विरुद्ध आपराधिक मुकदमा दर्ज होने के साथ अवैध रूप से अर्जित उनकी और उनके परिवारजनों की संपत्ति भी जब्त की जानी चाहिए। पिछले दिनों प्रदेश सरकार ने आदेश किया था कि सभी अधिकारी अपनी और अपने परिवार जनों की संपत्ति घोषित करें, क्योंकि लगभग सभी इसमें फंस रहे थे, तो सब दब गया। होना यह चाहिए कि आदेश हो कि नौकरी लगने के समय सभी अधिकारी और कर्मचारी अपनी अपने भाई-बहन, माता-पिता की संपत्ति घोषित करें। अपने सारे बैंक खातों और उनमें जमा रकम की जानकारी दें। यही आदेश कार्यरत सभी विभागों के कर्मचारी और अधिकारी के लिए भी हो। कर्मचारी और अधिकारी की संपत्ति का सारा डाटा आनलाइन होना चाहिए ताकि कोई भी देख ले। ऐसा होता है तो कर्मचारी भ्रष्टाचार करते डरेगा। उस पर कार्रवाई करते भी आसानी होगी। नहीं तो जैसा चल रहा है, वैसा ही चलता रहेगा। इसमें कोई अंतर नहीं आने वाला है। फंसने वाले के विरुद्ध ही कार्रवाई होगी। बाकी सब ईमानदार बने रहेंगे। ■

नियमों का पालन जरूरी

सड़कें तो आधुनिक बना दीं पर ट्रैफिक नियमों का पालन करना कब सुनिश्चित कराया जायेगा?

राजकुमार दंडौतिया

केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी की ओर से दी गई यह जानकारी हतप्रभ करने वाली है कि देश में प्रतिदिन करीब 415 लोग यानी प्रति वर्ष डेढ़ लाख लोग सड़क दुर्घटनाओं में जान गंवाते हैं। यह बहुत बड़ी संख्या है। भारत का सड़क यातायात तमाम विकास की उपलब्धियों एवं प्रयत्नों के बावजूद असुरक्षित एवं जानलेवा बना हुआ है, सुविधा की खूनी एवं हादसे की सड़कें नित-नयी त्रासदियों की गवाह बन रही है। दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर हुए दिल दहलाने एवं रूह कंप-कंपाने वाले एक भीषण एवं दर्दनाक हादसे में एक कार में सवार एक परिवार के छह लोगों की मौत ने एक बार फिर यह खौफनाक एवं डरावना तथ्य उजागर किया कि अपने देश में जैसे-जैसे अच्छी एवं सुविधा की सड़कें बन रही हैं, वैसे-वैसे ही दुर्घटनाएं या यातायात नियमों की अवहेलना भी बढ़ रही हैं और उनमें जान गंवाने वालों की संख्या भी। दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर हादसा इसलिए हुआ, क्योंकि एक कार की भिड़ंत गलत दिशा से आ रही बस से हो गई। यह अंधेरगर्दी एवं घोर लापरवाही है कि यह बस करीब आठ किमी तक गलत दिशा में चलती रही, लेकिन किसी ने उसे रोका-टोका नहीं। आखिर कोई यह देखने वाला क्यों नहीं था कि बस चालक ट्रैफिक नियमों की अनदेखी कर अपनी और दूसरों की जान जोखिम में डाल रहा है? जिस समय यह हादसा हुआ, उसके बाद भी उसी हाइवे एवं अन्य सड़क मार्गों पर ऐसी ही लापरवाही देखी गयी। ट्रैफिक पुलिस का ध्यान आज भी हादसों एवं यातायात नियमों की अवहेलना को रोकने की बजाय अपनी जेब भरने में लगा रहता है।

सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय लोगों के सहयोग से वर्ष 2025 तक सड़क हादसों में 50 प्रतिशत की कमी लाना चाहता है, लेकिन यह काम तभी संभव है जब सड़क दुर्घटनाओं के मूल कारणों का निवारण करने के लिए ठोस कदम भी उठाए जाएंगे। जैसा दर्दनाक हादसा दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर हुआ, वैसे देश भर में होते ही रहते हैं। एक्सप्रेसवे, हाईवे आदि पर होने वाले हादसों में न जाने कितने लोग मरते और अपंग होते हैं, लेकिन इसके ठोस उपाय नहीं किए जा रहे हैं कि ट्रैफिक नियमों का पालन कैसे सुनिश्चित हो। यह तो बिल्कुल भी नहीं होना चाहिए कि एक्सप्रेसवे या हाईवे पर गलत दिशा में वाहन चलें, खड़े रहें या जानवर उनमें प्रवेश करें, लेकिन ऐसा खूब होता है। एक्सप्रेसवे पर दोपहिया

वाहन भी दिख जाते हैं और कभी-कभी तो तीन सवारी के साथ। सारे करतब मोटर साईकिल सवार इन आधुनिक सड़कों पर करते देखे जाते हैं। ट्रैफिक नियमों का ऐसा खुला उल्लंघन ही जानलेवा दुर्घटनाओं का कारण बनता है। यह गंभीर चिंता का विषय है कि सड़कों पर बेलगाम गाड़ी चलाना कुछ लोगों के लिए मौज-मस्ती एवं फैशन का मामला होता है लेकिन यह कैसी मौज-मस्ती या फैशन है जो कई जिन्दगियां तबाह कर देती है। ऐसी दुर्घटनाओं को लेकर आम आदमी में संवेदनहीनता एवं लापरवाही की काली छाया का पसरना त्रासद है और इससे भी बड़ी त्रासदी सरकार की आंखों पर काली पट्टी का बंधना है। हर स्थिति में मनुष्य जीवन ही दांव पर लग रहा है। इन बढ़ती दुर्घटनाओं की नृशंस चुनौतियों का क्या अंत है? हमारे देश की तुलना में अमेरीका में पांच गुना दुर्घटनाएं होती हैं तो जापान में लगभग हमारे देश जितनी ही, लेकिन वहां मरने वालों की संख्या नगण्य है, क्योंकि वहां के लोगों में यातायात अनुशासन देखने को मिलता है, हमारे देश में ऐसा अनुशासन लाने के लिये सरकार को व्यापक प्रयत्न करने होंगे। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी की ओर से दी गई यह जानकारी हतप्रभ करने वाली है कि देश में प्रतिदिन करीब 415 लोग यानी प्रति वर्ष डेढ़ लाख लोग सड़क दुर्घटनाओं में जान गंवाते हैं। यह बहुत बड़ी संख्या है, लेकिन इसके बाद भी सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए वैसे प्रयत्न एवं उपाय नहीं किए जा रहे, जैसे अनिवार्य हो चुके हैं। अपने देश में यातायात पुलिस की भारी कमी है, लेकिन उसे दूर करने का काम प्राथमिकता से बाहर है। जहां कहीं एक्सप्रेसवे, हाईवे आदि पर यातायात पुलिसकर्मी होते भी हैं, वे खानापूर्ति करते हैं। वे यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों का चालान कर कर्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं। इन त्रासद आंकड़ों ने एक बार फिर यह सोचने को मजबूर कर दिया कि आधुनिक और बेहतरीन सुविधा की सड़कें केवल रफ्तार एवं सुविधा के लिहाज से जरूरी हैं या फिर उन पर सफर का सुरक्षित होना पहले सुनिश्चित किया जाना चाहिए। इतना ही नहीं, तेज गति के लिए उपयुक्त इन सड़कों पर हर किस्म के वाहन गलत तरीके से चलते हैं।

दुर्घटना एक ऐसा शब्द है जिसे पढ़ते ही कुछ दृश्य आंखों के सामने आ जाते हैं, जो भयावह होते हैं, त्रासद होते हैं, डरावने होते हैं, खूनी होते हैं। अध्ययन के मुताबिक, खूनी सड़कों एवं त्रासद दुर्घटनाओं के मुख्य कारण हैं- वाहनों की बेलगाम या तेज रफ्तार, गलत दिशा में एवं शराब पीकर गाड़ी चलाना, हेलमेट नहीं पहनना और सीट बेल्ट का इस्तेमाल नहीं करना। भले ही हर सड़क दुर्घटना को केन्द्र एवं राज्य सरकारें दुर्भाग्यपूर्ण बताती हैं, उस पर दुख व्यक्त करती हैं, मुआवजे का ऐलान भी करती हैं लेकिन बड़ा प्रश्न है कि एक्सीडेंट रोकने के गंभीर उपाय अब तक क्यों नहीं किए जा सके हैं? जो भी हो, सवाल यह भी है कि इस तरह की तेज रफ्तार सड़कों पर लोगों की जिंदगी कब तक इतनी सस्ती बनी रहेगी? सच्चाई यह भी है कि पूरे देश में सड़क परिवहन भारी अराजकता का शिकार है। सबसे भ्रष्ट विभागों में परिवहन विभाग शुमार है। दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेसवे पर जो बस कार सवार लोगों के लिए काल बनी, उसका ड्राइवर इसी हाइवे पर पूर्व में भी अनेक बार गलत दिशा में बस चलाता रहा है, उसका कम से कम 15 बार चालान हो चुका था। इसके बाद भी चालक की सेहत पर कोई असर नहीं पड़ा। यह समझा जाना चाहिए कि इस तरह के दिखावे के चालान से अराजक यातायात और उसके चलते होने वाले जानलेवा हादसों पर लगाम नहीं लगने वाली। लगाम तब लगेगी जब यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों को कठोर दंड का भागीदार बनाया जाएगा। दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति तो यह है कि लोग यह जानते हुए भी मनमाने तरीके से वाहन चलाते हैं कि वे सीसीटीवी कैमरों में कैद हो सकते हैं।

हमारी ट्रैफिक पुलिस एवं उनकी जिम्मेदारियों से जुड़ी एक बड़ी विडम्बना है कि कोई भी ट्रैफिक पुलिस अधिकारी चालान काटने का काम तो बड़ा लगन एवं तन्मयता से करता है, उससे भी अधिक रिश्वत लेने का काम पूरी जिम्मेदारी से करता है, प्रधानमंत्री के तमाम भ्रष्टाचार एवं रिश्वत विरोधी बयानों एवं संकल्पों के यह विभाग धड़ल्ले से रिश्वत वसूली करता है, लेकिन किसी भी यातायात अधिकारी ने यातायात के नियमों का उल्लघंन करने वालों को कोई प्रशिक्षण या सीख दी हो, यह कहीं नजर नहीं आता। ■

ADVANCE GROUP OF GLASS INDUSTRIES

MANUFACTURERS AND EXPORTERS

*Handicraft Glass Art Wares *Lead Glass Tubing *Soda Lime Glass Tubing *Fancy Glass Tumblers & Giftware Items* Glass Lanterns Chimneys *Glass Inner For Vacuum Flasks *Table Wares * Glass Bangles *Liquor Bottles *Perfume Bottles *Biological Equipments *Thermo Ware Items *GLS Lamp Shells

With Best Compliments For

PRADEEP KUMAR GUPTA

CHAIRMAN

ASSOCIATE CONCERNS

* ADVANCE GLASS WORKS
* ORIENTAL GLASS WORKS
* OM GLASS WORKS PRIVATE LIMITED
* MODERN GLASS INDUSTRIES
* ADARSH KANCH UDHYOG PRIVATE LIMITED
* ADVANCE LAMP COMPONENT & TABLE WARES PRIVATE LIMITED
* GREEN ORCHID

HEAD OFFICE
105, Hanuman Ganj, Firozabad- 283203 (Uttar Pradesh) INDIA
TEL: +91 5612 221796, MOB: +91 9837 082 127, 9897 012 063
email: info@advanceglassworks.com
omglassworkspvtltd@gmail.com
website: www.advanceglass.in

नजरिया

अमेरिका की यह पुरानी आदत रही है कि वह न तो अपनी जमीन पर कोई युद्ध लड़ना चाहता है और न ही अकेले कोई युद्ध लड़ना चाहता है इसलिए आज यूक्रेन रूस के हमले का सामना कर रहा है और ताइवान पर चीन के हमले का खतरा मंडरा रहा है।

क्या भारत को नाटो में शामिल होने का अमेरिका का आग्रह मान लेना चाहिए?

वर्ष 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बावजूद अमेरिका, रूस के कद, प्रभाव और सामरिक क्षमता के कारण दशकों तक दुनिया पर उस तरह से राज नहीं कर पाया जैसे वह करना चाहता था लेकिन पिछले कुछ वर्षों के दौरान रूस के लगातार कमजोर होते जाने की वजह से अमेरिका के प्रभाव में लगातार बढ़ोतरी तो हुई लेकिन अब चीन की आक्रामक रणनीति ने उसे परेशान कर रखा है। दशकों तक पाकिस्तान को बढ़ावा देकर भारत को परेशान करने वाला, पाकिस्तान को सैन्य हथियार और साजो-सामान की मदद देकर भारत पर कई युद्ध थोपने वाला और कश्मीर समस्या को उलझाने वाला अमेरिका अब यह चाहता है कि भारत चीन के खिलाफ लड़ाई में खुलकर उसका साथ दे। इसके लिए अमेरिका अब भारत को अपने सैन्य गठबंधन नाटो में शामिल करना चाहता है, नाटो प्लस देश के तौर पर।

संतोष पाठक

दरअसल अमेरिका के नेतृत्व वाले उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन- 31 देशों का एक सैन्य गठबंधन है जिसे नाटो के नाम से जाना जाता है। नाटो का मूल मंत्र इसमें शामिल देशों की बाहरी आक्रमणों से हर तरह से रक्षा करना है अर्थात अगर इस संगठन में शामिल किसी देश पर कोई अन्य देश हमला करते हैं तो नाटो के सभी देश मिलकर उसके साथ खड़े होकर जवाब देते हैं। यही वजह है कि रूस के हमले का सामना कर रहा यूक्रेन भी नाटो का सदस्य बनना चाहता था और आज भी बनना चाहता है। नाटो में मुख्य रूप से अमेरिका और कुछ यूरोपीय देश शामिल हैं। वहीं, इसके साथ ही अमेरिका ने एक नाटो प्लस की व्यवस्था भी कर रखी है, जिसमें अमेरिका के सहयोगी माने जाने वाले पांच और सदस्य देश- ऑस्ट्रेलिया, जापान, दक्षिण कोरिया, न्यूजीलैंड और इजरायल शामिल हैं। अब अमेरिका भारत को इस बड़े समूह- नाटो प्लस का हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित कर रहा है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी पर बनी अमेरिकी कांग्रेस की एक सेलेक्ट कमिटी की हाल में ही जारी हुई रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत को शामिल करने के लिए नाटो प्लस व्यवस्था को मजबूत करना चाहिए। अमेरिका चाहता है कि भारत पश्चिमी देशों की सैन्य शक्ति वाले गठबंधन नाटो प्लस का हिस्सा बने। हाल ही में अमेरिकी सीनेट के इंडिया कॉकस के सह अध्यक्ष मार्क वॉर्नर और जॉन कोर्नी ने यह घोषणा की है कि वे भारत को नाटो प्लस का डिफेंस दर्जा देने के लिए अमेरिकी संसद में बिल पेश करने वाले हैं।

दरअसल, अमेरिका की यह पुरानी आदत रही है कि वह न तो अपनी जमीन पर कोई युद्ध लड़ना चाहता है और न ही अकेले कोई युद्ध लड़ना चाहता है इसलिए आज यूक्रेन रूस के हमले का सामना कर रहा है और ताइवान पर चीन के हमले का खतरा मंडरा रहा है। वैश्विक स्तर पर चीन के बढ़ रहे राजनीतिक प्रभाव और आक्रामकता का सामना करने के लिए अमेरिका चीन को उसके पड़ोस में ही मौजूद भारत जैसे ताकतवर देश के जरिए घेरना चाहता है।

यह बात दुनिया जानती है कि चीन के साथ भारत के संबंध अच्छे नहीं हैं लेकिन यह भी एक बड़ी सच्चाई है कि 1962 की लड़ाई में हार का सामना करने के बाद जब-जब चीन की सेना भारत के सामने आई है, भारत ने उसे मुंहतोड़ जवाब दिया है। आज का भारत अपने दम पर चीन को सबक सिखाने में सक्षम है। पिछले दिनों शंघाई सहयोग संगठन की बैठक में चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग की मौजूदगी में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आतंकवाद को लेकर चीन की दोहरी नीति पर दोटूक शब्दों में प्रहार करते हुए विस्तारवाद की नीति को लेकर भी उसे आईना दिखाने का काम किया।

यह बात बिल्कुल सही है कि रूस के कमजोर होते जाने के कारण वैश्विक व्यवस्था भी तेजी से बदल रही है। भारत ने एक भरोसेमंद दोस्त होने के कारण 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बावजूद हमेशा से रूस के साथ अपने संबंधों को प्राथमिकता दी है। तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव से लेकर वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तक भारत की हर सरकार ने रूसी अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाए रखने के लिए अपनी तरफ से हरसंभव सहयोग दिया लेकिन रूस आज अपने ही कारण समस्याओं से घिर गया है। भारत की तरफ से लगातार प्रयासों के बावजूद रूस की हालत खस्ता होती जा रही है और अब तो रूस एक तरह से चीन के पाले में जाता नजर आ रहा है। यही वजह है कि कई विश्लेषक भारत को अब यह सलाह देने लगे हैं कि रूस और चीन के एक साथ आने के बाद अब भारत के पास एकमात्र रास्ता अमेरिका के साथ अपनी दोस्ती को मजबूत बनाने का ही रह जाता है और इसलिए उसे नाटो प्लस में शामिल हो जाना चाहिए। इसके कई फायदे भी बताए जा रहे हैं। यह कहा जा रहा है कि अगर भविष्य में चीन भारत पर हमला करता है तो नाटो प्लस का सदस्य होने के कारण अमेरिका के नेतृत्व में पश्चिमी देश भारत की मदद करेंगे। नाटो प्लस में शामिल हो जाने के बाद भारत को अधिक सैन्य समर्थन मिलेगा, नई-नई सैन्य तकनीक मिलेगी और साथ ही नाटो देशों के पास मौजूद खुफिया जानकारी तक भी भारत की पहुंच हो जाएगी। लेकिन क्या वाकई ऐसा है? क्या नाटो में शामिल होने से भारत को वाकई सिर्फ फायदा ही होगा या पश्चिमी देश खासतौर से अमेरिका अपने फायदे के लिए भारत को नाटो प्लस में शामिल करना चाहता है? सच्चाई तो यह है कि अगर भारत नाटो से जुड़ने का फैसला करता है तो उसे उसकी भारी कीमत भी चुकानी पड़ेगी। सबसे पहला प्रभाव तो यही होगा कि नाटो में शामिल होने के बाद भारत वैश्विक मंच पर वैश्विक मुद्दों पर अपनी बात स्वतंत्र तौर पर नहीं रख पाएगा। उसे रूस के साथ अपने संबंधों को तोड़ना होगा। रूस-यूक्रेन लड़ाई में शांति स्थापित करने की कोशिशों को छोड़कर अमेरिका की तरह यूक्रेन का समर्थन करना होगा। नाटो के साथ जुड़ने के बाद भारत की सामरिक स्वायत्तता पर भी खतरा बढ़ सकता है। इसके बाद भारत को अपनी हर सामरिक नीति को नाटो के सिद्धांत के अनुसार ही बनाना पड़ेगा। भारत चाहकर भी अपनी इच्छा के अनुसार, अपने तरीके से कोई सामरिक कदम नहीं उठा पाएगा। नाटो में शामिल होने के बाद भारत के सामने सबसे बड़ा खतरा विदेशी सैन्य अड्डे का खड़ा हो जाएगा क्योंकि अभी तक भारत ने स्पष्ट तौर पर अपनी यह नीति बना रखी है कि वह अपनी जमीन पर किसी भी अन्य देश का सैन्य अड्डा नहीं बनाने देगा। लेकिन नाटो के साथ जुड़ने के बाद भारत को अपनी जमीन पर अमेरिकी सेना की मेजबानी करनी होगी और उसके लिए एक सैन्य अड्डा बनाने को मंजूरी देनी होगी। नाटो प्लस के अन्य सदस्य देशों- जापान, दक्षिण कोरिया, ऑस्ट्रेलिया और इजरायल में अमेरिकी सैन्य अड्डे मौजूद हैं। नाटो के साथ जुड़ने के बाद सबसे बड़ा खतरा तो यह होगा कि अमेरिका, हर बार भारत को अपनी लड़ाई में शामिल होने के लिए मजबूर करेगा। जिसकी वजह से भारत विकास के रास्ते से भटककर बिना मतलब ही दुनियाभर की लड़ाई और संघर्षों में फंसा रहेगा।

इन्ही कारणों की वजह से ही यह स्पष्ट है कि भारत को किसी भी तरह से नाटो का हिस्सा नहीं बनना चाहिए क्योंकि दुनिया को भारत जैसे स्वतंत्र आवाज वाले देश की जरूरत है। अमेरिका के साथ दोस्ती के रिश्तों को लगातार मजबूत करना चाहिए, व्यापारिक सहयोग और साझेदारी को बढ़ावा देना चाहिए लेकिन इसके साथ ही उसे दो टूक शब्दों में यह भी बता देना चाहिए कि भारत नाटो का हिस्सा नहीं बनेगा और जहां तक चीन की आक्रामकता का सवाल है, भारत अकेले ही अपने दम पर उससे निपटने में सक्षम है लेकिन अगर अमेरिका इसमें मदद करना चाहता है या मदद लेना चाहता है तो भारत केस टू केस के आधार पर फैसला करेगा लेकिन नाटो के साथ नहीं जुड़ेगा। ■

ऑनलाइन दुनिया में तेजी से बढ़ रहे हैं साइबर ठगी के उपाय

आज दुनिया के अनेक देशों में आर्थिक व्यवहार ऑनलाइन किए जा रहे हैं। मोबाइल फोन एवं लेपटॉप पर इंटरनेट के माध्यम से प्रतिदिन करोड़ों की संख्या में इस तरह के आर्थिक व्यवहार किए जा रहे हैं। कई बार सामान्यजन इन व्यवहारों को करते समय सावधानी नहीं रख पाते हैं एवं साइबर ठगी का शिकार हो जाते हैं अर्थात, उनके जमाखातों से भारी भरकम राशि साइबर ठगों द्वारा निकाल ली जाती है। हालांकि इंटरनेट के माध्यम से देश विदेश के नागरिक एक दूसरे से सफलतापूर्वक बहुत आसानी से जुड़ पाते हैं परंतु जरा-सी असावधानी बहुत भारी नुकसान का कारण भी बन जाती है। साइबर ठग इसी असावधानी का फायदा उठाकर आम नागरिकों को नुकसान पहुंचाने में सफल हो जाते हैं।

डॉ. हेमा सिंह भगौर

साइबर ठगी में कुछ असामाजिक तत्व आम नागरिकों के मोबाइल फोन एवं इंटरनेट पर कुछ विशेष प्रकार के सॉफ्टवेयर का उपयोग कर आम नागरिकों के मोबाइल फोन एवं लेपटॉप से व्यक्ति विशेष के समस्त प्रकार के निजी डाटा, बैंक सम्बंधी जानकारी, आदि को चुरा लेते हैं और इस जानकारी का उपयोग कर साइबर ठगी को पूर्ण करते हैं। साइबर ठगी इतनी सफाई से की जाती है कि कुछ लोगों को तो पता ही नहीं चलता कि उनके साथ साइबर ठगी हो चुकी है। यह सब साइबर ठगी के प्रति जागरूक न होने के चलता ही सम्भव हो पाता है। साइबर ठगी का शिकार अक्सर महिलाएं होती पाई जाती हैं। भारत की लगभग एक तिहाई महिलाएं किसी न किसी प्रकार की साइबर ठगी का शिकार हो चुकी हैं एवं इनमें से केवल 35 प्रतिशत महिलाओं ने ही इस सम्बंध में शिकायत दर्ज कराई है, जबकि लगभग 47 प्रतिशत महिलाओं ने इस सम्बंध में कोई शिकायत दर्ज ही नहीं कराई है। साथ ही, लगभग 18 प्रतिशत महिलाएं ऐसी भी हैं जिन्हें पता ही नहीं चला है कि उनके साथ साइबर ठगी हो चुकी है। यहां भी जानकारी का अभाव अधिक नजर आता है, क्योंकि आम नागरिकों को पता ही नहीं है कि उनके साथ साइबर ठगी होने के बाद उन्हें कहां एवं किस प्रकार शिकायत दर्ज कराना है। आम नागरिकों के जागरूक नहीं रहने के चलते भारत में साइबर ठगी अपने चरम पर पहुंच चुकी है।

वैश्विक स्तर पर जारी की गई एक जानकारी के अनुसार, कैलेंडर वर्ष 2022 में साइबर ठगी के कुल 800,944 मामले दर्ज किए गए थे, इसमें लगभग 42.2 करोड़ नागरिक प्रभावित हुए थे तथा इन मामलों में 6 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर की राशि शामिल थी। ऐसा माना जाता है कि वैश्विक स्तर पर प्रतिदिन लगभग 2,328 साइबर ठगी के मामले घटित होते हैं। वर्ष 2001 से वर्ष 2021 तक पिछले 21 वर्षों के दौरान, साइबर ठगी के मामलों में कुल 2,600 करोड़ अमेरिकी डॉलर का नुकसान हुआ है। एक अन्य अनुमान के अनुसार, साइबर ठगी से साइबर ठगों को प्रति वर्ष 1.50 लाख करोड़ रुपए की कमाई होती है और प्रतिवर्ष लगभग 43 प्रतिशत साइबर ठगी के हमले छोटे व्यवसाईयों पर होते हैं।

यह सही है कि आज की भाग दौड़ भरी जिंदगी में, विशेष रूप से महानगरों में, आम नागरिकों का इंटरनेट के बगैर गुजारा करना बहुत मुश्किल है। परंतु यदि इंटरनेट का उपयोग सावधानी पूर्वक किया जाये तो साइबर ठगी से बहुत बड़ी हद तक बचा जा सकता है। इस संबंध में कुछ विशेष सावधानियों पर ध्यान देना आवश्यक होगा। जैसे मुफ्त में प्राप्त हो रही इंटरनेट (वाई फाई) की सेवा के उपयोग से बचना चाहिए, क्योंकि कुछ ऐसे वाईफाई भी होते हैं जिनके माध्यम से मोबाइल फोन एवं लेपटॉप से डाटा को चुरा लिया जाता है, अतः केवल सुरक्षित इंटरनेट की सेवा का ही उपयोग किया जाना चाहिए। आम नागरिकों को चाहिए कि वे इंटरनेट का उपयोग करने के पूर्व अपनी समस्त एप्लिकेशन पर मजबूत पासवर्ड का इस्तेमाल करें एवं मोबाइल फोन तथा लेपटॉप पर उपयोग किए जाने वाले ऑपरेटिंग सिस्टम एवं इंटरनेट के सॉफ्टवेयर को नियमित रूप से समय समय पर अपडेट करते रहें, ताकि कोई भी हैकर सॉफ्टवेयर से निजी डाटा नहीं चुरा पाए। सोशल मीडिया खातों पर व्यक्तिगत जानकारी साझा करने में भी सावधानी बरतनी चाहिए। विशेष रूप से व्यापारी वर्ग को तो अपनी वेबसाइट को बहुत ही सुरक्षित तरीके से चलाना चाहिए एवं समय समय पर पासवर्ड को भी बदलते रहना चाहिए। किसी भी अनजान व्यक्ति से प्राप्त लिंक को क्लिक नहीं करना चाहिए, क्योंकि कई बार साइबर ठग इस प्रकार की लिंक भेजते हैं एवं इस लिंक को क्लिक कर खोलने से वे संबंधित मोबाइल एवं लैपटॉप की सारी जानकारी हैक कर लेते हैं और साइबर ठगी करने में सफल हो जाते हैं। इस पद्धति से की गई साइबर ठगी को फिशिंग कहा जाता है और आजकल अधिकतर इस प्रकार की कार्य प्रणाली से ही साइबर ठगी की जा रही है।

यदि साइबर ठगी का शिकार हो जाते हैं तो तुरंत पुलिस को इसकी सूचना दी जानी चाहिए। पुलिस विभाग द्वारा विशेष रूप से साइबर ठगी के मामलों के लिए अलग से साइबर सेल एवं पुलिस थाने बनाए गए हैं, जहां केवल साइबर ठगी के मामलों के सम्बंध में ही शिकायतें दर्ज की जाती हैं।

पूर्ण सावधानी रखने के बाद भी यदि साइबर ठगी का शिकार हो जाते हैं तो तुरंत पुलिस को इसकी सूचना दी जानी चाहिए। पुलिस विभाग द्वारा विशेष रूप से साइबर ठगी के मामलों के लिए अलग से साइबर सेल एवं पुलिस थाने बनाए गए हैं, जहां केवल साइबर ठगी के मामलों के सम्बंध में ही शिकायतें दर्ज की जाती हैं। साइबर ठगी से जुड़े मामलों की शिकायत के लिए विशेष हेल्पलाइन फोन नं. भी जारी किया गया है। यदि साइबर ठगी आपके क्रेडिट एवं डेबिट कार्ड के माध्यम से की जा रही है तो इस सम्बंध में अपने बैंक से भी तुरंत सम्पर्क करना चाहिए तथा अपना क्रेडिट एवं डेबिट कार्ड ब्लाक करवाने की कार्यवाही करनी चाहिए ताकि क्रेडिट एवं डेबिट कार्ड के माध्यम से की जा रही साइबर ठगी को रोका जा सके। साथ ही अपने बैंक खाते को भी फ्रीज कराया जा सकता है। केंद्र सरकार ने साइबर ठगी की जानकारी साझा करने के उद्देश्य से एक अलग पोर्टल www.cybercrime.gov.in भी बनाया है। इस पोर्टल पर ऑनलाइन शिकायत दर्ज की जा सकती है। साइबर ठगी से जुड़े अधिकतर मामलों में सूचना प्रौद्योगिकी कानून 2000 के अंतर्गत कार्यवाही की जाती है। इस कानून के अनुसार, साइबर ठग द्वारा की गई ठगी की श्रेणी तय की जाती है और उसके अनुसार आरोपी ठग के खिलाफ कार्यवाही की जाती है। कई मामलों में ठग के विरुद्ध धारा 43, 65, 66 और 67 के तहत केस चलते हैं। साथ ही, आईपीसी की धारा 420, 120बी और 406 के तहत भी अपराधी ठग पर मामला दर्ज किया जाता है।

साइबर ठगी के मामलों में यदि तुरंत पुलिस की सहायता ली जाये तो कई मामलों में साइबर ठगों द्वारा लूटी गई राशि की वसूली सम्भव हो जाती है। जैसे पटना के एक व्यक्ति को साइबर ठगों ने एक पोस्ट लाइक करने के नाम पर ठग लिया था। उस व्यक्ति को साइबर ठगों ने झांसा दिया कि पोस्ट लाइक करने पर कुछ राशि का भुगतान किया जाएगा और कुछ राशि का भुगतान किया भी, इस प्रकार साइबर ठगों ने उस व्यक्ति के बैंक खाते का पता कर लिया कि उसमें कितनी राशि जमा है और साइबर ठगी करते हुए उन्होंने 9.63 लाख रुपए से अधिक की राशि उस व्यक्ति के बैंक खाते से निकाल ली। पुलिस ने हेल्पलाइन क्रमांक 1930 पर जानकारी प्राप्त होते ही साइबर ठगों के खातों पर रोक लगाने में सफलता अर्जित कर ली और इस प्रकार साइबर ठगों से पूरी राशि उस व्यक्ति को वापिस करा दी। इसी प्रकार, पटना की रहने वाली एक महिला डॉक्टर ने पोलैंड में रहने वाली अपनी बहन को ट्रांसफर वाइज ऐप के जरिए 4.8 लाख रुपए की राशि भेजी थी। परंतु यह राशि उनकी बहिन के खाते में जमा ही नहीं हुई। तब उनकी बहन ने पोलैंड से हेल्पलाइन क्रमांक 1930 पर अपनी शिकायत दर्ज कराई। साइबर पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए पूरी राशि साइबर ठगों के खातों में फ्रीज कराते हुए उस महिला डॉक्टर को वापिस करा दी। इस प्रकार की सफलता की लाखों कहानियां हैं। केवल आवश्यकता है कि साइबर ठगी के बारे में पता चलते ही तुरंत साइबर पुलिस में अपनी शिकायत दर्ज कराने की ताकि साइबर ठगों के विरुद्ध पुलिस द्वारा तुरंत कार्यवाही की जा सके। तुरंत कार्यवाही से साइबर ठगों से राशि की जब्ती सम्भव हो जाती है। ■

दिल्ली के आसपास मौजूद हैं ट्रेकिंग की ये शानदार जगहें, वीकेंड को बना देंगी मजेदार

कई लोग छुट्टियों की कमी के चलते घूमने नहीं जा पाते हैं। ऐसे में अगर आप वीकेंड में दोस्तों के साथ ट्रेकिंग का प्लान बना रहे हैं। तो आपको इन जगहों पर जरूर जाना चाहिए। यहां से आपको हिमालय के कई खूबसूरत नजारे देखने को मिलेंगे।

विनय शर्मा

अधिकतर लोगों को घूमना-फिरना काफी ज्यादा पसंद होता है। ऐसे में लोग छुट्टियां मिलते ही घूमने के लिए निकल जाते हैं। लेकिन कई बार छुट्टियां नहीं मिलने पर हमारे पूरे प्लान पर पानी फिर जाता है। ऐसे में अगर आप भी इस समस्या से परेशान हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। बता दें कि इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि किस तरह से आप वीकेंड पर ट्रैकिंग का आनंद उठा सकते हैं। बता दें कि यह जगह दिल्ली के काफी पास हैं। ऐसे में आपको इन जगहों पर जाने में ज्यादा समय नहीं लगेगा। इन लोकेशन पर आप अपने दोस्तों के साथ जा सकते हैं।

नाग टिब्बा ट्रैक

बता दें कि उत्तराखंड के निचले हिमालय क्षेत्र की सबसे ऊंची चोटी में नाग टिब्बा ट्रेक का नाम शामिल है। अगर आप भी अपने दोस्तों के साथ ट्रेकिंग का प्लान बना रहे हैं तो आपको यह जगह जरूर एक्सप्लोर करनी चाहिए। 5-6 घंटे के अंदर आप इस इस ट्रैक को पूरा कर सकते हैं। यह जगह नाग टिब्बा एडवेंचर, हॉट डेस्टिनेशन, वीकेंड गेटअवे, विंटर ट्रेक्स के नाम से फेमस है। नाग टिब्बा के सबसे पास जॉली ग्रांट हवाई अड्डा है। लेकिन अगर आप ट्रेन से यहां आना चाहते हैं तो आप देहरादून रेलवे स्टेशन से आ सकते हैं। जिसके बाद कीरब 73 किमी आगे जाना होगा। इसके बाद नाग टिब्बा की ट्रेकिंग शुरू होती है। इस जगह पर जाने के लिए आप के पास कम से कम 2 दिन का समय होना चाहिए। यहां से आप हिमालय का शानदार व्यू भी देख सकते हैं।

केदारकांठा शिखर

भारत में सबसे ज्यादा पसंद किये जाने वाले ट्रैक केदारकांठा शिखर बेहद खूबसूरत जगह है। बता दें कि उत्तरकाशी जिले में गोविंद वन्यजीव अभयारण्य के भीतर केदारकांठा स्थित है। इस जगह को एक्सप्लोर करने के लिए आपके पास 2 दिन का समय होना चाहिए। इस ट्रैक को शुरू करने के लिए आपको सांकरी पहुंचना होगा। वहीं पहले आपको दिल्ली से देहराहून आना होगा। केदारकांठा शिखर देहरादून से करीब 200 किमी दूर स्थित है।

त्रिउंड ट्रैक

केदारकांठा ट्रैक की शुरूआत सांकरी से ही करनी होगा। इस जगह से आप हिमालय का शानदार नजारा देख सकते हैं। इस ट्रैक के बारे में काफी कम लोगों को पता है। निउंड ट्रैक धौलाधार रेंज के निवास में धर्मशाला से 18 किलोमीटर की दूरी पर है। इस ट्रैक को आप मैक्लोडगंज से शुरू कर सकते हैं। यह ट्रैक करीब 9 किमी का ट्रेक है। जिसे 4-6 घंटे में आसानी से पूरा किया जा सकता है। यहां से आप कई खूबसरत व कभी न भूलने वाले नजारों को देख सकते हैं। ऐसे में अगर आप अपने दोस्तों के साथ कोई छोटा ट्रेक प्लान कर रही हैं, तो आपको त्रिउंड ट्रेक पर जरूर जाना चाहिए। ■

कार बीमा खरीदते समय इन बातों का रखें ध्यान

कार बीमा खरीदना महत्वपूर्ण है जो पर्याप्त कवरेज प्रदान करता है और आपके बजट में भी फिट बैठता है। नीचे तीन दिशानिर्देश दिए गए हैं जो आपको सबसे अधिक लागत प्रभावी कार बीमा पॉलिसी चुनने में मदद करेंगे। यदि आप आजकल कार बीमा पॉलिसी खरीदना चाहते हैं, तो कई कंपनियां इसकी पेशकश कर रही हैं। यदि आप अपना होमवर्क करते हैं, तो आपके पास संभावनाओं की एक बड़ी लिस्ट होगी। कार बीमा पॉलिसी खरीदते समय आपको आईडीवी (बीमित घोषित मूल्य) भी जरूर जांचनी चाहिए। यदि आप कोई नया वाहन खरीद रहे हैं और एजेंसी कवरेज प्रदान कर रही है तो आपको वहां स्वयं बीमा कराना चाहिए। लेकिन बाद में समस्याओं से बचने के लिए आपको पॉलिसी चुनते समय कई पहलुओं पर ध्यान देने की जरूरत है।

अनिमेष शर्मा

आपको बता दें कि जब आप कार का बीमा कराने जाते हैं तो एक लंबा-चौड़ा हिसाब दिया जाता है, साथ ही उसमें हर चीज को बहुत छोटे-छोटे अक्षरों में लिखा रहता है। पॉलिसी के लिए आवेदन करते समय आपको हमेशा इसकी सावधानीपूर्वक समीक्षा करनी चाहिए। यदि आप अपने लिए कार बीमा पॉलिसी लेने की योजना बना रहे हैं तो रिसर्च करना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आपको व्यापक संभावनाओं तक पहुंच प्रदान करेगा। कार बीमा पॉलिसी खरीदते समय आपको आईडीवी भी जरूर जांचनी चाहिए। आईडीवी, या बीमाकृत घोषित मूल्य, उस राशि को संदर्भित करता है जो एक बीमाकर्ता चोरी हुए वाहन के लिए पूरा भुगतान करने को तैयार है।

प्रभावी कार बीमा चुनने के लिए महत्वपूर्ण गाइड लाइंस

कार बीमा खरीदना महत्वपूर्ण है जो पर्याप्त कवरेज प्रदान करता है और आपके बजट में भी फिट बैठता है। नीचे तीन दिशा निर्देश दिए गए हैं जो आपको सबसे अधिक लागत प्रभावी कार बीमा पॉलिसी चुनने में मदद करेंगे।

1 **केवल थर्ड पार्टी कवरेज का विकल्प न चुनें:** जैसा कि पहले ही कहा गया था, कुछ किफायती कार बीमा योजनाएं केवल तीसरे पक्ष की देनदारी को कवर करती हैं। तदनुसार, बीमाकर्ता किसी दुर्घटना की स्थिति में केवल तीसरे पक्ष की संपत्ति क्षति, शारीरिक चोटों या मृत्यु के लिए भुगतान करेगा। आपकी कार और आपको हुए किसी भी नुकसान के लिए आप जिम्मेदार हैं। इस वजह से, एक व्यापक कार बीमा पॉलिसी चुनने की सलाह दी जाती है जो आपके व्यक्तिगत नुकसान और तीसरे पक्ष की देनदारियों दोनों को कवर करती है। इसके अतिरिक्त, यह चोरी, प्राकृतिक और मानव जनित आपदाओं, विस्फोटों, आग आदि से होने वाले नुकसान या क्षति के लिए कवरेज प्रदान करता है। हालांकि यह अधिक महंगा हो सकता है, दुर्घटना की स्थिति में इसका भुगतान किया जाएगा।

2 **बीमा योजनाओं की ऑनलाइन तुलना करें:** आप ऑनलाइन बीमा खरीदते समय विभिन्न योजनाओं द्वारा प्रदान किए गए लाभों का मूल्यांकन कर सकते हैं। किसी वाहन की उम्र, निर्माण और बीमित घोषित मूल्य (आईडीवी) कुछ ऐसे तत्व हैं जिन्हें बीमाकर्ता बीमा प्रीमियम की गणना करते समय ध्यान में रखते हैं। योजनाओं की तुलना करने और अपनी कार के लिए सबसे किफायती योजना का चयन करने के लिए, इस मानदंड का उपयोग करें। इसके अतिरिक्त, सुनिश्चित करें कि आपकी कार की आईडीवी उसके वर्तमान बाजार मूल्य पर सेट है।

3 **कवरेज बढ़ाने के लिए ऐड-ऑन चुनें:** एक मानक ऑटो बीमा पॉलिसी में बहिष्करणों की भरपाई के लिए, बीमा कंपनियां आमतौर पर आकर्षक ऐड-ऑन की पेशकश करती हैं। आप अपनी मांगों के आधार पर उपयुक्त ऐड-ऑन का चयन कर सकते हैं और ये ऐड-ऑन कवरेज बढ़ाने में सहायता करेंगे। इनकी कीमत वाजिब है और जब आपको इसकी सबसे ज्यादा जरूरत होगी तो ये आपको काफी कर्ज से बचाएंगे। शून्य मूल्यह्रास कवर, इंजन सुरक्षा कवर, सड़क किनारे सहायता कवर, और ऑटो बीमा के लिए अन्य लोकप्रिय ऐड-ऑन इसके कुछ उदाहरण हैं। ■

चिंताजनक

लोगों के स्वास्थ्य पर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की ओर से हो रहा है

जानलेवा हमला

स्वास्थ्य स्थितियां बेहद चिंताजनक हैं। भारतीय मध्यवर्ग की डाइट बद से बदतर होती जा रही है। जैसे-जैसे मध्यवर्ग की आमदनी और व्ययशीलता बढ़ती जा रही है, उसे अपने शरीर में कैलोरीज की मात्रा बढ़ाने के और मौके मिल रहे हैं। यूं भी भारतीय परंपरागत रूप से भोजनप्रेमी होते हैं।

अजय शर्मा

बहुराष्ट्रीय कंपनियों के खाद्य पदार्थ एवं डिब्बाबन्द उत्पादों के सेहत पर पड़ने वाले घातक प्रभावों पर दशकों से विमर्श होता रहा है, लेकिन जैसे-जैसे मर्ज की दवा की रोग बढ़ता गया, वाली स्थिति देखने को मिल रही है। अब जाकर विभिन्न शोधों के निष्कर्षों के आधार पर विश्व स्वास्थ्य संगठन ने खाद्य पदार्थों व पेय पदार्थों में मिलाये जाने वाली कृत्रिम मिठास को कैंसर को बढ़ाने वाला कारक माना है। बात केवल कृत्रिम मिठास की नहीं है, तरह-तरह से भारतीय भोजन के स्वास्थ्यवर्द्धक कारणों को कुचलने एवं स्वास्थ्य पर हो रहे जानलेवा हमलों की भी है। सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट (सीएसई) ने हाल ही में अपने एक अध्ययन में बताया कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा बेची जाने वाली कुछ स्वादिष्ट खाद्य सामग्रियों में स्वास्थ्य के लिए हानिकारक तत्व हैं। इसकी तीखी प्रतिक्रिया हुई। चाय और भुजिया, कोल्ड ड्रिंक्स और समोसा, बटर चिकन और नान का मजा लेने वाले भारतीयों में बहस छिड़ गई कि आखिर यह कैसे नुकसानदेह साबित हो सकता है। भारत में नेस्ले कम्पनी द्वारा बनाई जाने वाली मैगी पर गुणवत्ता को लेकर उठे सवाल भी हैरान करने वाले हैं। मिलावट वाले खाद्य पदार्थ एवं डिब्बाबन्द उत्पादों के बढ़ते प्रचलन से देश के लोगों का स्वास्थ्य दांव पर लगा है, लेकिन उन पर नियंत्रण की कोई स्थिति बनती हुई नहीं दिख रही है। विदेशी पूंजी एवं रोजगार की आड़ लेकर इन कम्पनियों की आर्थिक महत्वाकांक्षाओं, गलत हरकतों एवं स्वास्थ्य को चौपट करने वाली स्थितियों को किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए। देश में गुणवत्ता वाले खाद्य पदार्थ ही लोगों के स्वास्थ्य की रक्षा कर सकते हैं, इसके लिये सख्त कानून के साथ ही राजनीतिक इच्छाशक्ति दिखानी होगी।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों के खाद्य उत्पादों से अस्वास्थ्य एक व्यापक समस्या बन गयी है। शिक्षित-अशिक्षित, गरीब-अमीर, स्त्री-पुरुष, युवा-प्रौढ़ सभी इन उत्पादों के आदी होकर परेशान हैं। इनके अधिक सेवन के कारण सबको किसी-न-किसी बीमारी की शिकायत है। चारों ओर बीमारियों का दुर्भेद्य घेरा है। निरन्तर बढ़ती हुई बीमारियों का प्रमुख कारण बहुराष्ट्रीय कंपनियों के खाद्य उत्पादों का भारतीय भोजन में शामिल होना है। इन बीमारियों को रोकने के लिये नई-नई चिकित्सा पद्धतियां एवं आविष्कार असफल हो रहे हैं। जैसे-जैसे विज्ञान रोग प्रतिरोधक औषधियों का निर्माण करता है, वैसे-वैसे बीमारियां नये रूप, नये नाम और नये परिवेश में प्रस्तुत हो रही हैं, इन बढ़ती बीमारियों का कारण जंक फूड, डिब्बाबन्द उत्पाद एवं कृत्रिम मिठास है। जांच एजेंसियों की लापरवाही, संसाधनों के अभाव, भ्रष्टाचार, केन्द्र-राज्य सहयोग का अभाव और लचर दंड-व्यवस्था का खामियाजा उपभोक्ताओं को अपने स्वास्थ्य को खतरे में डालकर चुकाना पड़ रहा है।

दुनिया में बहुराष्ट्रीय शीतल पेय कंपनियों के पेय, सोडा, च्यूइंग गम आदि पदार्थों में कृत्रिम मिठास का धड़ल्ले से प्रयोग किया जाता है। दरअसल, मनुष्य पर कैंसरकारक असर के बाबत अंतर्राष्ट्रीय एजेंसी आईएआरसी और विश्व स्वास्थ्य संगठन के कैंसर अनुसंधान प्रभाग के अध्ययन का हवाला दिया गया है। निस्संदेह, इन निष्कर्षों ने दुनियाभर के उपभोक्ताओं की चिंताओं को बढ़ा दिया है, जो लंबे समय से इन उत्पादों के सेवन को लेकर दुविधा में थे। विशेषज्ञों ने उस पुरानी दलील को तरजीह नहीं दी कि एक सीमित मात्रा में कृत्रिम मिठास से बने उत्पाद घातक नहीं होते और इनका उपयोग किया जा सकता है। निश्चित ही बहुराष्ट्रीय कम्पनिया अपने मुनाफे के लिये जन-जन के स्वास्थ्य से खिलवाड़ कर रही है, बावजूद इसके दुनिया के शक्तिशाली देशों में प्रभावी इन कंपनियों के खिलाफ कोई भी बात नक्कारखाने में तूती की आवाज बनकर रह जाती थी। भारत में भी ऐसी कम्पनियां तेजी से पांव पसार रही हैं। भारतीय परिवारों में इंस्टैंट नूडल्स, आलू की चिप्स, कोल्ड ड्रिंक्स ने कहर बरपाया है, ये तमाम खाद्य एवं पेय उत्पाद भले ही जायकेदार होते हैं लेकिन इनका सेवन स्वास्थ्य को चौपट कर रहा है। इनका प्रचलन बढ़ता जा रहा है, आखिर क्यों न बढ़े, हमारे तमाम बड़े सुपरस्टार्स उनका विज्ञापन जो करते हैं। आखिर, कोई ऐसा उत्पाद हानिकारक कैसे हो सकता है, जिसके विज्ञापन में किसी प्यारे-से बच्चे की आवाज सुनाई देती हो या जिनमें अपने ग्रैंडपैरेंट्स से प्यार करो कुछ मीठा हो जाये जैसे विज्ञापन जन्मदिन से लेकर शादी तक हर अवसर के लिये पसरे हैं, जो भावनात्मक मूल्यों से खिलवाड़ करते हैं। यदि हम इन विज्ञापनों पर भरोसा करें तो पाएंगे कि कैडबरी, चिप्स और कोला का सेवन करने वाले लोग साधारण लोगों की तुलना में ज्यादा प्रेमपूर्ण, सभ्य, आधुनिक व संवेदनशील होते हैं और बर्गर और फ्राइड चिकन के कारण आप बेहतर दोस्त साबित हो सकते हैं। तो आखिर माजरा क्या है? कैडबरी ने तो भारतीय देशी मिठाइयों के भविष्य को ही धुंधला दिया है।

स्वास्थ्य स्थितियां बेहद चिंताजनक हैं। भारतीय मध्यवर्ग की डाइट बद से बदतर होती जा रही है। जैसे-जैसे मध्यवर्ग की आमदनी और व्ययशीलता बढ़ती जा रही है, उसे अपने शरीर में कैलोरीज की मात्रा बढ़ाने के और मौके मिल रहे हैं। यूं भी भारतीय परंपरागत रूप से भोजनप्रेमी होते हैं। ऐसे में अगर जायकेदार लेकिन सस्ते खाद्य पदार्थ आसानी से मुहैया हों तो क्या कहने। भले ही यह जायका जहरीला हो। इसी में जागरूकता की कमी और अनैतिक विज्ञापन संस्कृति को भी जोड़ लें तो हम पाएंगे कि हम भयावह स्थिति की ओर बढ़े चले जा रहे हैं। यह जांचने के लिए हमें किसी लैबोरेटरी स्टडी की जरूरत नहीं है कि हम जो खा रहे हैं, उनमें से कुछ चीजें हमारी सेहत के लिए वाकई नुकसानदेह हैं। एक जूस ब्रांड ऐसा आमरस बेचता है, जिसके हर गिलास में आठ चम्मच शकर हो सकती है। इंस्टैंट नूडल्स का एक पैक अशुद्ध और अपरिष्कृत स्टार्च से बढ़कर कुछ नहीं होता। बच्चों को दूध के साथ पिलाए जाने वाले जौ निर्मित तथाकथित पोषक आहार शकर से भरे होते हैं। नाश्ते में जो महंगे खाद्य पदार्थ लिए जाते हैं, उनकी हेल्थ वैल्यू एक मामूली रोटी जितनी भी नहीं होती। तली हुई आलू की चिप्सें और पेटीज बर्गर निश्चित ही सेहतमंद चीजें नहीं हैं। इसके बावजूद इन उत्पादों के निमार्ता ब्रांड टीवी पर विज्ञापन के लिए करोड़ों रुपए खर्च करते हैं ताकि हमारे मन में इन उत्पादों के प्रति चाह जगाई जा सके।

इन उत्पादों के कारण हमारा वजन बढ़ रहा है, तनाव एवं अवसाद को जी रहे हैं, मधुमेह के रोगी चरम पर पहुंच रहे हैं, हृदयरोग के आंकड़े भी इन खाद्य पदार्थों के बढ़ते प्रचलन के कारण चौंकाने वाले हैं। निश्चित रूप से पूरी दुनिया में घातक कृत्रिम मिठास, डिब्बा बन्द उत्पाद एवं जंक फूड के दुष्प्रभावों को लेकर नये सिरे से बहस का आगाज होगा। सवाल केवल बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उत्पादों का ही नहीं है, जिन मिठाइयों और नमकीन को हम अपनी परंपरागत विरासत का एक हिस्सा समझते हैं, घरों और रेस्तरांओं में जिस तरह का तरीदार शोरबा परोसा जाता है, रेलवे स्टेशनों पर जिस तरह के समोसे और पकौड़े बेचे जाते हैं, वे सभी हमारे लिए नुकसानदेह हैं। लेकिन न तो सरकार, न ये कंपनियां और न ही हम इसे लेकर चिंतित हैं। हो सकता है आने वाले कुछ सालों में हमें इसकी कीमत चुकानी पड़े। आज हम जिस समृद्धि पर गर्व करते हैं, वही हमारे लिए महंगा सौदा साबित हो सकती है। जिन लोगों के पास खाने को कुछ नहीं है, वे भोजन को बुनियादी जरूरत मानते हैं, लेकिन जिनके सामने भरण-पोषण की कोई समस्या नहीं है, वे इसे आनंद का एक और माध्यम मानते हैं। अलबत्ता अति हर चीज की बुरी है। हमें बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर लगाम कसने की जरूरत है, क्योंकि लगता नहीं कि वे अपने उत्पादों में पौष्टिकता परोसती है या विज्ञापनों में किसी तरह की नैतिकता का निर्वाह करती हैं। यदि वे कोई ऐसी चीज बेच रही हैं, जिसके दीर्घकालिक परिणाम घातक हो सकते हैं तो उन्हें इसका खुलासा करना चाहिए। जंक बेचने वाली कंपनियों से हमारे बच्चों की रक्षा की जानी चाहिए। विज्ञापनों को नियम-कायदों के दायरे में लाया जाना चाहिए। भोजन में जहर परोसने वाले देश के लोगों के लिये एक बड़ा खतरा है, इस खतरे से लोगों को बचाने के लिये महज व्यावसायिक या व्यवस्थागत समस्या मान कर समाधान करना उचित नहीं है, बल्कि कठोर एवं निष्पक्ष कानून व्यवस्था बननी चाहिए। बहरहाल, इस मुद्दे को दुनिया में नया विमर्श मिलना तय है। जन स्वास्थ्य की दृष्टि से यह कदम जरूरी भी है। ■

निकल आई हैं तोंद तो घर पर करें ये एक्सरसाइज वेट और पेट दोनों होंगे कम

अनन्या मिश्रा

इन दिनों महिलाओं के बीच पिलाटेस एक्सरसाइज का क्रेज काफी ज्यादा बढ़ रहा है। बता दें कि यह एक्सरसाइज बिगनर्स के लिए काफी बेस्ट हैं। इन एक्सरसाइज को आप आसानी से घर पर भी कर सकते हैं। इन दिनों महिलाओं के बीच पिलाटेस एक्सरसाइज का क्रेज काफी ज्यादा बढ़ रहा है। पिलाटेस एक्सरसाइज में ऐसी एक्सरसाइज शामिल हैं, जो पूरे शरीर को एक्टिव करने का काम करती हैं। इसके साथ ही इस एक्सरसाइज को करने से फिजिकल स्ट्रेंथ और फ्लैक्सिबिलिटी बढ़ती है। इसके साथ ही इसे करने से आपकी मसल्स में मजबूती आती है। यह एक्सरसाइज काफी ज्यादा आसान हैं। इसे आप घर पर भी बेहद आसानी से कर सकती हैं। बता दें कि बॉलीवुड एक्ट्रेस दीपिका पादुकोण, आलिया भट्ट, कैटरीना कैफ और वाणी कपूर जैसे कई सेलेब्स यह एक्सरसाइज करती हैं। जिसके कारण वह इतनी फिट दिखती हैं। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको जिन एक्सरसाइज के बारे में बता रहे हैं, यह बिगनर्स के लिए बेस्ट पिलाटेस एक्सरसाइज हैं। पिलाटेस एक्सरसाइज एक ऐसा रूप है, जिसे आप कभी भी और कहीं भी किया जा सकता है। आइए जानते हैं इन एक्सरसाइज के बारे में, जिन्हें आप घर पर आसानी से कर सकती हैं और फिट रह सकती हैं।

डिस्क्लेमरः इस लेख के सुझाव सामान्य जानकारी के लिए हैं। इन सुझावों और जानकारी को किसी डॉक्टर या मेडिकल प्रोफेशनल की सलाह के तौर पर न लें। किसी भी बीमारी के लक्षणों की स्थिति में डॉक्टर की सलाह जरूर लें।

ब्रिज एक्सरसाइज

- पीठ के बल लेटते हुए घुटनों को मोड़कर पैरों को सीधा जमीन पर रखें।
- अब अपनी हथेलियों को खोलकर हाथों को जमीन पर रखें।
- फिर धीरे-धीरे पैरों के निचले हिस्से को ऊपर उठाएं।
- इस दौरान कंधे और सिर को जमीन पर ही रखें।
- इस पोजीशन में 2 सेकेंड रुकते हुए वापस अपनी सामान्य अवस्था में लौट आएं।
- आप इस एक्सरसाइज को रोजाना 10-20 बार करें।

सिंगल लेग सर्कल्स एक्सरसाइज

- इस एक्सरसाइज को करते समय पीठ के बल लेट जाएं।
- अब दोनों हाथों को साइड में फैलाएं।
- फिर पैरों को कंधे का चौड़ाई में खोलें।
- अब अपने घुटनों को बिना मोड़े और सामने की तरफ एक पैर फैलाएं।
- पैरों से सर्कल बनाएं, लेकिन ध्यान रहें कि इस दौरान पैर जमीन में टच न हो।
- इसके बाद दूसरे पैर के यही एक्सरसाइज को करें।
- शुरूआत में इस प्रक्रिया को कम से कम 15 बार करें।

हंड्रेड एक्सरसाइज

- इसे करने के लिए जमीन पर पीठ के बल लेट जाएं।
- अब अपने घुटनों को 90 डिग्री के एंगल तक उठाएं।
- फिर अपने शरीर को ऊपर की तरफ उठाएं।
- इसके बाद हाथ को सामने की ओर स्ट्रेच करते हुए ऊपर-नीचे करें।
- इस पोजीशन में थोड़ी देर तक रहें।
- अब पैरों को सामने की तरफ स्ट्रेच करें।
- फिर अपनी पुरानी पोजीशन में वापस आ जाएं।
- इस एक्सरसाइज को कम से कम 10 बार करें।

साइड लेग किक्स एक्सरसाइज

- इस एक्सरसाइज को करने के लिए साइड करवट लेकर जमीन पर लेट जाएं।
- फिर दाएं हाथ की मदद से शरीर को ऊपर की ओर उठाएं।
- इसके बाद बाएं हाथ की कोहनी मोड़कर सिर के पीछे रख लें।
- अब दाएं पैर की मदद से आगे और पीछे की तरफ किक करें।
- इसी प्रक्रिया को दूसरी तरफ से भी ऐसे ही करें।

स्वान एक्सरसाइज

- इस एक्सरसाइज को करने के लिए पीठ के बल लेट जाएं।
- फिर हाथों को सामने की तरफ करें।
- अब अपने हाथों की मदद से शरीर को ऊपर की तरफ उठाएं।
- इसके बाद नीचे की तरफ आकर माथे को जमीन से लगाएं। ■

बेजान बालों में नई जान फूंक देगा प्याज का हेयर सीरम

गर्मियों के मौसम में धूप, धूल और प्रदूषण के कारण बालों को काफी नुकसान पहुंचता है। जिसके कारण बालों का झड़ना, डैंड्रफ आदि की समस्या होने लगती हैं। ऐसे में आप इस घरेलू नुस्खे से अपने बालों में फिर से जान डाल सकती हैं।

नीतू शर्मा

गर्मी के मौसम में धूप, धूल और पसीने से बालों को बहुत नुकसान पहुंचता है। स्कैल्प में पसीना आने की वजह से बालों का झड़ना, खुजली और डैंड्रफ आदि की समस्या होने लगती है। इन सब से छुटकारा पाने के लिए लोग बाजार में मिलने वाले महंगे हेयर केयर प्रोडक्ट, शैंपू और हेयर मास्क आदि का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन इन हेयर प्रोडक्ट को खरीदना सभी लोगों के बस की बात नहीं है। क्योंकि यह प्रोडक्ट काफी महंगे होते हैं। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको इस समस्या से निजात पाने के लिए घरेलू नुस्खे के बारे में बताने जा रहे हैं। ऐसे में अगर आप भी गर्मि ?ों में बालों की समस्या से परेशान हो गए हैं। तो प्याज का रस आपके बालों में जान डाल देगा। आइए जानते हैं इस घरेलू नुस्खे के बारे में... प्याज के सीरम को आप अपने बालों में आसानी से अप्लाई कर सकते हैं। इससे आपके बाल लंबे, घने और मजबूत बनेंगे। गर्मियों में अगर आप 10-12 दिन लगातार इस नुस्खे को ट्राई करते हैं। तो आपको 10 से 12 दिन के अंदर हैरान करने वाला रिजल्ट मिलेगा। आइए जानते हैं प्याज का सीरम बनाने की विधि के बारे में और इसके फायदे के बारे में...

प्याज का सीरम बनाने की सामग्री

- प्याज- 2 से 3 पीस
- पानी- 1 गिलास
- चाय की पत्ती- 2 से 3 चम्मच

ऐसे बनाएं प्याज का सीरम

- प्याज का सीरम बनाने के लिए एक पैन में पानी गर्म कर लें।
- प्याज को छीलकर छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें।
- अब गर्म हो रहे पानी में 3 चम्मच चायपत्ती डालकर उबालें।
- जब उसमें उबाल आ जाएं तो इसमें प्याज की स्लाइस उसमें डाल दें।
- अब प्याज और चायपत्ती वाले पानी को 10-15 मिनट के लिए उबाल लें।
- अब इसे ठंडा होने के लिए रख दें।
- जब यह ठंडा हो जाए तो तो छलनी की मदद से इसे छान लें।
- इस मिश्रण को एक स्प्रे बोतल में रखकर फ्रिज में स्टोर कर लें।
- बालों में शैंपू करने के बाद आप इस हेयर सीरम का इस्तेमाल करें।

प्याज के सीरम के फायदे

- प्याज के रस में एंटी बैक्टीरियल गुण पाए जाते हैं। यह स्कैल्प पर होने वाले संक्रमण को सही करने में सहायक होते हैं।
- हेयर सीरम के पोषक तत्व सफेद बालों को काला करने में मदद करती हैं।
- प्याज के सीरम में सल्फर की मात्रा मौजूद होती है। इससे ब्लड सकुर्लेशन सुधारने के साथ ही नए बालों को उगाने में मदद करता है।
- प्याज का सीरम स्कैल्प का पोषण देकर दोमुहे बालों से भी निजात पा सकती हैं। ■

सावन यानी शिव को रिझाने का समय

सावन का पहला सोमवार 10 जुलाई को पूरी आस्था के साथ मनाया जाएगा। देशभर के शिवालयों में सुबह चार बजे से बारह बजे रात्रि तक तमाम भक्त आते हैं। सूरज की पहली किरण फूटने से पहले ही भक्तों का तांता मंदिरों में लगता है। शिव का जीवन ही इस बात का प्रतीक है कि प्रकृति से तालमेल स्थापित कर ही जीवन में सुख-शांति, सरलता, सादगी, शौर्य, योग, अध्यात्म सहित कोई भी उपलब्धि हासिल की जा सकती है। आषाढ़ मास से ही वर्षा ऋतु की शुरूआत होती है। श्रावण मास आते-आते चारों तरफ हरियाली छा जाती है। यह सभी के मन को लुभाने वाली होती है। श्रावण मास में प्रकृति का अनुपम सौंदर्य देखते ही बनता है। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे चारों तरफ बसंत ऋतु ही छाई हुई है। संसार के प्राणियों में नई उमंग व नव जीवन का प्रसार होने लगता है। प्रकृति की अनुपम छटा को देखकर भगवान शिव आनंदित व आत्मविभोर हो जाते हैं। श्रावण मास भगवान शिव को अत्यंत प्रिय है। श्रावण मास के प्रकृति के अनुपम सौंदर्य का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है।

संजय पांडेय

ऐसे में जब भगवान शिव प्रसन्न हो जाते हैं तो संसार में ऐसा कुछ भी नहीं, जो वह अपने भक्तों को न दे पाएं। भगवान शिव को रिझाने में भक्तजन अपनी मनोकामना के लिए नाना प्रकार के यत्न करते हैं। सावन का महीना शुरू होने के साथ ही बोल बम के जयकार भी चारों तरफ सुनाई देने लगे हैं। इसके साथ ही श्रावण शिवरात्रि पर भगवान शिव का जलाभिषेक करने के लिए पवित्र गंगाजल लाने के लिए कावड़ियों का तीर्थ स्थलों पर जाने का सिलसिला जारी है। पूरे सावन को भगवान शिव का महीना ही माना जाता है। इस बार तो अधिक मास के कारण श्रावण पूरे दो महीने तक चलेगा। शिवपुराण की कथा के अनुसार, श्रावण मास में भगवान शिव को प्रसन्न करने के तीन मार्ग हैं- पहला जलाभिषेक, दूसरा बेल पत्र, पुष्प चंदन, कमलपुष्प व पंचामृत से पूजा अर्चना और तीसरा जप-तप के द्वारा। इनमें से किसी भी एक मार्ग का अनुसरण किया जा सकता है। वस्तुतः भिन्न-भिन्न कामनाओं के अनुरूप विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को चढ़ाने का भी प्रावधान है। शिव महापुराण, स्कंध पुराण, विष्णु पुराण व नारद पुराण भी इसी तरफ संकेत करते हैं। सभी देवी-देवताओं ने मिलकर कैलाश पर्वत को दुल्हन की तरह सजाया था। कैलाश पहुंचने पर श्रावण मास शुरू हो गया। सभी देवी-देवताओं ने मिलकर पूरे श्रावण मास को उत्सव के रूप में मनाया। शिव का सावन प्रकृति के साथ साहचर्य का संदेश है। शिव अगर नीलकंठ हैं और दुनिया के लिए अकेले जहर को अपने गले में धारण कर सकते हैं, तो उसके साथ-साथ भांग और धतूरा खाने और पीने वाले भी शिव ही हैं। शिव की दोनों तस्वीरें साथ-साथ जुड़ी हुई हैं। भारत में करोड़ों लोग समझते हैं कि शिव धतूरा पीते हैं, शिव की पलटन में लूले-लँगड़े हैं, उसमें जानवर भी हैं, भूत-प्रेत भी हैं और सब तरह की बातें जुड़ी हुई हैं। लूले-लँगड़े, भूखे के मानी क्या हुए? गरीबों का आदमी। शिव सबके हैं। इसका अर्थ ही यह है कि शिव सभी बेसहारा प्राणियों के सहारा हैं भांग धतूरा का वे सेवन नहीं करते बल्कि, अपने भक्तों को अपने दुर्गुणों को छोड़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

वे कहते हैं लाओ अपने सारे दुर्वसन मुझे दे दो और तुम शुद्ध भाव से मेरी आराधना में लगो मानव जीवन का वास्तविक लक्ष्य क्या है? जीवात्मा अनादिकाल से प्रकृति के प्रवाह में अणु-रूप में नानाविध शरीर धारण करते हुए काल की गति के साथ बह रहा है। मोक्ष की कामना को भटक रहे मानव के लिए सनातन धर्म में भक्ति को विभिन्न देवताओं की पूजा के अलग-अलग विधान हैं। सृष्टि के कल्याणकारी देवाधिदेव महादेव शिव शंकर ही ऐसे देव हैं, जो मात्र एक लोटा जल श्रद्धा भाव से ग्रहण कर ही मानव के जीवन को सरल बना देते हैं। शिव हम सभी के आसपास ही विराजमान रहते हैं। न जाने किस रूप में वे अपने भक्तों को दर्शन दे जाएं। लेकिन, उनको पहचान पाना मानव के लिए सदा से ही एक बड़ा गंभीर विषय रहा है। यह बिल्कुल ऐसा ही है जैसे आकाश में बादल रहने पर बादलों के मध्य में स्थित सूर्यबिंब दिखाई नहीं देता। सूर्योदय के बाद आकाश के मेघावृत रहने पर मेघ के हटने के साथ ही सूर्य के दर्शन होते हैं एवं उसकी किरण और धूप की भी प्राप्ति होती है। शिव की भक्ति करने वाले को अपनी मस्तिष्क के पड़े उस अज्ञान के पर्दे को हटाने की जरूरत है जो उस कल्याणकारी देव प्रभाव को नहीं देख पाता है। शिव हरेक संकट में एक आश्वासन हैं। उनकी हरेक श्मशान घाट या भूमि में लगी मूर्ति मानव समाज को राहत देती है। उन कठोर पलों में उनको देखकर ऐसा लगता है मानो कोई आपकी पीठ को थपथपा रहा है। जैसे वे कहे रहे हो, मैं अभी हूं न तुम्हारे साथ। अभी तक शिव का श्मशान भूमि में एकछत्र राज रहा है। वह उनकी दुनिया है। उसमें अतिक्रमण निषेध है। श्मशान में शिव की सत्ता है। शिव की मूर्ति के आसपास कुछ शोकाकुल लोग बैठ भी जाते हैं। उनको करीब से देखते भी हैं। मन ही मन सवाल भी करते होंगे कि क्यों श्मशान प्रिय है शिव को? हालांकि इस प्रश्न के उतर बार-बार मिल चुके हैं। सतगुरु जग्गी कहते हैं कि दरअसल शिव का श्मशान डेरा है। श्म का मतलब शव से और शान का मतलब शयन या बिस्तर से है। जहां शव पड़े होते हैं, वहीं वह रहते हैं। शिव श्मशान में जाकर बैठते और इंतजार करते हैं। शिव को संहारक माना जाता है, इसलिए नहीं कि वह किसी को नष्ट करना चाहते हैं। वह श्मशान में इंतजार करते हैं ताकि शरीर नष्ट हो जाए, क्योंकि जब तक शरीर नष्ट नहीं होता, आस-पास के लोग भी यह नहीं समझ पाते कि मृत्यु क्या है। वे हरेक मूर्ति में ध्यान की मुद्रा में हैं। ■

72 हुरें

बहकावे में आकर धर्म के नाम पर अधर्म करने वाले आतंकियों को आईना दिखाती है फिल्म

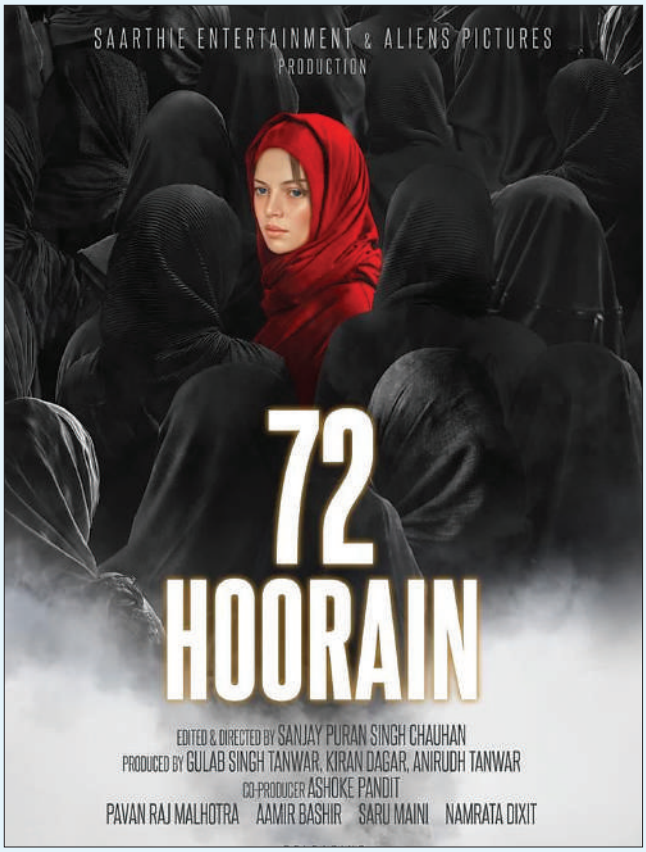

फिल्म का नाम: 72 हुरें

समीक्षा: संजय पूरन सिंह की फिल्म आतंकवाद और धर्म के बारे में विचारोत्तेजक सच्चाई पेश करती है

आलोचकों की रेटिंग: 3/5

रिलीज की तारीख: 6 जुलाई

निर्देशक: संजय पूरन सिंह चौहान

शैली: नाटक

अविनाश वर्मा

धर्म के नाम पर लोगों को बरगलाना और उन्हें गलत रास्ते पर ले जाना इस दुनिया में कोई नई बात नहीं है। जिहाद लोगों के बीच आतंक फैलाने के लिए आतंकवादियों द्वारा किया जाने वाला एक अपराध है। धर्म की आड़ में निर्दोष और असहाय लोगों को बड़े-बड़े सपने दिखाना और निर्दोष लोगों की हत्या करवाना देश में आम बात हो गई है। निर्देशक संजय पूरन सिंह की फिल्म 72 हुरें 7 जुलाई को सिल्वर स्क्रीन पर रिलीज होगी। यह फिल्म आतंकवादियों पर एक व्यंग्य है।

फिल्म की कहानी का प्लॉट

अनिल पांडे द्वारा लिखित 72 हुरें के निर्माताओं ने यह सुनिश्चित किया कि फिल्म के माध्यम से किसी भी धार्मिक भावनाओं को ठेस न पहुंचे। फिल्म की कहानी दो युवकों हाकिम (पवन मल्होत्रा) और साकिब (आमिर बशीर) के इर्द-गिर्द घूमती है। एक मौलाना के बहकावे में आकर दोनों जिहाद के लिए निकलते हैं और मुंबई में गेटवे ऑफ इंडिया पर आत्मघाती हमला करने के लिए तैयार हो जाते हैं। मौलाना उन्हें लालच देते हुए कहते हैं कि जिहादी जिहाद के बाद जन्नत जाते हैं जहां उनकी मुलाकात 72 हूरें से होती है और अल्लाह के फरिश्ते उनकी परछाई बनकर घूमेंगे। लेकिन जब दोनों की मौत हो जाती है तो सच्चाई कुछ और ही निकलती है, उनकी आत्माओं का सच से सामना होता है जो मौलाना की बातों से बिल्कुल अलग था। साथ ही उनके परिजनों को उनका अंतिम संस्कार करने और नमाज पढ़ने का भी मौका नहीं मिलता है। उन्हें लगता है कि अगर शायद उनका जनाजा नमाज के साथ कर दिया जाए तो जन्नत के दरवाजे खुल जाएंगे। इस बीच 169 दिन बीत जाते हैं और इन दोनों जिहादियों की आत्माओं का क्या होता है यह देखने के लिए आपको सिनेमा हॉल का रुख करना होगा।

कहानी धर्म के नाम पर ब्रेनवॉश करने पर प्रकाश डालती है

72 हुरें इस बात पर प्रकाश डालती है कि कैसे लोगों को धर्म के नाम पर बरगलाया जाता है और आतंकवाद के लिए मजबूर किया जाता है। फिल्म ने लोगों में फैल रहे आतंकवाद के मुद्दे को बहादुरी से उठाया।

कैसी है फिल्म 72 हुरें?

इस फिल्म के निर्देशन की बात करें तो संजय पूरन सिंह ने इसके साथ पूरा न्याय किया है। फिल्म के कुछ दृश्य दिल दहला देने वाले हैं जहां एक महिला आत्महत्या करने जाती है और उसकी मां उसे बताती है कि यह कितना बड़ा अपराध है और इसका आत्मघाती आतंकवादियों की भटकती आत्मा पर क्या प्रभाव पड़ता है, उसी दिशा में बम का दृश्य है ब्लास्ट को ऐसे दिखाया गया है कि आप हिल जाएंगे। निर्देशक ने फिल्म के हर सीन और हर फ्रेम पर कड़ी मेहनत की है और स्क्रीन पर कहानी कहने का उनका दिलचस्प अंदाज दर्शकों के रोंगटे खड़े कर देने के लिए काफी है। सिनेमा प्रेमियों के लिए इस फिल्म की खास बात यह है कि आप बेहतरीन वीएफएक्स के साथ ब्लैक एंड व्हाइट सिनेमा का आनंद लेंगे। आपको फिल्म का अधिकांश भाग ब्लैक एंड व्हाइट में देखने को नहीं मिलता है। भटकती आत्माओं के लिए यह एक आदर्श विचार था। अभिनय की बात करें तो पवन मल्होत्रा और आमिर बशीर ने बेहतरीन काम किया है। पूरी फिल्म दोनों कलाकारों के इर्द-गिर्द घूमती है और दोनों कलाकारों ने अपने शानदार अभिनय से फिल्म का स्तर ऊंचा कर दिया है। ■

कमाल के अभिनेता और फिल्ममेकर थे गुरु दत्त

मनोज कुमार

गुरु दत्त अपने जमाने के बेहतरीन एक्टर, निर्देशक और प्रोड्यूसर थे। उन्होंने लंबे समय तक फिल्म इंडस्ट्री में राज किया था। बता दें कि 60-70 के दशक में दर्शक उनके अभिनय के कायल हुआ करते थे। 9 जुलाई को गुरु दत्त का जन्म हुआ था। उनका असली नाम वसंत कुमार शिवशंकर पादुकोण था। गुरु दत्त बचपन से ही एक्टिंग के शौकीन थे। भले ही आज वह इस दुनिया में नहीं हैं। लेकिन उनकी यादें आज भी दर्शकों के दिल में फिल्मों के जरिए ताजा हैं। आइए जानते हैं उनकी बर्थ एनिवर्सरी के मौके पर गुरु दत्त के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

जन्म और शिक्षा

कर्नाटक में 9 जुलाई 1925 को गुरु दत्त का जन्म हुआ था। उन्होंने अपनी शुरूआती शिक्षा कर्नाटक से पूरी की थी। हालांकि आर्थिक स्थिति सही न होने के कारण वह आगे कॉलेज की पढ़ाई पूरी नहीं कर पाए थे। कॉलेज की पढ़ाई छोड़ने के बाद उन्होंने कलकत्ता में बतौर टेलीफोन ऑपरेटर काम करना शुरू कर दिया, लेकिन गुरु दत्त का मन इस काम में नहीं लगा। जिसके कारण कुछ समय बाद ही उन्होंने यह काम छोड़ दिया।

देवानंद से हुई थी दोस्ती

इसके बाद गुरु दत्त ने पुणे में एक फिल्म कंपनी में काम करना शुरू कर दिया। इस नौकरी के लिए गुरु दत्त को तीन साल का कॉन्ट्रैक्ट साइन करना पड़ा था। यहीं पर काम करने के दौरान उनकी मुलाकात देवानंद और रहमान से हो गई। जल्द ही यह मुलाकात गहरी दोस्ती में बदल गई।

9 जुलाई को बॉलीवुड के कमाल के फिल्ममेकर और एक्टर गुरु दत्त की बर्थ एनिवर्सरी है। उन्होंने अपने फिल्मी कॅरियर में कई क्लासिक फिल्मों में काम किया था। हालांकि उनको इस दुनिया से अलविदा कहे बरसों हो गए हैं।

ऐसे शुरू हुआ कॅरियर

साल 1944 में फिल्म चांद से गुरु दत्त को पहला ब्रेक मिला था। इस फिल्म में गुरु दत्त ने भगवान श्रीकृष्ण का किरदार निभाया था। हालांकि यह किरदार काफी छोटा था और इस फिल्म में दर्शकों ने गुरु दत्त को नोटिस भी नहीं किया। उन्होंने एक्टिंग के शुरूआती दिनों में कोरियोग्राफर और असिस्टेंट डायरेक्टर का भी काम करते थे। इसके बाद साल 1951 में गुरु दत्त के निर्देशन में उनकी पहली फिल्म बाजी बनी। बता दें कि जॉनी वॉकर और वहीदा रहमान को इंडस्ट्री में लाने का श्रेय गुरु दत्त को जाता है।

इनसे लगा बैठे थे दिल

फिल्मों में अपना कॅरियर बनाने वाले और लाखों दर्शकों के दिलों में राज करने वाले गुरु दत्त मशहूर गायिका गीता रॉय पर अपना दिल हार बैठे। मशहूर गायिका गीता रॉय से उनकी मुलाकात 1951 में आई फिल्म बाजी के सेट पर हुई थी। पहली नजर के प्यार में उनका प्यार परवान चढ़ने लगा। इस बीच दोनों एक-दूसरे से मिलने लगे। फिर साल 1953 में गुरु दत्त और गीत रॉय ने शादी रचा ली।

गुरु दत्त की फिल्में

बता दें कि गुरु दत्त ने अपने कॅरियर में कई क्लासिक फिल्में दी हैं। जिनमें से कागज के फूल, प्यासा, साहिब बीबी और गुलाम और चौदहवीं का चांद, आर-पार और सीआईडी आदि शामिल हैं।

मौत

बता दें कि गुरु दत्त की आखिरी फिल्म सांझ और सवेरा थी। बता दें कि गुरु दत्त ने 10 अक्टूबर 1964 में आत्महत्या कर अपनी जान दे दी। हालांकि गुरु दत्त ने यह कदम क्यों उठाया। यह आज भी राज बना हुआ है। ■

With Best Compliments from

ECONOMIC TRANSPORT Co.

C/o Superstar Leasing Financing Ltd.

Gandhi market, Fazal ganj, Kanpur

(Fleet Owner & Transport Contractor)

Branches

Kanpur, Noida, Delhi, Gurgaon

सिल्वर स्क्रीन पर हर दौर में बखूबी पसंद की गईं हैं सुहाने बीन संग मनभावन गीत-संगीत में गुथीं

नाग और नागिन की रूमानी दास्तानें

नाग-नागिन की कहानी पर बनी हिन्दी फिल्मों में बीन की धुन पर नाचती हीरोइन को देखने के लिए दर्शक सिनेमाघरों में उमड़ते रहे हैं। इच्छाधारी नाग-नागिन की कहानियां या किवदंतियां फिल्मकारों को आकर्षित करती रही हैं। कई बॉलीवुड फिल्मों में इन किंवदंतियों या इच्छाधारी नाग-नागिन के चरित्र को मशहूर अभिनेता-अभिनेत्रियों ने निभाया है। गुजरे दौर से अब तक इन कहानियों पर बनी ज्यादातर फिल्में हिट रही हैं। एक वजह यह भी है कि हिंदू धर्म को मानने वाले नाग देवता की पूजा-अर्चना करते रहे हैं, जब सावन माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को नाग पंचमी का त्यौहार मनाया जाता है।

डॉ. महेश चंद्र धाकड़

नाग-नागिन की कर्णप्रिय गीत-संगीत में गुंथी प्रेम कहानी और अपने प्रेमी के हत्यारे से बदला लेने के रोमांचक क्लाइमेक्स पर्दे पर दर्शकों को पसंद आते रहे हैं। नाग पंचमी और सावन के महीने में सिनेमा हॉल, टेलीविजन या केबल टीवी पर ये फिल्में खूब चला करती थीं। हिंदी सिनेमा में इन फिल्मों का इतिहास पुराना है, बताते हैं सिल्वर स्क्रीन पर पहली बार बीन की धुन 1954 में आई फिल्म नागिन में सुनी थी। वैजयंतीमाला और प्रदीप कुमार अभिनीत फिल्म नागिन से जुड़े कई दिलचस्प किस्से हैं। फिल्म का गीत 'मन डोले मेरा तन डोले' इतना लोकप्रिय हुआ कि आज भी सुना और सुनाया जाता है। गीत की धुन, उसका संगीत और हीरोइन वैजयंतीमाला की बेमिसाल अदाकारी ने इस गाने को सुपर-डुपर हिट बना दिया। बीन की धुन इतनी मशहूर हुई थी कि कई अफवाहें भी फैल गईं थीं। अफवाहों के बीच ही यह भी कहा जाने लगा कि जब सिनेमाघरों में बीन बजने की धुन सुनाई देती थी तो असली सांप भी हॉल में पहुंच जाया करते थे। 1954 में फिल्म नागिन आयी। सिल्वर स्क्रीन पर यह पहली फिल्म थी जिसने नागिन की कहानी को दिखाया। इसमें इच्छाधारी नागिन की कहानी पर्दे पर दिखाई।

निर्देशक नन्दलाल जसवंत के निर्देशन में इसमें हीरोइन वैजयंती माला और हीरो प्रदीप कुमार ने शानदार अभिनय किया। हिंदी सिनेमा में पहली बार सिल्वर स्क्रीन पर बीन की धुन सुनाई दी जो सबके दिलों पर छा गई। इस बीन का प्यारा संगीत कल्याणजी, रवि ने दिया। वहीं फिल्म में हेमंत कुमार के संगीत में सजे राजेंद्र कृष्ण लिखित गीतों ने जबरदस्त धूम मचाई। लता मंगेशकर की आवाज में एक गाना बहुत ही मशहूर हुआ, बोल हैं-**मेरा मन डोले, मेरा तन डोले...!** लता मंगेशकर की आवाज में ही इसके कई अन्य गीत भी लोकप्रिय हुए। मसलन - **मेरा दिल ये पुकारे आजा...!, जादूगर सैयां...!, मेरा बदली में छुप गया चाँद...!, तेरी याद में जलकर देख लिया...!**

- 1976 में नागिन नाम से एक और फिल्म आयी। इसे राजकुमार कोहली ने निर्देशित किया। इसमें इच्छाधारी नाग-नागिन की कहानी दिखाई। नाग-नागिन के जीवन का वो रोमांचक पक्ष दिखाया जब दोनों इंसानी रूप धारण करते हैं। इस तरह की कहानी के बारे में कम ही लोग जानते थे, उनके लिए सब नया-नया था। कहानी में दिखाया कि कैसे नागिन इंसान से अपने नाग की मौत का बदला लेती हैं। इसमें उस दौर के बड़े कलाकारों ने अभिनय किया, इनमें सुनील दत्त, फिरोज खान, विनोद मेहरा, जीतेंद्र, रेखा, मुमताज, रीना रॉय, योगिता बाली, संजय खान थे। वर्मा मलिक द्वारा लिखित और लक्ष्मीकांत प्यारेलाल के संगीत में सजे इसके कई गीतों ने धूम मचा दी थी। आशा भोंसले और मोहम्मद रफी की आवाज में यह गाना भी लोकप्रिय हुआ- **तेरे इश्क का मुझ पे हुआ ये असर है...!** इसी तरह से लता मंगेशकर और महेंद्र कपूर द्वारा गाया हुआ यह गीत भी लोकप्रिय हुआ - **तेरे संग प्यार मैं नहीं तोड़ना...!**
- 1986 में नगीना करीब तीन दशक बाद इस विषय पर बनी फिल्म आयी और सुपर-डुपर हिट रही। फिल्म निर्देशक हरमेश मल्होत्रा के निर्देशन में श्रीदेवी, ऋषि कपूर और अमरीश पुरी ने अभिनय किया। फिल्म में सपेरा बने अमरीश पुरी नागमणि की तलाश में दिखाई दिए। फिल्म में नागिन का रोल श्रीदेवी ने निभाया, जिसे सिने दर्शकों ने बहुत प्यार-दुलार दिया। लक्ष्मीकांत प्यारेलाल का संगीत गली-गली गूंजने लगा। आनंद बक्शी लिखित और लता मंगेशकर की आवाज में यह गाना काफी हिट हुआ, जिसके बोल थे- **मैं तेरी दुश्मन, दुश्मन तू मेरा, मैं नागिन तू सपेरा...!** आनंद बक्शी का ही लिखा मोहम्मद अजीज द्वारा गाया यह गीत भी लोकप्रिय हुआ - **आजकल याद कुछ और रहता नहीं...!**
- 1989 में फिल्म नाचे नागिन गली गली आयी। इस फिल्म की कहानी अन्य नाग-नागिनों पर बनीं फिल्मों से थोड़ी अलग थी। इसमें प्रेमी नाग-नागिन की जोड़ी दुश्मन से बचने के लिए बिछड़ जाती है और इसके बाद शुरू होती है, एक दुसरे को वापस पाने की रोचक रोमांचक कहानी। इसमें मुख्य भूमिका में मीनाक्षी शेषाद्री के साथ, महाभारत में श्रीकृष्ण की भूमिका निभा चुके नितीश भारद्वाज थे।
- 1990 में आयी फिल्म दूध का कर्ज की कहानी बिलकुल अलग थी। इसमें जैकी श्रॉफ, नीलम और अरुणा ईरानी मुख्य भूमिकाओं में थे। इसमें नागिन अपने दूध का कर्ज चुकाने के लिए काम करती है। आनंद बक्शी लिखित, अन्नू मलिक के संगीत में सजे, मुहम्मद अजीज और अनुराधा पौडवाल के गाए गीत - **तुम्हें दिल से कैसे जुदा हम करेंगे...!, शुरू हो रही है प्रेम कहानी...!** बहुत ही लोकप्रिय हुए।
- 1989 में फिल्म निगाहें आयी जो फिल्म नगीना की सफलता बाद डायरेक्टर हरमेश मल्होत्रा ने सीक्वल के तौर पर प्रस्तुत की। नगीना की तर्ज पर ही निगाहें की कहानी भी आगे बढाई गई। इसमें श्रीदेवी के अलावा सभी किरदारों को बदल दिया। अमरीश पुरी की जगह अनुपम खेर विलेन बन बीन बजाते दिखे, वहीं सनी देओल हीरो थे। आनंद बक्शी के लिखे लक्ष्मीकांत प्यारेलाल के संगीत में सजे गीत लोकप्रिय हुए। अनुराधा पौडवाल की आवाज में **किसे ढूंढता है पागल सपेरे**, मोहम्मद अजीज की आवाज में **सावन के झूलों ने मुझको बुलाया** और कविता कृष्णमूर्ति की आवाज में **सारा सारा दिन तुम काम करोगे** गीत हिट रहे। कहानी को भी पसंद किया, लेकिन फिल्म नगीना जैसा जादू बॉक्स ऑफिस पर न दिखा सकी।
- 1989 में ही फिल्म नाग-नागिन रिलीज हुई। फिल्म राम तेरी गंगा मैली हो गई के बाद मंदाकनी को नागिन के रूप में दिखाया। साथ में राजीव कपूर थे जो राम तेरी गंगा मैली हो गई में भी उनके साथ थे। दोनों की पहली फिल्म जितनी बड़ी हिट हुई, ये फिल्म उतनी ही बड़ी फ्लॉप साबित हुई। फिल्म में कहानी कम और नाग-नागिन के बीच रोमांस कुछ ज्यादा था। जो कि शायद दर्शकों को पसंद नहीं आया।
- 1990 में फिल्म शेषनाग आयी, जिसमें रेखा इच्छाधारी नागिन बनी, साथ में जितेंद्र भी इच्छाधारी नाग बने। डैनी ने तांत्रिक की भूमिका निभाई, जिसे दर्शकों ने खूब पसंद भी किया। आनंद बक्शी के लिखे गीतों को लक्ष्मीकांत प्यारेलाल ने संगीत से सजाया। सुरेश वाडेकर, अनुराधा पौडवाल की आवाज में **हमें आसमां ने भेजा, छेड़ मिलन के गीत ओ मितवा** गीत पसंद किए गए। लेकिन फिल्म पर जितना पैसा खर्च किया, उस हिसाब से यह कमाई न कर पाई।
- 1990 में ही फिल्म तुम मेरे हो आयी, आमिर खान और जूही चावला की हिट जोड़ी थी। फिल्म में आमिर के पास अलौकिक शक्ति होती है जो उसकी बचपन की घटनाओं से जुड़ी होती हैं। फिल्म से कमाई की तो बहुत उम्मीद थी, लेकिन ये बहुत बड़ी फ्लॉप निकली।
- 1991 में जगमोहन मुंद्रा के निर्देशन में फिल्म विषकन्या रिलीज हुई, जिसमें नाग-नागिन की कहानी कम, बोल्ड सीन ज्यादा दिखे। इससे पूजा बेदी ने इंडस्ट्री में कदम रखा। कुनाल गोस्वामी और पूजा के पिता कबीर बेदी भी थे। फिल्म में मुनमुन सेन, सतीश कौशिक और सुरेंद्र पाल, सारिका जैसे अभिनेता थे। लेकिन फिल्म चली नहीं।
- 2002 में जानी दुश्मन फिल्म आयी। इसकी कहानी में नागिन की मौत हो जाती है और नाग उसकी मौत का बदला लेता है। अरमान कोहली ने नाग और मनीषा कोइराला ने नागिन का किरदार निभाया। इस मल्टी स्टारर फिल्म में सनी देओल, अक्षय कुमार, सुनील शेट्टी, सोनू निगम, आफताब शिवदसानी, अरशद वारसी, आदित्य पंचोली, रजत बेदी, शरद कपूर, अतुल अग्निहोत्री ने भी अभिनय किया था।
- 2010 में आयी फिल्म हिस्स में हॉलीवुड निर्देशक जेनिफर लिंच के निर्देशन में मलिका शेहरावत ने अभिनय किया, पर फिल्म न चली। ■

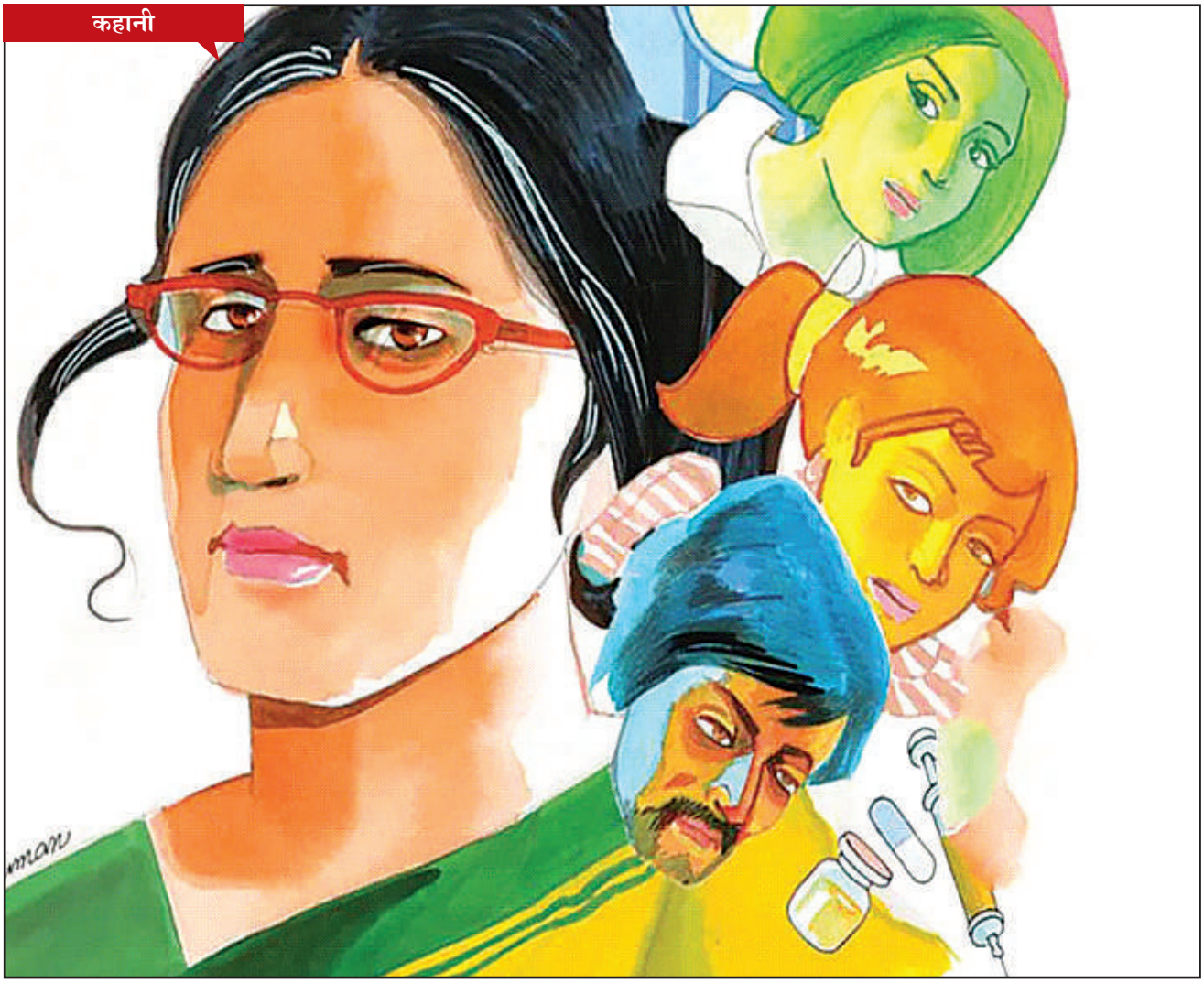

टूटते जुड़ते सपनों का दर्द

उस घर में जब गौरा पैदा हुई तो 7 दिन तक गीत गाए और लड्डू बांटे गए। पर गौरा के बाद लगातार 2 और कन्याओं के आने से उस घर पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। ऐसा लगता था कि प्रकृति भी उन पर हंस रही है।

सावित्री परमार

कालेज की लंबी गोष्ठी ने प्रिंसिपल गौरा को बेहद थका डाला था। मौसम भी थोड़ा गरम हो चला था, इसलिए शाम के समय भी हवा में तरावट का अभाव था। उन्होंने जल्दी-जल्दी जरूरी फाइलों पर हस्ताक्षर किए और हिंदी की प्रोफेसर के साथ बाहर आईं। अनुराधा की गाड़ी नहीं आई थी, सो उन्हें भी अपनी गाड़ी में साथ ले लिया। घर आने पर अनुराधा ने बहुत आग्रह किया कि चाय पी कर ही वे जाएं, लेकिन एक तो गोष्ठी की गंभीर चर्चाओं पर बहस की थकान, दूसरे मन की खिन्नता ने वह आमंत्रण स्वीकार नहीं किया। वे एकदम अपने कमरे में जाना चाह रही थीं। सुबह से ही मन खिन्न हो उठा था। अगर यह अति आवश्यक गोष्ठी नहीं होती तो वे कालेज जाती भी नहीं। आज की सुबह आंखों में तैर उठी। कितनी खुश थीं सुबह उठ कर। सिरहाने की लंबी खिड़की खोलते ही सिंदूरी रंग का गोला दूर उठता हुआ रोज नजर आता।

आज भी वे उस रंग के नाजुक गाढ़ेपन को देख कर मुग्ध हो उठी थीं। तभी पड़ोस में रहने वाली अनुराधा के नौकर ने बंद लिफाफा ला कर दिया, जो कल शाम की डाक से आया था और भूल से उन के यहां डाकिया दे गया था। उसी मुदित भाव से लिफाफा खोला। छोटी बहन पूर्वा का पत्र था उस में। गोल तकिए पर सिर टेक कर आराम से पढ़ने लगीं, लेकिन पढ़ते-पढ़ते उन का मन पत्ते सा कांपने लगा और चेहरे से जैसे किसी ने बूंद-बूंद खुशी निचोड़ ली थी। ऐसा लगा कि वे ऊंची चट्टान से लुढ़क कर खाई में गिर कर लहूलुहान हो गई हैं। जैसे कोई दर्द का नुकीला पंजा है जो धीरे-धीरे उन की ओर खौफनाक तरीके से बढ़ता आ रहा है। उन की आंखों से मन का दर्द पानी बन कर बह निकला। दरवाजे की घंटी बजी। दुर्गा आ गई थी काम करने। गौरा ने पलकों में दर्द समेट लिया और कालेज जाने की तैयारी में लग गईं। मन उजाड़ रास्तों पर दौड़ रहा था, पागल सा। आंखें खुली थीं, पर दृष्टि के सामने काली परछाइयां झूल रही थीं। कितनी कठिनाई से पूरा दिन गुजारा था उन्होंने। हंसीं भी, बोलीं भी, कई मुखौटे उतारती-चढ़ाती भी रहीं, परंतु भीतर का कोलाहल बराबर उन्हें बेरहमी से गरम रेत पर पछाड़ता रहा। क्या पूर्वा का जीवन संवारने की चेष्टा व्यर्थ गई? क्या उन के हाथों कोई अपराध हुआ है, जिस की सजा पूरी जिंदगी पूर्वा को झेलनी होगी?

अपने कमरे में आ कर वे बिस्तर पर निढाल हो कर पड़ गईं। मैले कपड़ों की खुली बिखरी गठरी की तरह जाने कितने दृश्य आंखों में तैरने लगे। विचारों का काफिला धूल भरे रास्तों में भटकने लगा। 3 भाइयों के बाद उन का जन्म हुआ था। सभी बड़े खुश हुए थे। कस्तूरी काकी और सोना बुआ बताती रहती थीं कि 7 दिन तक गीत गाए गए थे और छोटे-बड़े सभी में लड्डू बांटे गए थे। बाबा ने नाम दिया, गौरा। सोचा होगा कि बेटी के बाद और लड़के होंगे। इसी पुत्र लालसा के चक्कर में 2 बहनें और हो गईं। तब न गीत गाए गए और न लड्डू ही बांटे गए। कहते हैं न कि जब लोग अपनी स्वार्थ लिप्सा की पूर्ति मनचाहे ढंग से प्राप्त नहीं कर पाते हैं तब घर के द्वारदेहरी भी रुष्ट हो जाते हैं। वहां यदि अपनी संतान में बेटा-बेटी का भेद करके निराशा, कुंठा, निरादर और घृणा को बो दिया जाए तो घर एक सन्नाटा भरा खंडहर मात्र रह जाता है। उस भरेपूरे घर में धीरे-धीरे कष्टों के दायरे बढ़ने प्रारंभ होने लगे। बड़े भाई छुट्टी के दिन अपने साथियों के साथ नदी स्नान के लिए गए थे। तैरने की शर्त लगी। उन्हें नदी की तेज लहरें अपने चक्रवात में घेर कर ले डूबीं। लौट कर आई थी उनकी फूली हुई लाश। घर भर में कोहराम मच गया था। मां और बाबूजी पागल हो उठे। बाबा की आंखें सूखे कुएं की तरह अंधेरों से अट गईं। धीमे-धीमे शब्दों में कहा जाने लगा कि तीनों लड़कियां भाई की मौत का कारण बनी हैं। न ये तीनों नागिनें पैदा होतीं

जानवर की तरह उन्हें घर के कामों में जुटा दिया गया था। वे उस घर की बेटियां नहीं, जैसे खरीदी हुई गुलाम थीं, जिन्हें आधा पेट भोजन, मोटाझोटा कपड़ा और अपशब्द इनाम में मिलते थे। पढ़ाई छूट गई थी। गौरा तो किसी तरह 10वीं पास कर चुकी थी लेकिन छोटी चित्रा और पूर्वा अधिक नहीं पढ़ पाईं।

और न हट्टा-कट्टा भाई मौत का ग्रास बनता। समय ने सभी के घावों को पूरना शुरू ही किया था कि बीच वाले भाई हीरा के मोतीझरा निकला। वह ऐसा बिगड़ा कि दवाओं और डाक्टरों की सारी मेहनत पर पानी फेरता रहा। मौत फिर दबेपांव आई और चुपचाप अपना काम कर गई। इस बार के हाहाकार ने आकाश तक हिला दिया। पिता एकदम टूट गए। 20 वर्ष आगे का बुढ़ापा एक रात में ही उन पर छा गया था। बाबा खाट से चिपक गए थे। मां चीख-चीख कर अधमरी हो उठीं और बिना किसी लाजहिचक के जोर-जोर से घोषणा करने लगीं कि मेरी तो लड़कियां ही साक्षात मौत बन कर पूरा कुनबा खत्म करने आई हैं। इनका तो मुंह देखना भी पाप है।

मोहल्ला, पड़ोस, रिश्तेदार सभी परिवार के सदस्यों के साथ तीनों बहनों को भरपूर कोसने लगे। अपने ही घर में तीनों किसी एकांत कोने में पड़ी रहतीं, अपमानित और दुत्कारी हुईं। न कोई प्यार से बोलता, न कोई आंसू पोंछता। तीनों की इच्छाएं मर कर काठ हो गईं। लाख सोचने पर भी वे यह समझ नहीं पाईं कि भाइयों की मृत्यु से उन का क्या संबंध है, वे मनहूस क्यों हैं। तीसरा भाई बचपन से जिद्दी व दंगली किस्म का था। अब अकेला होने पर वह और बेलगाम हो गया था। सभी उसी को दुलारते रहते। उस की हर जिद पूरी होती और सभी गलतियां माफ कर दी जातीं। नतीजा यह हुआ कि वह स्कूल में नियमित नहीं गया। उलटेसीधे दोस्त बन गए। घर से बाहर सुबह से शाम तक व्यर्थ में घूमता, भटकता रहता। ऐसे ही गलत भटकाव में वह नशे का भयंकर आदी हो गया। न ढंग से खाता, न नींद भर सो पाता था। माता-पिता से खूब जेब खर्च मिलता। कोई सख्ती से रोकने-टोकने वाला नहीं था। एक दिन कमरे में जो सोया तो सुबह उठा ही नहीं। उस के चारों ओर नशीली गोलियों और नशीले पाउडरों की रंग- बिरंगी शीशियां फैली पड़ी थीं और वह मुंह से निकले नीले झाग के साथ मौत की गोद में सो रहा था। उस की ऐसी घिनौनी मौत को देख कर तो जैसे सभी गूंगे-बहरे से हो उठे थे। पूरे पड़ोस में उस घर की बरबादी पर हाहाकार मच गया था। कहां तक चीखते रोते? आंसुओं का समंदर भीतर के पहाड़ जैसे दुख ने सोख लिया था। घर भर में फैले सन्नाटे के बीच वे तीनों बहनें अपराधियों की तरह खुद को सब की नजरों से छिपाए रहती थीं। उचित देखभाल और स्नेह के अभाव में तीनों ही हर क्षण भयभीत रहतीं। अब तो उन्हें अपनी छाया से भी भय लगने लगा था। दिन भर उन्हें गालियां दे कर कोसा जाता और बात-बात पर पिटाई की जाती।

जानवर की तरह उन्हें घर के कामों में जुटा दिया गया था। वे उस घर की बेटियां नहीं, जैसे खरीदी हुई गुलाम थीं, जिन्हें आधा पेट भोजन, मोटाझोटा कपड़ा और अपशब्द इनाम में मिलते थे। पढ़ाई छूट गई थी। गौरा तो किसी तरह 10वीं पास कर चुकी थी लेकिन छोटी चित्रा और पूर्वा अधिक नहीं पढ़ पाईं। जब भी सगी मां द्वारा वे दोनों जानवरों की तरह पीटी जातीं, तब भयभीत सी कांपती हुई दोनों बड़ी बहन के गले लग कर घंटों घुटी-घुटी आवाज में रोती रहती थीं। कुछ भीतरी दुख से, कुछ रात-दिन रोने से पिता की आंखें कतई बैठ गई थीं। वे पूरी तरह से अंधे हो गए थे। मां को तो पहले ही रतौंधी थी। शाम हुई नहीं कि सुबह होने तक उन्हें कुछ दिखाई नहीं देता था। बाबा का स्नेह उन बहनों को चोरी-चोरी मिल जाया करता था लेकिन शीघ्र ही उन की भी मृत्यु हो गई थी। पिता की नौकरी गई तो घर खर्च का प्रश्न आया। तब बड़ी होने के नाते गौरा अपना सारा भय और अपनी सारी हिचक, लज्जा भुला कर ट्यूशन करने लगी थी। साथ ही प्राइवेट पढ़ना शुरू कर दिया। बहनों को फिर से स्कूल में दाखिला दिलाया। तीनों बहनों में हिम्मत आई, आत्मसम्मान जागा। तीनों मांबाबूजी की मन लगा कर सेवा करतीं और घरबाहर के काम के साथ-साथ पढ़ाई चलती रही। वे ही मनहूस बेटियां अब मां और बाबूजी की आंखों की ज्योति बन उठी थीं, सभी की प्रशंसा की पात्र। मोहल्ले और रिश्तेदारी में उन के उदाहरण दिए जाने लगे। घर में हंसी-खुशी की ताजगी लौट आई। इस ताजगी को पैदा करने में और बहनों को ऊंची शिक्षा दिलाने में वे कब अपने तनमन की ताजगी खो बैठीं, यह कहां जान सकी थीं? विवाह की उम्र बहुत पीछे छूट गई थी। छोटे-बड़े स्कूलों का सफर करते-करते इस कालेज की प्रिंसिपल बन गईं। घर में गौरा दीदी और कालेज में प्रिंसिपल डा. गौरा हो गई थीं। छोटी दोनों बहनों की शादियां उन्होंने बड़े मन से कीं। बेटियों की तरह विदा किया। चित्रा के जब लगातार 5 लड़कियां हुईं, तब उस को ससुराल वालों से इतने ताने मिले, ऐसी-ऐसी यातनाएं मिलीं कि एक बार फिर उस का मन आहत हो उठा। बहुत समझाया उन लोगों को।

दामाद, जो अच्छाखासा पढ़ा-लिखा, समझदार और अच्छी नौकरी वाला था, उसे भी भले-बुरे का ज्ञान कराया, परंतु सब व्यर्थ रहा। चित्रा की ससुराल के पड़ोस में ही सुखराम पटवारी की लड़की सत्या की शादी हुई थी। उस ने आ कर बताया था, बेकार इन पत्थरों के ढोकों से सिर फोड़ती हो, दीदी। उन पर क्या असर होने वाला है? हां, जब भी तुम्हारे खत जाते हैं या उन्हें समाज, संसार की बातें समझाती हो, तब और भी जली-कटी सुनाती हैं चित्रा की सास और जेठानी। जिस दामाद को भोलाभाला समझती हो, वह पढ़ा-लिखा पशु है। मारपीट करता है। हर समय विधवा ननद तानों से चित्रा को छलनी करती रहती है। चित्रा तो सूख कर हड्डियों का ढांचा भर रह गई है। बुखार, खांसी हमेशा बनी रहती है। ऊपर से धोबिया लदान, छकड़ा भर काम। वे कांप उठी थीं सत्या से सारी बातें सुन कर। उस के लिए उन का मन भीग-भीग उठा था। बचपन में मां से दुत्कारी जाने पर वे उसे गोदी में छिपा लेती थीं। उन की विवशता भीतर ही भीतर हाहाकार मचाए रहती थी। एक दिन बुरी खबर आ ही गई कि क्षयरोग के कारण चित्रा चल बसी है। शुरू से ही अपमान से धुनी देह को क्षय के कीटाणु चाट गए अथवा ससुराल के लोग उस की असामयिक मौत के जिम्मेदार रहे? प्रश्नों से घिर उठीं वे हमेशा की तरह। और इधर आज महीनों बाद मिला यह पूर्वा का पत्र। क्या बदल पाईं वे बहनों का जीवन? सोचा था कि जो कुछ उन्हें नहीं मिला वह सबकुछ बहनों के आंचल में बांध कर उन के सुखी संपन्न जीवन को देखेगी। कितनी प्रसन्न होगी जीवन की इस उतरती धूप की गहरी छांव में। अपनी सारी महत्त्वाकांक्षाएं और मेहनत से कमाई पाई-पाई उन पर न्योछावर कर दी थी। हृदय की ममता से उन्हें सराबोर कर के अपने कर्तव्यों का एक-एक चरण पूरा किया परंतु पंखे की हवा से जैसे पूर्वा के पत्र का एक-एक अक्षर उन के सामने गरम रेत के बगलों की तरह उड़ रहा था या कि जैसे पूर्वा ही सामने बैठ कर हमेशा की तरह आंसुओं में डूबी भाषा बोल रही थी। किसे सुनाएं वे मन की व्यथा? पत्र का एक-एक शब्द जैसे लावा बन कर भीतर तक झुलसाए जा रहा था : दीदी, मैं रह गई थी बंजर धरती सी सूनीसपाट। कितने वर्ष काटे मैंने बंजर शब्द का अपमान सहते हुए और आप भी क्या कम चिंतित और बेचैन रही थीं मेरी मानसिकता देखसुन कर? फिर भी मैं अपनेआप को तब सराहने लगी थी जब आप के बार-बार समझाने पर मेरे पति और ससुराल के सदस्य किसी बच्चे को गोद लेने के लिए इस शर्त पर तैयार हो गए थे कि एकदम खोजबीन करके तुरंत जन्मा बच्चा ही लिया जाएगा और आपने वह दुरूह कार्य भी संपन्न कराया था। फूल सा कोमल सुंदर बच्चा पा कर सभी निहाल हो उठे थे। सास ने नाम दिया, नवजीत। ससुर प्यार से उसे पुकारते, निर्मल। बच्चे की कच्ची दूधिया निश्छल हंसी में हम सभी

निहाल हो उठे। आप भी कितनी निश्चिंत और संतुष्ट हो उठीं, लेकिन दीदी, पूत के पांव पालने में दिखने शुरू हो गए थे। मैंने आप को कभी कुछ नहीं बताया था। सदैव उस की प्रशंसा ही लिखती-सुनाती रही। आज स्वयं को रोक नहीं पा रही हूं, सुनिए, यह शुरू से ही बेहद हठी और जिद्दी रहा। कहना न मानना, झूठ बोलना और बड़ों के साथ अशिष्ट व्यवहार करना आदि। स्कूल में मंदबुद्धि बालक माना गया।

क्या आप समझती हैं कि हमसब चुप रहे? नहीं दीदी, लाड़प्यार से, डराधमका कर, अच्छी-अच्छी कहानियां सुना कर और पूरी जिम्मेदारी से उस पर नजर रख कर भी उस के स्वभाव को रत्ती भर नहीं बदल सके। आगे चल कर तो छल कपट से बातें करना, झूठ बोलना, धोखा देना और चोरी करना उस की पहचान हो गई। पेशेवर चोरों की तरह वह शातिर हो गया। स्कूल से भागना, सड़क पर कंचे खेलना, उधार ले कर चीजें खाना, मारना-पीटना, अभद्र भाषा बोलना आदि उस की आदत हो गई। सभी परेशान हो गए। शक्लसूरत से कैसा मनोहारी, लेकिन व्यवहार में एकदम राक्षसी प्रवृत्ति वाला। उम्र बढ़ने के साथ-साथ उस की आवारागर्दी और उच्छृंखलता भी बढ़ने लगी। दीदी, अब वह घर से जेवर, रुपया और अपने पिता की सोने की चेन वाली घड़ी ले कर भाग गया है। 2 दिन हो चुके हैं। गलत दोस्तों के बीच क्या नहीं सीखा उस ने? जुए से ले कर नशापानी तक। सब बहुत दुखी हैं। कैसे करते पुलिस में खबर? अपनी ही बदनामी है। स्कूल से भी उस का नाम काट दिया गया था। हम क्या रपट लिखाएंगे, किसी स्कूटर की चोरी में उस की पहले से ही तलाश हो रही है। दीदी, यह कैसा पुत्र लिया हमने? इस से अच्छा तो बांझपन का दुख ही था। यों सांस-सांस में शर्मनाक टीसें तो नहीं उठतीं। संतानहीन रह कर इस दोहरे तिहरे बोझ तले तो न पिसती हम लोगों की जिंदगी। पढ़े-लिखे, सुरुचिपूर्ण, सुसंस्कृत परिवार के वातावरण में उस बालक के भीतर बहता लहू क्यों स्वच्छ, सुसंस्कृत नहीं हुआ, दीदी? हमारी महकती बगिया में कहां से यह धतूरे का पौधा पनप उठा? लज्जा और अपमान से सभी का सुखचैन समाप्त हो गया है। गौरा दीदी, आपके द्वारा रोपा गया सुनहरा स्वप्न इतना विषकंटक कैसे हो उठा कि जीवन पूर्णरूप से अपाहिज हो उठा है। परंतु इस में आप का भी क्या दोष? पत्र का अक्षर-अक्षर हथौड़ा बन कर सुबह से उन पर चोट कर रहा था। टूटबिखर तो जाने कब की वे चुकी थीं, परंतु पूर्वा के खत ने तो जैसे उन के समूचे अस्तित्व को क्षतविक्षत कर डाला था। वे सोचने लगीं कि कहां कसर रह गई भला? इन बहनों को सुख देने की चाह में उन्होंने खुद को झोंक दिया। अपने लिए कभी क्षण भर को भी नहीं सोचा। क्या लिख दें पूर्वा को कि सभी की झोली में खुशियों के फूल नहीं झरा करते पगली। ठीक है कि इस बालक को तुम्हारी सूनी, बंजर कोख की खुशी मान कर लिया था, एक तरह से उधार लिया सुख। एक बार जी तो धड़का था कि न जाने यह कैसी धरती का अंकुर होगा? जाने क्या इतिहास होगा इस का? लेकिन तसल्ली भरे विश्वास ने इन शंकालु प्रश्नों को एकदम हवा दे दी थी कि तुम्हारे यहां का सुरुचिपूर्ण, सौंदर्यबोध और सभ्यशिष्ट वातावरण इस के भीतर नए संस्कार भरने में सहायक होगा। पर हुआ क्या? लेकिन पूर्वा, इस तरह हताश होने से काम नहीं चलेगा। इस तरह से तो वह और भी बागी, अपराधी बनेगा। अभी तो कच्ची कलम है। धीरज से खाद, पानी दे कर और बार-बार कटनीछंटनी कर के क्या माली उसी कमजोर पौधे को जमीन बदल-बदल कर अपने परीक्षण में सफल नहीं हो जाता? रख कर तो देखो धैर्य। बुराई काट कर ही उस में नया आदमी पैदा करना है तुम्हें। टूटे को जोड़ना ही पड़ता है। यही सार्थक भी है। यह सोचते ही उन में एक नई शक्ति सी आ गई और वे पूर्वा को पत्र लिखने बैठ गईं। ■

जब विदेश में जाए... गाय

कई क्षेत्रों में गायों की खूब सेवा भी की जाती है उन्हें सुगम संगीत सुनवाया जाता है। वह बात अलग है कि संगीत सिर्फ इसलिए सुनवाया जाता है ताकि वह दोगुना दूध दें। लेकिन जिनकी वजह से गाय के बछड़े या बछड़ी होती हैं उन्हें पिता तो क्या कहना, सम्मान से भी नहीं देखा और रखा जाता।

संतोष उत्सुक

कई बरसों से कहा जा रहा है कि पूरा विश्व हमारी तरफ देख रहा है। हम विश्वगुरु हो गए हैं। दुनिया भर में हमारी योजनाओं के करोड़ों विद्यार्थी हैं। इंसानों को छोडिए, जानवरों से हमारा प्यार बढ़ता जा रहा है। यह गर्व की बात है कि पूरी दुनिया में सिर्फ हमारा ही देश है जहां गाय को, गाय माता कहा जाता है। उनकी खूब सेवा करने की बात होती है। वह बात दीगर है कि वे शहर गांवों, कस्बों की राहों, गलियों में रंभाती घूमती रहती हैं। उनके मालिक दूध निकाल कर, उन्हें सड़क के हवाले कर देते हैं। उन्हें कचरा, पालीथिन चरने और घूटने के लिए छोड़ देते हैं। उनके कानों में लगे टैग बताते हैं कि उन्हें कर्ज लेकर खरीदा गया है और उनका बीमा भी हुआ है।... माफ करें बात कहीं से कहीं जा रही है।

कई क्षेत्रों में गायों की खूब सेवा भी की जाती है उन्हें सुगम संगीत सुनवाया जाता है। वह बात अलग है कि संगीत सिर्फ इसलिए सुनवाया जाता है ताकि वह दोगुना दूध दें। लेकिन जिनकी वजह से गाय के बछड़े या बछड़ी होती हैं उन्हें पिता तो क्या कहना, सम्मान से भी नहीं देखा और रखा जाता। बताते हैं कि प्राकृतिक जन्म संस्कृति को धत्ता बताते हुए अब ऐसी तकनीक विकसित कर ली गई है कि बढ़िया दुधारू गाय से सिर्फ बछड़ीयां ही पैदा हों। यह बात ज्यादा अलग नहीं कि समझदार इंसान, इंसानी बच्ची के भ्रूण को आज भी गर्भ में खत्म करने को तैयार हैं। वहां भी इंसान सामाजिक पशु चाहता है। हालांकि भैंसे भी हमारे देश में ही बहुत दूध देती हैं लेकिन उन्हें मासी भी नहीं कहा जाता। गाय माता का हाल भी सब जानते हैं। कितने झगड़े तकरार हुए, लोग मारे और मरवाए, सुरक्षा परेशान रही और राजनीति मनपसंद नृत्य करती रही। फिर भी गाय परेशान है और बातों के कानून बराबर बनाए जा रहे हैं।

अब बात को सीधे उड़ाकर कई समंदर पार ले चलते हैं, आस्ट्रेलिया। वहां गायों के माध्यम से मानसिक तौर पर बीमार लोगों का इलाज किया जा रहा है। हमारे यहाँ उन्हें मानसिक रूप से सताया जाता रहा है। वहां, काऊ कडलिंग सेंटर बनाए जा रहे हैं। हम तो उनकी ठीक से सेवा नहीं कर पाते, उनका बीमा तो क्या अपना भी नहीं करवाते। वहां गाय को एक चिकित्सक के रूप में लिया जा रहा है। कुछ बीमारियां अवसाद ऐसे होते हैं जिनमें एक इंसान का सानिध्य और व्यवहार दूसरे इंसान को ठीक नहीं कर पाता, वहां जानवर का निस्वार्थ साथ और नैसर्गिक प्रतिबद्धता स्वस्थ कर देती है। संभवत गाय वहां ऐसा कर पा रही है क्यूंकि वहां यह कार्य पेशेवर तरीके से किया जा रहा है धार्मिक शैली में नहीं।

ऐसी गाय चिकित्सा पद्धति, यहां भी लाने की जरूरत है क्यूंकि यहां विकसित इंसानी पद्धति के अंतर्गत इंसान की सोहबत में इंसान बिगड़ रहे हैं। सदभाव और प्रेम बढ़ाऊ आयोजनों में तलवारें भेंट की जा रही हैं। राजनीति ने प्रकृति का विवाह जबरदस्ती कुबुद्धिजीवी विकास के साथ कर दिया है। घर में प्लास्टिक के फूल पौधे सजाए जा रहे हैं। शायद जानवर के संग रहकर सद्व्यवहार, स्नेह, निश्छल प्यार का आलिंगन पाकर, इंसान, इंसान को इंसान समझने लगे। एक बार कोशिश करने में क्या हर्ज है। ■

ओ मन्दिर के शंख...

ओ मन्दिर के शंख, घण्टियों तुम तो बहुत पास रहते हो,
सच बतलाना क्या पत्थर का ही केवल ईश्वर रहता है?

मुझे मिली अधिकांश
प्रार्थनाएँ चीखों सँग सीढ़ी पर ही।
अनगिन बार
थूकती थीं वे हम सबकी इस पीढ़ी पर ही।

ओ मन्दिर के पावन दीपक तुम तो बहुत ताप सहते हो,
पता लगाना क्या वह ईश्वर भी इतनी मुश्किल सहता है?

भजन उपेक्षित
हो भी जाएं फिर भी रोज सुने जाएंगे।
लेकिन चीखें
सुनने वाला ध्यान कहाँ से हम लाएंगे?

ओ मन्दिर के सुमन सुना है ईश्वर को पत्थर कहते हो!
लेकिन मेरा मन जाने क्यों दुनिया को पत्थर कहता है?

अंकित काव्यांश

With Best Compliments from

Jai Kumar Agarwal

Managing Director

+91-9918700801

GYAN DAIRY

jai@agarwal@gyandairy.com

Dream of Healthy India
NOVA®
DAIRY PRODUCTS
Serving since 1991
Fresh Dahi
Ghee
Plain Chach
घी, दूध, दही, छाछ,
पनीर और डेयरी व्हाईटनर
STERLING AGRO INDUSTRIES LTD.
E-mail: sterling@steragro.com, sterling@steragro.biz ★ Website: www.steragro.com
Works : Village - Bhitauna, Soron Road,Kasganj-207123 (UP)
For Distributorship, Please Contact Mr. Adarsh Sharma, Mob.: 9319554050